जैन सामान्य ज्ञान

अशोक वी. मोदी

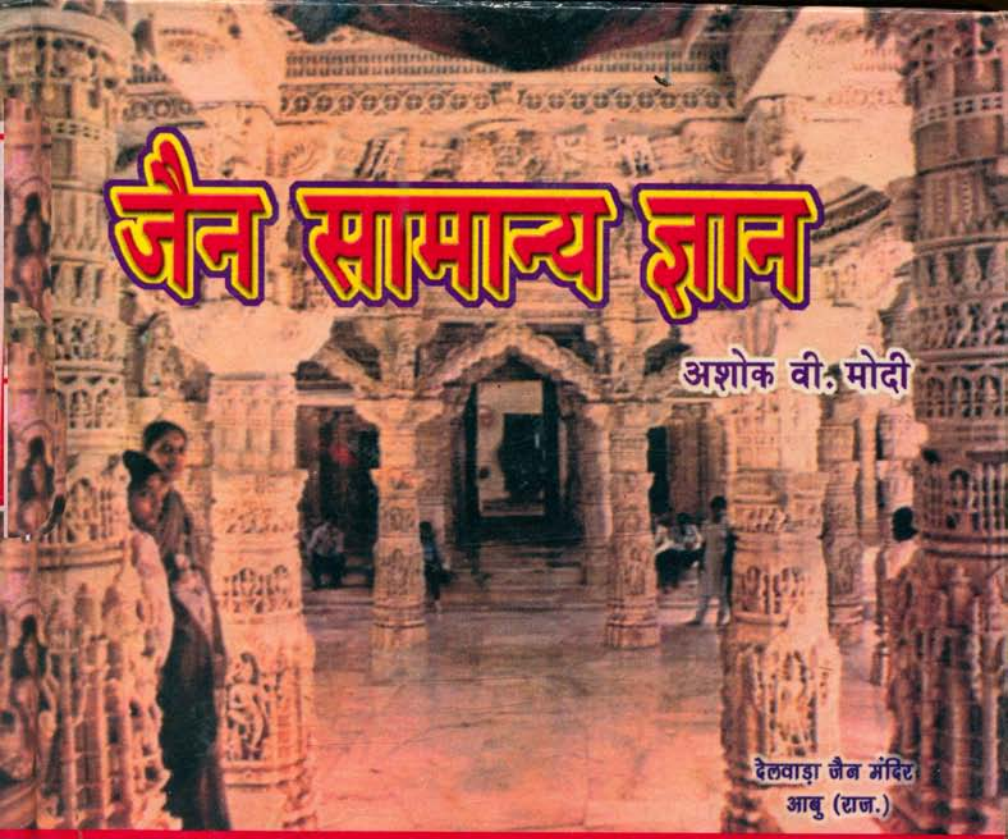

देलवाड़ा जैन मंदिर
आबु (राज.)

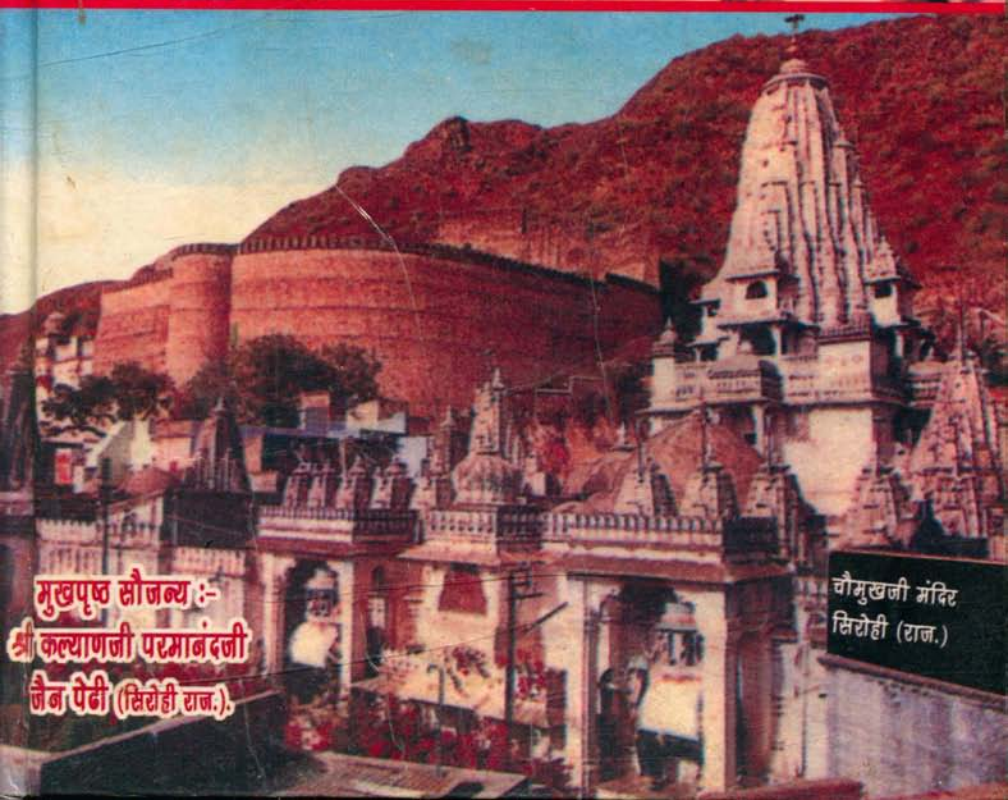

चौमुखजी मंदिर
सिरोही (राज.)

मुखपृष्ठ सौजन्य :-
श्री कल्याणजी परमानंदजी
जैन पेढी (सिरोही राज.).

रूणीतीर्थ मण्डण पद्मावती माताजी

रूणीतीर्थ मण्डण गोडी पार्श्वनाथ

रूणीतीर्थ 450 वर्ष पुराना पगला

पू. भक्तिसूरीजी म.सा.

पू. विनयचन्द्रसूरीजी म.सा.

पू. कल्पजयसूरीजी म.सा.

ज्ञान प्रसार के माध्यम से ज्ञान पिपासु के जीवन में सम्यगज्ञान की ज्योत प्रगट होती है । इसी ज्योत के माध्यम से उसका समग्र जीवन धर्ममय बन जाता है और धर्म के अवलंबन से ही आत्मा अपनी समस्त भव - यात्रा संपन्न कर पूर्णता को प्राप्त होती है, शाश्वत सुख की स्वामिनी बनती हैं । इसी उच्च हेतु को दृष्टि में रखकर अशोक वी. मोदी द्वारा संकलित "जैन सामान्य ज्ञान" पुस्तक श्री जैन बाल संघ के लाभार्थ सार्वजनिक हो रही है । यह एक सफल शुभ कार्य है । आशा है यह सभी के लिये उपयोगी होगी । यही मंगल आशीष ।

– कल्पजयसूरि

अशोककुमार विजयराजजी मोदी

मोदी लाईन, छोटी ब्रह्मपुरी, सिरोही (राज.)

जन्म : १७ अप्रैल १९५०

शिक्षण : स्कूल पाठ्यक्रम,उच्चतर माध्यमिक

अभिरूचि : साहित्य पठन एवं लेखन

पूर्व प्रकाशन : बिखरे मोती, हम बदलेंगे युग बदलेगा
जैन सामान्य ज्ञान (प्रथम संस्करण)

कल्याण पाद पाराम श्रुत गंगा हिमाचलम् ।
विश्वां भोजं रवि देवं, वन्दे श्री ज्ञात नन्दनम् ॥

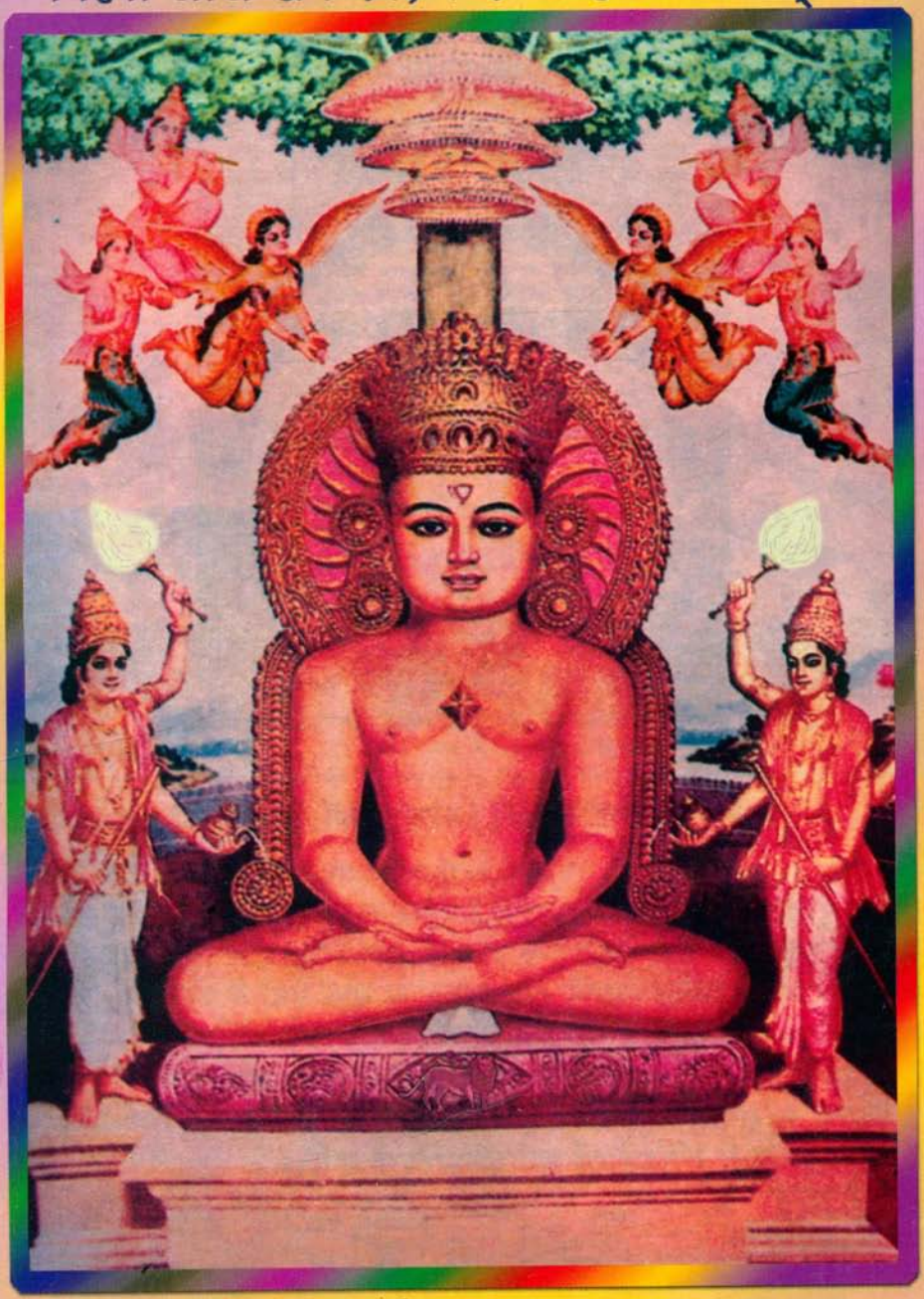

सौजन्य :
भगवान महावीर 2600 वाँ
जन्म कल्याणक महोत्सव समिति, तमिलनाडु,
(कार्यालय : चेन्नई)

हे मरूधर के सपूत, जैन जगत के सितारे,
हे सीरणोवा घाटी के अनमोल रतन,
नमो नमो शांती गुरू हमारे !

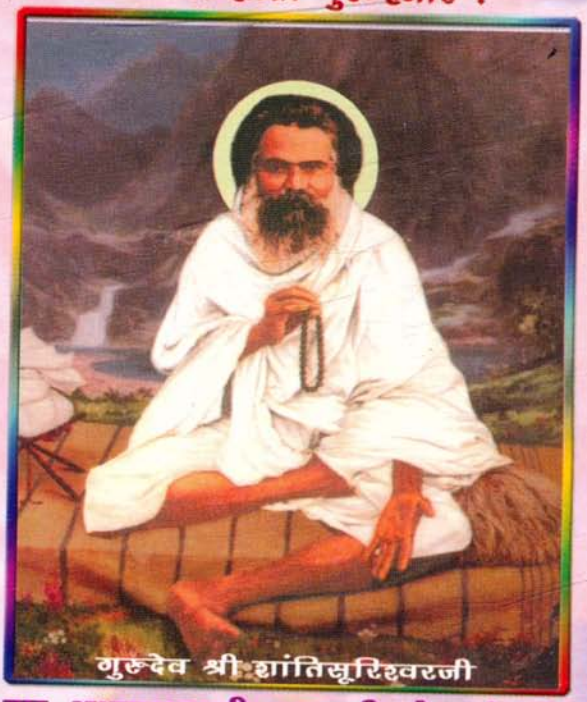

गुरूदेव श्री शांतिसूरिश्वरजी

सौजन्य :- शा. अभयचन्दजी भानाजी, चैन्नई (सिरोही, राज.)

-: प्रखर व्याख्यानदात्री हेमप्रभाश्रीजी का संदेश :-

संस्कृति एवं संस्कारों की सुरक्षा में साहित्य का अनूठा योगदान है। आज के युग में ऐसी पुस्तकों की अत्यन्त आवश्यकता है। 'जैन सामान्य ज्ञान' पुस्तक एक अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमें जैन धर्म के सामान्य आचार-विचार के पक्षों को बड़े सरल एवं सुगम रूप से प्रस्तुत किया है । यह पुस्तक हर सुदूर क्षेत्रों में जहां प्रायः साधु-साध्वी भगवन्तों का विचरण नहीं होता है वहां के लिये अति उपयोगी है ।

इस पुस्तक के संकलनकर्ता श्री अशोकजी मोदी हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं । आपका यह प्रयास अनुमोदनीय है । आप भविष्य में भी उत्तरोत्तर सम्यग्ज्ञान की आराधना में अभिवृद्धि करें इसी शुभाशंसा के साथ ....

दादा गुरूदेव श्रीजिनकुशल सूरिजी

संदेश संयोजक
श्री चूलै जैन संघ, चेन्नई

प. पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी

॥ ओम् णमो णाणस्स ॥

जैन सामान्य ज्ञान

(द्वितीय संस्करण)

दिव्याशीष एवं रूणीतीर्थ उद्धारक :

प पू आ. भक्तिसूरीश्वरजी म . सा .
प. पू. विनयचन्द्रसूरीश्वरजी म . सा .

आशीर्वाद दाता :

प. पू. आचार्य कल्पजयसूरीश्वरजी म . सा .

संकलनकर्ता
अशोक वी मोदी

सम्पादक
प्रदीपकुमार जैन

प्रकाशक
संस्कार जैन पत्रिका (हिन्दी मासिक)
१३८, मिन्ट स्ट्रीट, साहूकारपेठ,
चेन्नई – ७९ . फोन: ०४४ – ५३८५९४०

।। ऊँ ह्रीं श्री गोडीजी पार्श्वनाथाय नमः ।।
श्री गोडीजी पार्श्वनाथ दादा थी सुशोभित

श्री रूनी तीर्थनी यात्रा अे पधारो

450 वर्ष प्राचीन श्री गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभुनां स्वयं प्रगट थयेल चरण पादुका थी सुशोभित एवं त्रिशिखरी भव्य जिनालय थी देदीप्यमान उत्तर गुजरात नुं भव्य तीर्थ श्री रूनी तिर्थनी यात्राए एक वखत अवश्य पधारो ।

ज्यां वारंवार पार्श्वनाथ पद्मावती गौतम स्वामी मणिभद्र वीर तथा गुरू मुर्तीमांथी अमीझरणा थाय छे, अने रहवा तथा जमवा माटेनी उत्तम सगवड छे।

शुभ आशीष

प. पू. आ. देव श्री भक्ति सूरीश्वरजी म.सा. एवं
प. पू. आ. देव श्री विनयचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक

प.पू.आ.देव श्री कंल्पजयसूरीश्वरजी म.सा.

आ तीर्थ शंखेश्वर थी 70 कि. मी. दुर राधनपुर – पालनपुर हाईवे उपर थरा गांव थी 3 कि.मी. छेटे आवेल. छे.

श्री गोडीजी पार्श्वनाथ तीर्थ प्रभावक ट्रस्ट
मु. रूनी वाया थरा, जिला : बनासकांठा
ता. कांकरेज – 385555 (उ.गुजरात), फोन : 20747–2072

❖ पुस्तक का नाम :
जैन सामान्य ज्ञान
(द्वितीय संस्करण)

❖ संकलनकर्ता
अशोक वी. मोदी

❖ प्रकाशन तिथि :
महावीर जंयती
दि. २५ अप्रैल २००२

❖ मूल लागत : ४०/-

❖ सम्पादक
प्रदीपकुमार जैन

प्रकाशक : **संस्कार जैन पत्रिका**
१३८, मिन्ट स्ट्रीट, साहूकारपेठ
चेन्नई - ७९ ☎: ०४४-५३८५९४९

अणुक्रमणिका

क्रं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	शुभ संदेश	 5
2.	सम्पादकीय	 10
3.	अन्तर्मन के उद्‌गार	 11
4.	सर्व सत्व क्षेमंकर	 13
4.	पूजा विधि (चित्रावली)	.... A-16
6.	जैन धर्म एक परिचय	 17
7.	जैन व जिनेश्वर का परिचय	 19
8.	श्रावक के 12 व्रत	 21
4.	मार्गानुसारी जीवन के 35 गुण	 23
5.	मंदिर में पालनार्थ पांच अभिगम	 28
6.	जिन पूजा करते वक्त सात प्रकार की शुद्धि	 30
7.	जिन मंदिर में प्रवेश के पश्चात् मंदिर से बाहर आने तक की विधि	 31
8.	जिनालय में पालनार्थ दस त्रिक	 34
9.	जिन मंदिर के विषय में विशेष सावधानियां	 39
10.	जिन दर्शन एवं पूजा संबंधी प्रश्नोतर	 43
11.	भजो नवकार हो जाओ भव पार	 44
12.	इन्हें भी पहचानें	 46
13.	भक्ति के रंग अनेक	 48
14.	उपाश्रय में सामायिक व प्रतिकमण संबंधी जानकारी	 50
15.	आराधना के विशिष्ट दिन	 53
16.	कुछ स्वाभाविक प्रश्न	 55
17.	विविध प्रश्न	 57
18.	कर्म के विषय में कुछ जानकारी	 67
19.	नौ तत्व का सारांश	 70

20. जीव विचार संबंधी प्रश्न 73
21. नरकवासी का पत्र 76
22. प्रभु संबंधित प्रश्न 79
23. आहार – विहार 82
24. चरक ऋषि का संदेश 85
25. छोटे प्रश्न 88
26. अवसर्पिणी काल की प्रथम विशिष्टताएं 97
27. अवसर्पिणी काल की अंतिम विशिष्टताए 97
28. अतीत,वर्तमान और भावी तीर्थंकरों की सूचीं 98
29. जैन धर्म ज्ञानमाला 99
30. तत्व ज्ञान की बातें 101
31. इस अवसर्पिणी काल के दस आश्चर्य 105
32. नहीं बोलने में नौ गुण 105
33. चौबीस तीर्थंकरों के नामादि के वर्णन का कोटा 106
34. गुरू वंदन की विधि 108
35. चैत्य वंदन विधि 108
36. मंगल प्रार्थना 112
37. अरिहंत वंदनावली 113
38. चौदह स्वप्न के नाम 119
39. चौबीस तीर्थंकरों के लांछन 120
40. तीर्थंकरों के शासन देव एवं शासन देवी 121
41. जैन सामान्य ज्ञान पुस्तक के अर्थ सहयोगी 127

इस पुस्तक के आधार पुस्तकों के रूप में निम्न पुस्तकों से सहयोग लिया गया है ।

1. रत्न संचय, 2. चलो जिनालय चले, 3. डाईनींग टेबल (गुजराती)
4. कुमारपाल वी शाह की शिविर पुस्तक, 5. जैन धर्म सार ।

नाकोडा तीर्थ

नि. कलापूर्ण सूरि तरफ से 29-12-2001

अशोक मोदी जोग धर्मलाभ.

जैन धर्म एवं तत्त्वज्ञान के विषय में, प्रश्नोत्तर के रूप में सुंदर जानकारी देने का तुम्हारा प्रयास अनुमोदनीय है। इस ज्ञान के माध्यम से तुम्हारा जीवन एवं पढने वालों का जीवन धर्ममय, ज्ञानमय बने यही आशीर्वाद।

कलापूर्णसूरि का धर्मलाभ

आचार्य जितेन्द्रसूरि की तरफ से
अशोक मोदी जोग धर्मलाभ.

नाकोडा तीर्थ
29.12.2001

" जैन सामान्य ज्ञान " पुस्तक नाम से ही अपनी उपयोगिता साबित करती है। आपका परिश्रम स्तुत्य है। किसी गीतार्थ गुरू से जांच व संशोधन कराने पर पुस्तक की उपादेयता बढ़ जावेगी।

जितेन्द्रसूरि

आचार्य गुणरत्नसूरि की ओर से

सिरोही
20 / 12 / 2001

सुश्रावक अशोक मोदी को धर्मलाभ

" जैन सामान्य ज्ञान " नाम की पुस्तक युवक–युवतियों व बालकों के लिये बहुत उपयुक्त प्रतीत होती है, क्योकि प्रश्नोत्तर के रूप में होने से जिज्ञासा व समाधान बहुत रसप्रद होते हैं।

इस पुस्तक से सम्यक् ज्ञान पाकर आत्मा 'ज्ञानस्य फल विरति' प्राप्त करके अनंत सुख, मोक्ष को प्राप्त करें। यही शुभेच्छा ।

गुणरत्नसूरि का धर्मलाभ

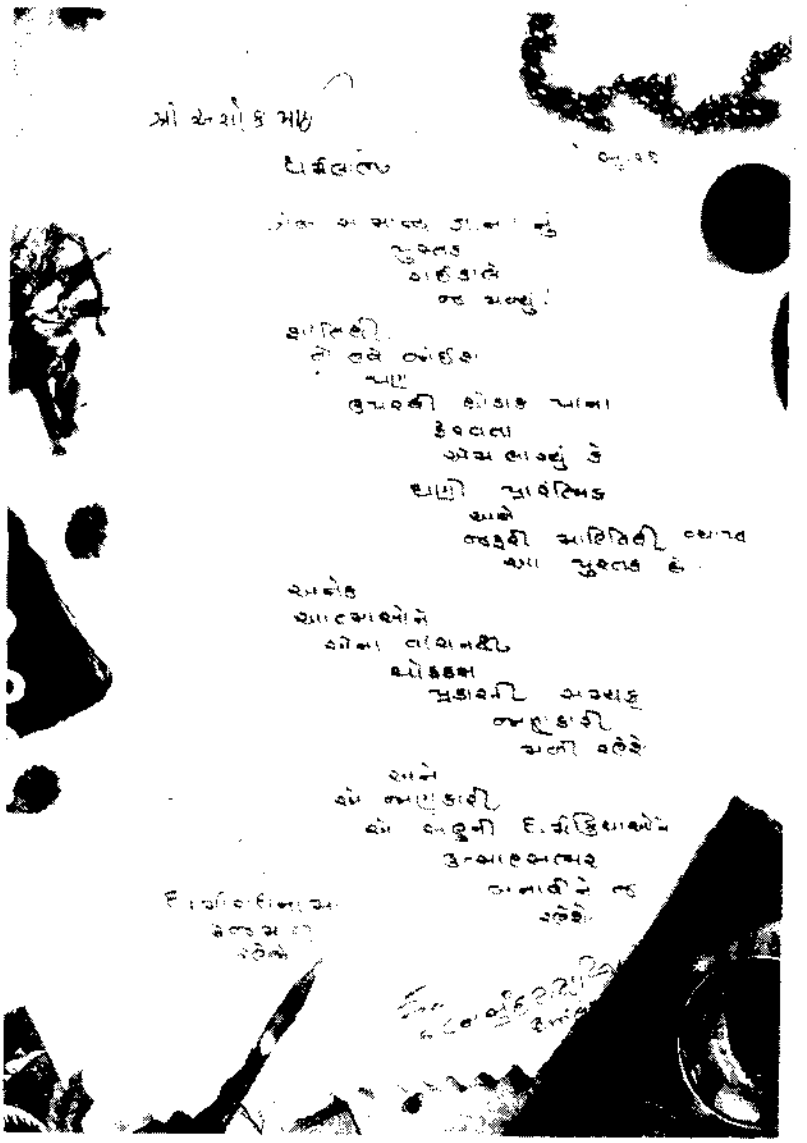

।। जयन्तु जिनेन्द्राः।।

।। श्री आत्म वल्लभ समुद्र इन्द्र सद्गुरुभ्यो नमः।।

विजय नित्यानंद सूरि

दिनांक : 7/11/01

कोलकाता

धर्मानुरागी श्री अशोक वी. मोदी

योग्य धर्मलाभ।

आपके द्वारा प्रेषित पुस्तक "जैन सामान्य ज्ञान" का अवलोकन कर प्रसन्नता हुई।

जैन धर्म का प्रारम्भिक बोध प्राप्त करने के लिए इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन अनुमोदनीय है।

हमारा विश्वास है कि भारत के विभिन्न प्रान्तों-नगरों में धार्मिक अभ्यास करने, करवाने, देव-गुरु धर्म के प्रति निष्ठावान श्रावक तथा जिनशासन के सच्चे पुजारी तैयार करने के उद्देश्य से यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

'जैन सामान्य ज्ञान' की रश्मियों से पाठकों में सम्यक्त्व का प्रादुर्भाव होगा और उनका जीवन समुज्ज्वल एवं सदाचारी बनेगा।

इसका प्रचार-प्रसार जैन जगत में सर्वत्र हो इसी भावना के साथ

नित्यानन्द सूरि
का धर्मलाभ.

Khazana BOX PRODUCT, 011-3610299, 3552061

श्री वर्धमान जैन संघ १०, [illegible] लेन, कोलकाता – 7 (033) 2310526

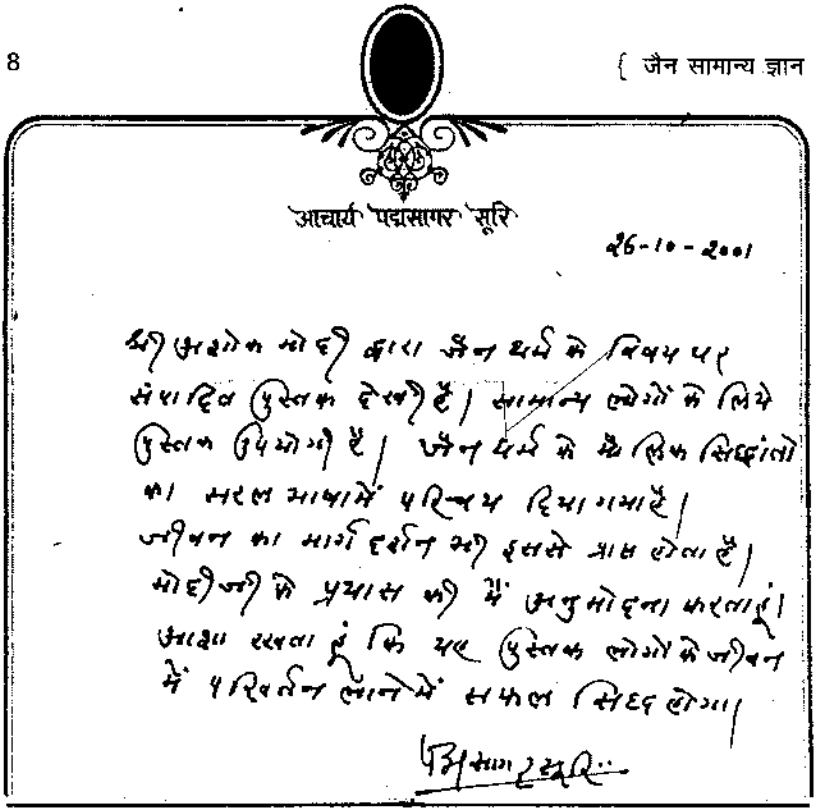
आचार्य पद्मसागर सूरि

26-10-2001

श्री अशोक मोदी द्वारा जैन धर्म के विषय पर संपादित पुस्तक देखी है। सामान्य लोगों के लिये पुस्तक उपयोगी है। जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों का सरल भाषामें परिचय दिया गया है। जीवन का मार्ग दर्शन भी इससे प्राप्त होता है। मोदीजी के प्रयास की मैं अनुमोदना करता हूं। आशा रखता हूं कि यह पुस्तक लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने में सफल सिद्ध होगा।

पद्मसागरसूरि

—: गणीवर्य देवेन्द्रसागर का संदेश :—

धर्मानुरागी श्री अशोकजी मोदी
योग्य धर्मलाभ ।

आप का पत्र मिला । समाचार जाणे ।

आप अभी कुछ समय से 'जैन धर्म' की विस्तृत जानकारी सरल भाषा में देने का जो प्रयत्न कर रहे हो यह बहुत सुन्दर बात है तथा अनुमोदनीय है ।

आपके इस पुस्तक के द्वारा "ज्ञान–दर्शन–चारित्र" के आराधक एवं मोक्ष लक्षी आत्माओं की श्रद्धा में अभिवृद्धि हो।

जो लोग सामग्री, सुरक्षा व सद्गति के चाहक हैं उन्हें इस पुस्तक से मार्गदर्शन मिले इसी भावना से आप के द्वारा किया गया प्रयास, सफल बने, यही परमात्मा से प्रार्थना। आप की भावना पूर्ण बने यहीं आशीर्वाद ।

— देवेन्द्रसागर

तारा भण्डारी (पूर्व उपाध्यक्ष) राजस्थान विधान सभा,
राष्ट्रीय महा सचिव भाजपा, महिला मोर्चा,

जैन दर्शन एवं जगत उपकारी परमात्मा महावीर के सिद्धान्तों को आगे बढाने एवं अगली पीढी यानि आज के बालक को जैन संस्कारों के अनुरूप संस्कारित करने की समस्या का निदान ढूंढने की आज महती आवश्यकता है क्योंकि आज का बालक ही जैन जगत की विशाल एवं ऐतिहासिक धरोहर को आगे बढायेगा ।

मुझे प्रसन्नता है कि श्री अशोक मोदी ने इस दिशा में सार्थक प्रयास करते हुये "जैन सामान्य ज्ञान" पुस्तक को तैयार किया है । चूंकि इनका उद्देश्य अच्छा एवं कल्याणकारी है इसलिये संकलन कर्ता को पुस्तक के प्रकाशन में समाज का पूर्ण सहयोग एवं आशीर्वाद भी मिला।

हर्ष का विषय है कि पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात मात्र छः माह की अल्प अवधि में ही पुस्तक का दूसरा संस्करण भी निकलने जा रहा है ।

परम कृपालु शासन देवी श्री मोदी को सदा सफलता प्रदान करें एवं ये हमेशा उत्तम जैनोपयोगी साहित्य का सृजन कर शासन की सेवा करते रहे बस यहीं मंगल कामना ।

शुभेच्छु
तारा भन्डारी

निदेशक,
अजित प्राच्य. एवं समाज विद्या संस्थान
शान्तिनगर सिरोही – 307001 (राज.)

श्री अशोक वी. मोदी द्वारा लिखित जैन सामान्य ज्ञान पुस्तक को आद्योपान्त पढा । पुस्तक जैन धर्म के विषय में उसकी साधना पद्धति के परिप्रेक्ष्य में प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करती है । जैन बालकों, जिज्ञासुओं एवं अध्येताओं के लिए यह पुस्तक उपयोगी होगी क्योंकि इसके विविध विषयों में सरलीकृत प्रामाणिक सामग्री है ।

श्री अशोक बधाई के पात्र है एवं आचार्य भगवन्तों के आशीर्वाद से वे अच्छा काम कर रहे हैं । वे लगातार ऐसा साहित्य लिखने में सक्षम हो यही शुभकांक्षा ।

विदुषां वंशवद
डॉ. सोहनलाल पटनी
एम.ए. (संस्कृत–हिन्दी) पी. एच. डी.

संपादकीय

कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात् राग और द्वेष के विजेता विश्व वंद्य तीर्थंकरों ने अपनी अद्वितीय देशना के माध्यम से जीवन का मर्म और आत्मा का धर्म हमारे सामने प्रस्तुत किया है, जिनसे अज्ञान का अंधकार हटाकर मनुष्य अपने इहलोक और परलोक को सुखी बना सकता है। साधना, चारित्र और जीवन की तेजस्विता से युक्त ऐसे महापुरूष जन मानस को प्रभावित करते हैं। उनकी वाणी सत्य को उजागर करने वाली और जोडने वाली होती है। उनकी वाणी मुखरित और प्रस्फुटित होकर मानव जीवन को सरसिज करती है। उनकी वाणी आगमों में समाहित है। हमारे साधु संत महापुरूषों के द्वारा वही आगम वाणी सर्व साधारण के लिये सुलभ हो रही है।

संत–समागम और सत्साहित्य से व्यक्ति अपने जीवन में सही समझ प्राप्त करता है । क्या हेय है, क्या ज्ञेय है और क्या उपादेय है – इसकी जानकारी प्राप्त करता है । हेय यानि त्यागने योग्य ज्ञेय यानी जानने योग्य और उपादेय यानि ग्रहण करने योग्य।

संत समागम शाश्वत के साथ जुडने का माध्यम है। । द्रव्य की दृष्टि से जड़ भी शाश्वत है और चैतन्य भी शाश्वत है । किन्तु दोनों के पर्यायों में परिवर्तन होता रहता है । जड़ में भी निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया चालू है तो चैतन्य यानि आत्मा में भी परिवर्तन की प्रक्रिया चालू रहने से विभिन्न जीवायोनियों के रूप में आत्मपर्याय की दृष्टि से परिवर्तन होता रहता हैं। एक का संग जीवन का बिगाड़ कर सकता है तो दूसरा जीवन को पवित्र बनाता है। जड़ के साथ परतन्त्रता है, चेतन के साथ स्वतन्त्रता । हमें तो उनका संग करना चाहिये जो "मित्ति में सव्व भुएसू" की आगम–उक्ति को चरितार्थ करते हुऐ धार्मिक सिद्धान्तों से ओतप्रोत हैं, जिनकी साधना में तेजस्विता है, जो निःस्वार्थ भाव से आत्म अनुष्ठान में संलग्न हैं, जिनके लक्ष्य में मात्र मोक्ष ही रहता है और जिनके रोम रोम में जिज्ञासा का पवित्र भाव रमा हुआ है । ऐसे चैतन्यवान साधकों का संग जीवन के लिये वरदान है ।

सत्साहित्य से जन कल्याण के साथ साथ जन जागरण होता है और मानव जीवन में भी बदलाव आता है। प्रस्तुत पुस्तक "जैन सामान्य ज्ञान" इसी माला का एक मनका है, जिसके माध्यम से हमें जैन धर्म से संबंधित कई जानकारियां प्राप्त हो सकेगी । जिसके संकलन हेतु श्री अशोक वी. मोदी ने अनुकरणीय प्रयास किया है। इसका प्रथम संस्करण अप्रैल 2001 में प्रकाशित हुआ। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से आंका जा सकता है कि अल्पावधि में ही पाठकों और जिज्ञासुओं के कर–कमलों में यह दूसरा संस्करण प्रस्तुत है। उनके इस प्रबल पुरूषार्थ की अनुमोदना के साथ यही मंगल कामना है कि यह पुस्तिका बालकों एवं युवाओं के जीवन संस्कार के मार्गदर्शन का दिव्य दीप स्तंभ बने, सधन्यवाद ।

– प्रदीपकुमार जैन

–: अन्तर्मन के उद्‌गार :–

यह बात सर्व विदित है कि सुउद्‌देश्य से एवं सही दिशा में सच्ची लगन व ईमान से किया गया कोई भी प्रयास सुफलदायी ही होता है । वास्तव में मुझे इस तथ्य की सच्चाई का प्रत्यक्ष अनुभव तब हुआ जब मेरे द्वारा तैयार की गई पुस्तक "जैन सामान्य ज्ञान" की दो हजार प्रतियाँ उसकी प्रकाशन तिथी 6 अप्रेल 2001 के पश्चात चार माह की अवधि में ही समाप्त हो गई । तदुपरांत भी उसकी मांग में कोई कमी नहीं आई। इस पुस्तक को मिले ऐसे उत्तुंग जन प्रतिसाद को देखते हुए मुझे यह लगा कि, उक्त पुस्तक बाल जैन समाज को जैन दर्शन की प्राथमिकी से अवगत कराने में महत्ती भूमिका निभा सकती है ,तब मैने इसका द्वितीय संस्करण निकालने का निर्णय लिया ।

इस समयांश में मुझे यह सत्य तथ्य भी जानने को मिला कि हमारे बालकों का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी धर्म भीरू है। वह वर्ग सुकृत करना चाहता है। साथ ही धर्म के मार्ग पर बढकर आत्म–शुद्धि की कला सीखना चाहता है। पर तत् विषय संबंधित सही पर्याप्त जानकारी के अभाव में स्वयं को दिशा शून्य महसूस करता है, क्योंकि उन्हे प्रचूर एवं यथेष्ट जानकारी देने वाले समर्थ गुरू सतत् सर्वत्र उपलब्ध नहीं होते, ना ही उन्हें समयोचित जानकारी युक्त तत् विषय संबंधित बाल भोग्य साहित्य प्रचूर मात्रा में मिल पाता है क्या श्री संघ के लिये सोचनीय बात नहीं है ये ?

पर सत्य यही है कि इस महत्वपूर्ण विषय में हमारे समाज नायक कम ही गंभीर नजर आ रहे हैं। उनकी इस कार्य के प्रति हमारे समाज के बच्चों के लिये उदासीनता अत्यधिक नुकसानदेह प्रमाणित हो रही है। इस कारण से ये बच्चे उचित निर्देशन के अभाव में जैन धर्म के अत्यन्त आवश्यक आत्महितकारी तथ्यों से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं, परिणामतः वे जैनाचार शून्य भी होते जा रहे हैं।

क्योंकि हम शायद यह भूले जा रहे हैं कि "गीली मिट्‌टी स्वरूप बालक को कोई भी आकार देना सहज होता है।" ऐसे में जो भी जीवन शैली इस कार्य के सम्पादन में प्रथम सफलता पा जाती है , वो ही जीवन शैली उस बालक को अपने रंग में रंग देती है। विद्वानों ने भी कहा है "जैसी संगति बैठिये वैसो ही रंग लीन "

इस विकट विडंबना का कारण यह है कि इस भौतिकवाद का प्रचार व प्रसार तंत्र अति विशाल है ,साथ ही इसकी कार्यशैली सु–नियोजित एवं अति व्यवस्थित है, लुभावनी है । यही कारण है कि यह भौतिकवाद तीव्र गति से विश्व की अनगिनत प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृतियों द्वारा परिलक्षित जीवन व्यवस्थाओं को लगातार लीलता जा रहा है, यहाँ तक कि हमारी आर्य संस्कृति एवं जीवन व्यवस्था भी इसकी भयंकर मार से निरंतर आहत हो रही है।

क्या इस भौतिकवाद रूपी महाविराट ऑक्टोपस के सशक्त कंटीले एवं विषाक्त बाहुपाश में निरंतर झकडती जा रही, हमारी बहुमूल्य धर्मभीरू जीवन व्यवस्था को व हमारी संस्कृति को पुनः उसके उचित आयाम पर प्रतिष्ठित करना हमारा दायित्व नहीं है ?

अगर यह सच है तो हमें निःसंदेह इस भौतिकवाद के विराट एवं मजबूत कार्यतंत्र के काटरूप, हमारा स्वयं का इतना ही सशक्त कार्य-तंत्र खड़ा करना ही होगा तभी हम भौतिकवाद का मज़बूती से प्रतिकार कर पायेंगे।

आज अगर हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी संस्कृति की खास पहचान आध्यात्मिकवाद एवं आध्यात्मिकवाद निर्देशित अनुपम जीवन यापन कला का विलुप्तीकरण एवं आने वाली पीढ़ी का चारित्रिक पतन निश्चित रूप से होकर रहेगा। मुख्यतया इसी सोच से प्रेरित होकर मैंने बाल जैन संघ की सेवार्थ यह नूतन संस्करण प्रस्तुत किया है।

तो लीजिये प्रस्तुत है इस पुस्तक "जैन सामान्य ज्ञान" का द्वितीय संस्करण, जो प्रथम संस्करण से कई ज्यादा विशिष्ट है। क्योंकि विद्वानों एवं पाठकों के निर्देशानुसार मैंने इसे त्रुटि रहित बनाने का प्रयास तो किया ही है, साथ ही कुछ अनावश्यक पाठ्य सामग्री को बदला भी है। इसके बदले नये लेखों का समावेश किया है। पहला लेख प्रभू महावीर से संबंधित है तथा दूसरा लेख हमारे दुष्कर्मों की नरक में मिलने वाली सजा से संबंधित है। तदुपरांत विभिन्न नई पाठ्य सामग्री को भी इसमें समाहित किया है। जैसे अरिया शरणं, अरिहंत वंदनावली, गुरूवंदन, चैत्यवंदन विधि आदि। यही नहीं अष्ट मंगल, चौदह स्वप्न, चौबीसों तीर्थंकरों के लांछन, अधिष्ठायक व अधिष्ठायकों के श्वेत श्याम चित्र भी इस बार इसमें दिये गये हैं, ताकि यह पुस्तक सबके लिये और भी अधिक उपयोगी बन पाये।

मैने 2000 प्रतियों का यह द्वितीय संस्करण प्रभू महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव वर्ष के समापन समारोह के उपलक्ष में प्रभू महावीर के सादर चरणों में ही समर्पित किया है। आशा है मेरा यह प्रयास आप सभी पाठकवृंदों को पसंद आयेगा।

इस पुस्तक के नवीनीकृत संस्करण के सफल निर्माण में "संस्कार जैन पत्रिका" परिवार के श्री मनोजजी बोहरा, श्री राजकुमारजी जैन एवं सुरेशजी बोहरा का पूर्ववत् सक्रिय सहयोग रहा है, इसके लिये अन्तर्मन से मैं उनका आभारी हूँ।

साथ ही मैं उन अर्थ सहयोगियों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस बाल भोग्य साहित्य प्रकाशन रूपी सुकृत कार्य में दिल खोलकर अर्थ सहयोग दिया जिससे मेरा एक और सपना साकार हो पाया।

मैं उन महान् आचार्य भगवंतों, उन ज्ञानी पुरूषों एवं साधु भगवंतों का भी आभारी हूँ जिनके निर्देशन एवं हार्दिक आशीष से यह पुस्तक अधिकतम उपयोगी बन पाई है।

अंत में, मैं मेरे सभी हितमित्रों एवं सहयोगियों से तहेदिल से अनुरोध करता हूँ कि वे भविष्य में भी मेरे ऐसे कार्यों के संपादन में अधिकतम सक्रिय सहयोग देते रहें । यही अभ्यर्थना।

अशोक दी. मोदी

–: सर्व सत्व क्षेमंकर :–

"कल्याण पाद पाराम श्रुत गंगा हिमाचलम् ।
विश्वां भोजं रवि देवं, वन्दे श्री ज्ञात नन्दनम् ।। "

ऐसा कहना नितांत उचित ही होगा कि चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन संपूर्ण भारत वर्ष के लिये व संपूर्ण मानव समाज के लिये ही नहीं वरन् अखिल विश्व की समस्त जीव सृष्टि के लिये गौरवान्वित होने का दिन है।

अर्थात् आज के दिन एक ऐसी महान् विभूति का जन्म हुआ था, जिनकी संपूर्ण जीवनी औरों के लिये निज आत्मा को परमात्मा पद पर प्रतिष्ठित करने की कला सिखाने वाली अनुपम पुस्तक प्रमाणित हुई। आज भी कोई भी व्यक्ति इनकी जीवनी का अक्षरक्षः अनुसरण कर स्वयं की आत्मा को परमात्मा पद पर प्रतिष्ठित कर सकता है।

निः संदेह हम तो भाग्यशाली हैं क्योंकि हमें ऐसे विश्व – कल्याण कर्त्ता वीर– प्रभू का 2600वाँ जन्म–कल्याणक महोत्सव मनाने का विरला सु–अवसर प्राप्त हुआ है।

उन्हीं के सादर चरणों में श्रद्धा के सुमन स्वरूप मेरी इस कृति "जैन सामान्य ज्ञान" का यह द्वितीय संस्करण समर्पित है।

यह बात सर्व विदित है कि, कथनी और करनी में आकाश –पाताल का अन्तर होता है । यह भी सत्य है कि मात्र 'कथनी' के उपासक तो करोड़ों की संख्या में उपलब्ध हैं लेकिन स्वयं की कथनी को निज जीवन में अक्षरशः चरितार्थ कर बताने वाली आत्माएँ मात्र कुछ वर्षों में ही नहीं, बल्कि युग युगांतरों में कभी कभी ही जन्म लेती हैं।

इतिहास की विशाल एवं विराट पृष्ठ भूमि पर कभी भी कथनी के करोड़ों उपासकों में से एक का भी नाम नहीं लिखा गया, जबकि इस वसुन्धरा के उस कर्मवीर पुत्र का नाम मानव इतिहास का शाश्वत स्वर्णिम अलंकार बन गया तथा उनकी जीवनी जगत के समस्त मनु पुत्रों को आदर्श जीवन यापन कला सिखाने वाली सर्वोत्तम शाश्वत कार्यशाला बन गई ।

आओ ! उस जगत तारक की अनुकरणीय जीवनी पर प्रकाश डालने से पूर्व हम देखें कि सर्व जगत को सत्य मार्ग दिखाने वाली इस महान विभूति के जन्म से पूर्व हमारे आर्यावृत की दशा क्या थी ?

आज से ठीक 2600 वर्ष पूर्व इस आर्यावृत का हाल यह था कि धर्म की यथार्थ भावना नष्ट हो चुकी थी । वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था पतन के कगार पर आ चुकी थी। मानव संसार में सत्यता की प्रधानता नष्ट होकर उसका स्थान स्वार्थ भावना ले चुकी थी, जिसके वश होकर सभ्य प्रजा भी अमानुषिक कर्त्तव्यों को करने के लिये कटिबद्ध हो गई थी क्योंकि तत्कालीन धर्म गुरूओं तथा जन नायकों द्वारा प्रजा को धर्मान्धता के तंत्र में फंसाने के लिये उनकी मेधा और प्रज्ञा पर प्रबल अत्याचार

किया जाता था। सृष्टि के अहिंसात्मक अकाट्य नियमों का उल्लंघन करने में भी निर्भयता स्थान पा गई थी। और महारूद्राणी रूप चार अंगुल प्रमाण इस जीभ की लोलुपता पूर्ति हेतु संख्या बद्ध निरपराधी और जगत के लिए महान उपयोगी और उपकारी प्राणियों को खूनी खंजरों से भेदकर उनके रक्त से खप्पर भरे जाते थे। धर्म के सिद्धान्तों को तोड़कर ऐसे अन्ध विश्वासों की आड़ में जनता को असरहीन एवं अस्तित्व हीन बनाने का प्रयास पुरजोर होने लगा था।

ऐसी विकट कटोकटी के पलों मे एक विश्वोद्धारक विभूति की प्रतीक्षा बड़े जोर शोर से हो रही थी। यह इस भारत वर्ष का अहो भाग्य ही था कि आखिर मानव सिद्धांतों के जीर्णोद्धार हेतु एवं तत्कालीन मानव समाज के नेतृत्व की बागडोर संभालने हेतु वह विभूति वर्धमान नाम से इस धरा पर अवतरित हो ही गई। यदि विधि की महासत्ता ने इस विभूति की भेंट हमें न दी होती तो, न मालूम हम अवनिपुत्र अवनति के किस आयाम को छू जाते। शायद महा प्रलय के ग्रास ही बन जाते हम!

लेकिन वर्धमान इक्ष्वांकु वंश जैसे वैभव, ऐश्वर्य सम्पन्न राजकुल के राजकुमार होते हुए भी उस महान विभूति ने स्वयं को सुलभ उस ऋद्धि-सिद्धि और सम्पति को तृण समान गिनते हुए उन्हें तिलांजली दे दी और सकल सर्व विरति सामायिक का व्रत लेकर पंच महाव्रत की भीषण प्रतिज्ञा रूपी त्याग भूमि पर क्षमा रूपी चिंतामणी रत्न शिरोधार्य कर खड़े हो गये। इसके परिणाम स्वरूप पुनः प्रारंभ हुआ मानव मूल्यों के पुनरोत्थान का नया सिलसिला।

यह उन्हीं श्रृंखलाबद्ध प्रयासों का सुःखद परिणाम् था कि सर्वकालीन सर्व हितकारी महामूल्यवान जैन दर्शन के अनमोल सिद्धान्तों को प्रभू महावीर जन-जन के उत्कर्ष हेतु एवं प्राणीमात्र के कल्याणार्थ पुनः स्थापित तथा सत्यापित कर पाये। तभी तो हजारों वर्ष पूर्व अस्तित्व में रही उस पूजनीय विभूति को हमारे जीवन के अवलम्बन के लिये, अभ्युदय के लिये और अभ्युत्थान के लिये याद करना अनिवार्य है।

आओ ! हम इस लेख के नायक स्वनाम धन्य सर्व सत्व क्षेमंकर सिद्वार्थ महीपति के सुपुत्र श्री वर्धमान की ज्वाजल्यमान जीवनी एवं उसके सर्वांगी अनुकरणीय विशाल व्यक्तित्व का अल्प अध्ययन करने का बाल प्रयास करे।

प्रभु महावीर वास्तव में हर प्राणी मात्र के लिये पूजनीय परमोपकारी महापुरूष थे। उनके शांतिमय शासन को अक्षुण्ण धारा प्रवाही बनाने वाले सर्व हितकारी सिद्धान्तों को आचरण में रखना कोई साधारण बात नहीं थी। इसलिये स्वार्थ परायण प्रजा उनके सिद्धान्तों का परिपूर्ण पालन करने में जैसे-जैसे शिथिल बनती गई वैसे-वैसे उनके महान् सिद्धान्तोपासकों की कमी निरंतर होती रही और उनकी करोड़ों की संख्या घटते-घटते लाखों पर आकर रह गई।

शायद हमारी वणिक बुद्धि उस शुद्ध बुद्ध सर्व गुण संपन्न एवं सर्वज्ञ प्रभू के सिद्धान्तों का मूल्यांकन करने में पूर्णतः न सही, पर अंशतः असफल जरूर रही, अन्यथा अखिल विश्व के गुरूपद पर प्रतिष्ठित होकर उस महान् पद की गरिमा का जतन करने योग्य वह महान् व्यक्तित्व विश्वनायक बनने योग्य वह सर्वोतम व्यक्ति मात्र एक पंथ का नायक बनकर न रह गया होता।

"समता" का अर्थ है, वासनाओं से विरक्त होना। इसी समता को प्रभू महावीर ने सामायिक कहा है। यह सामायिक कषायों से मुक्ति पाने का भी साधन है। प्रभू महावीर ने दृढ़ता पूर्वक यह कहा कि मात्र सामायिक ही विकल्प है जिसके माध्यम से समस्त विश्व पटल पर शांति एवं सौहार्द का वातावरण उत्पन्न किया जा सकता है।

आखिर अपने आज के राष्ट्र नेताओं को भी कहना पड़ा कि **Little the want happier you are.** जितनी तृष्णा कम रखोगे, उतना सुख ज्यादा मिलेगा, क्योंकि परिग्रह का एवं दुःख का मुख्य कारण आसक्ति ही है। इसके विपरीत अनासक्ति यानि विरक्ति परम सुख प्राप्ति का विशेष श्रोत है। अतः स्वआत्म कल्याणार्थी विरक्ति के प्रति आसक्त होते हैं। प्रभू महावीर द्वारा बताई गई सामायिक के दो विभाग हैं : 1 सर्व विरति सामायिक यानि जीवन पर्यंत समता भाव में रहते हुए पंच महाव्रतों का चुस्ती पूवर्क पालन करना तथा जीवन भर स्वयं को भौतिक सुखों से यथा संभव अथवा पूर्णतया निर्लिप्त रखना। जबकि 2. देश विरति यानि पूर्ण कालीन समता रखने में असमर्थ आत्माओं द्वारा अपनी क्षमता के अनुसार सामायिक नियमों का पालन करना।

प्रथम सामायिक यानि सर्वविरति सामायिक के पालन कर्ता मुनि कहलाते हैं। द्वितीय सामायिक यानि देश विरति सामायिक के पालनकर्ता श्रावक कहलाते हैं। दोनों में आचार भेद होते हुए भी विचार भेद कदापि नहीं होता।

दोनों साधकों के साध्य की पराकाष्ठा अहिंसा , सत्य , अस्तेय, बह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे सर्वोच्च आत्महित साधक नियमों का चुस्ती पूर्वक पालन करने में ही निहित है।

इन्हीं पाँच नियमों को पंच महाव्रतों के नाम से जाना जाता है और अणुव्रत भी ये ही हैं। ऐसी पंच महाव्रत धारक आत्माएँ स्व मन वचन एवं काया से किसी भी प्राणी के अधिकार पर अतिक्रमण नहीं करती । वे किसी को अहितकारी वचन नहीं कहती । किसी की तृण तुल्य वस्तु को भी बिना आज्ञा के हाथ नहीं लगाती। चुस्त ब्रह्मचर्य के बल पर वे अपनी सभी इन्द्रियों का दमन करती हैं। साथ ही वे किसी के प्रति आसक्त नहीं होती , न ही किसी वस्तु का संग्रह करती हैं। किसी वस्तु पर मूर्च्छा भी नहीं रखती ।

इस विश्व विभूति ने जगत के प्राणियों के उद्धार हेतु जितने भी उपरोक्त प्रकार के सर्वोतम् नियम प्रतिपादित किये उनका आचरण उनके रोम–रोम में था तथा उसमें पूर्णतया आत्म रमणता थी। अर्थात् जो कुछ वे औरों को करने को कहते थे वे स्वयं भी करते थे। शायद यही कारण है कि आज भी उनके द्वारा बताए गये सिद्धान्त पूर्णतया तर्क संगत हैं तथा मुमुक्षुओं के लिये पूर्णतया सु–परिणामदायी हैं।

भारत के महान धारा शास्त्री सर अल्लाड़ी कृष्णस्वामी अय्यर ने यह एक बार कहा था कि "मृग और गाय जो मात्र तृण भक्षण पर ही जीवित हैं, वे अगर मांसाहार से विमुख बनें, तो उसमें विशेषता ही क्या है ? विशेषता तो तब होती है जब सिंह का बच्चा मांस का विरोध करे।" यानि ऋद्धि–सिद्धि और ऐश्वर्य के झूलों में झूला हुआ और खूनी संस्कृति से प्रेरित क्षत्रिय कुल का बालक स्व कुल के रीति रिवाजों के विपरीत खड़ा होकर शस्त्रों का विरोध करे तथा हिंसाचार के विरोध हेतु स्वंय को सहज सुलभ सारी धन संपदाओं एवं सुख– सुविधाओं को मिट्टी तुल्य समझकर उनसे घृणा करे तथा उन्हें तिलांजली दे देवें, भोग को रोग समझकर उससे नाता तोड़ दे। इतना ही नहीं इन सबके विपरीत अशांति एवं अराजकता से त्रस्त इस समस्त सृष्टि के योग क्षेम हेतु स्वयं तप व योग का रास्ता अपनाकर वन खंड और पर्वतों की कन्दराओं में निस्पृही बनकर सारा जीवन व्यतीत करे। मात्र दिनों तक ही नहीं किन्तु महीनों एवं वर्षों तक एक भूपति भूखपति बनकर भटके तो वह निःसंदेह अत्यन्त आश्चर्य की बात होती है । "

जी हाँ, प्रभू महावीर ने वैसा ही किया था। बारह वर्षों की घोर संयम यात्रा में अंगुलियों पर गिने जाने वाले नाम मात्र के दिनों में रूखे सूखे आहार से उन्होंने पारणे किये और शेष सारा काल अहिंसा के आदर्श सिद्धान्तों को पालने में निमग्न रहे। संयम की सर्वोत्कृष्ट साधना करने में तीव्रातितीव्र तप रूपी अगन ज्वालाओं में तपाकर स्वंय की आत्मा को कंचन तुल्य निर्दोष बनाने में तल्लीन रहे।

उनकी इस घोर कष्ट पूर्ण जीवन यापन शैली को अपनाने के पीछे प्राणी– मात्र के परमश्रेय का ही तो लक्ष्य था, और क्या ?

अय्यर साहब का यह तर्क वास्तव में सुंदर है । इसी कथन से झलकती है प्रभू महावीर की अहिंसा, जैसे उच्च सिद्धांत के प्रति निष्ठा ! इसी दृढ निष्ठा एवं सहनशीलता के बल पर वे सर्वज्ञ बनकर समस्त संसार की समस्त जीव सृष्टि के योगः क्षेम के वाहक बने। सर्व सत्व क्षेमंकर बनें और इस तरह उनका महान जीवन मानव इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

– अशोक वी. मोदी
मोदी लाईन् छोटी ब्रहम्पुरी
सिरोही – 307001, फोनः 33766

श्री विजयराजजी मोदी | श्रीमती पवनदेवीजी मोदी

अंगुली थाम के तुम्हारी
मैंने धरती पे चलना सीखा है ।
आप ही की शिक्षा दीक्षा से,
दुनिया की रीत को सीखा है ।
ये करम तुम्हारा ही है मुझ पर,
मैंने हर मुसीबत से लडना सीखा है ।
मेरे पिता मेरे गुरू आपसे ही
मैंने जीने का फन सीखा है ।
कैसे करूं यह श्रृण अदा मैं
मुझे तो एक ही रास्ता दीखा है
बांटूं मैं वो ज्ञान सभी को
जो मैंने तुमसे सीखा है ।

जो दीप जलाये खुशी के
ऐसी कोई ज्योत नहीं ।
भगवान के घर भी माता,
तेरे प्यार का मोल नहीं ।
तू है तो अंधेरे पथ में भी,
दीपक की जरूरत क्या होगी ?
ओ माँ तेरी सूरत से अलग
भगवान की सूरत क्या होगी ?
क्या होगी ?

अशोक वी. मोदी

मंदिर, मंदिर की मूर्ति या मंदिर की ध्वजा का दर्शन होते ही 'नमो जिणाणं' कहना।

मंदिर के द्वार में प्रवेश करते समय प्रथम निसीहि बोलें।

मन्दिर में प्रवेश करने के पश्चात् स्वयं के पैर धोने की विधि ।

मन्दिर में प्रवेश करने के बाद एवं बाहर निकलने के पहले घण्टनाद किया जाता है।

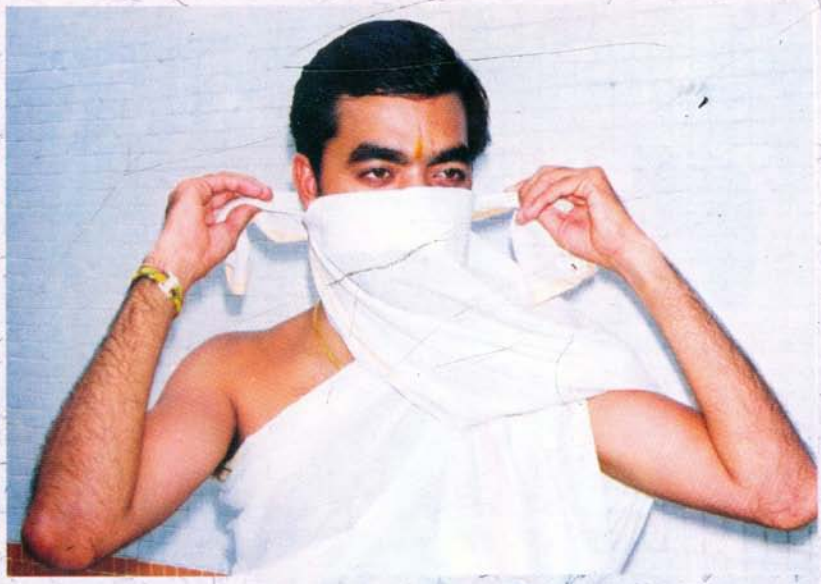

सही विधि से अपने मुख पर मुखपोश इस तरह मोड़कर वांधे ताकि ४उसके आठ पट वन जायें ।

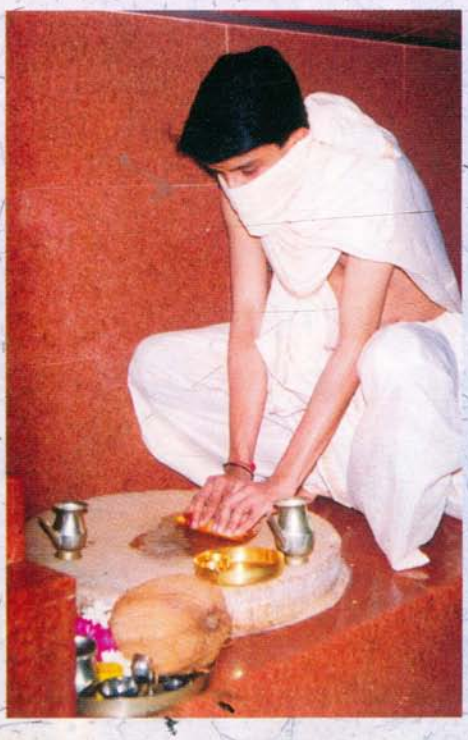

विधिपूर्वक चन्दन केशर अपने हाथों से घिसे ।

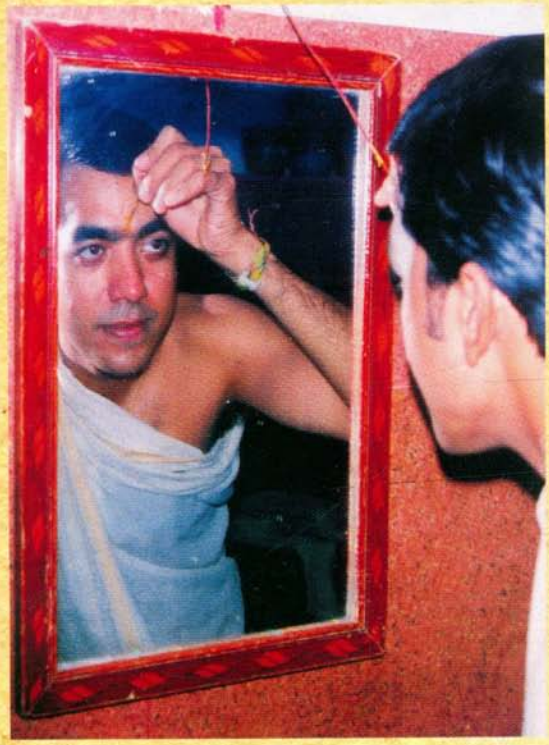

माथे पर ज्योत के
आकार का तिलक करें।

अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री

प्रभु दर्शन के लिये पुरूष दांयी ओर तथा महिलाएं
वांयी ओर खड़ी रहकर स्तुति करें ।

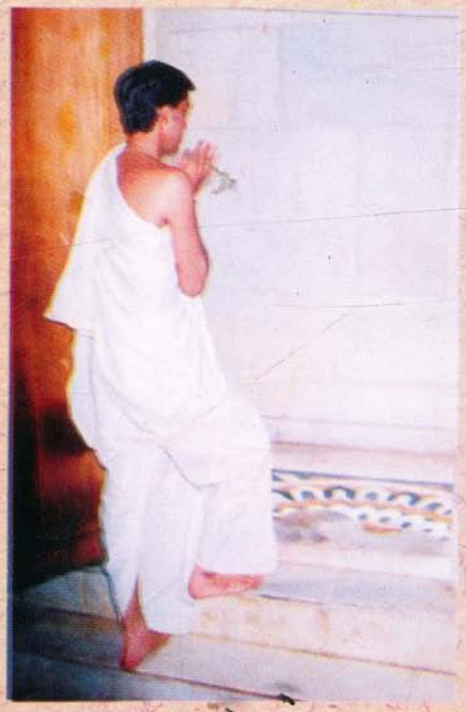

तत्पश्चात् प्रभु दर्शन के
लिये प्रदक्षिणा त्रिक के
लिये प्रस्थान करें।
प्रदक्षिणा देते समय
प्रभु भक्ति के दोहे
धीरे-धीरे वोलें ।

मूल गंभारे में प्रवेश के
बाद दूसरी निसीहि
बोलने की विधि।

निर्माल्य दूर करने की विधी ।

प्रभू का पक्षाल इस विधी से सर पर कलश की धार देकर करें।

प्रभू के नवांगी पूजा की शुरूवात अंगूठे से करें।

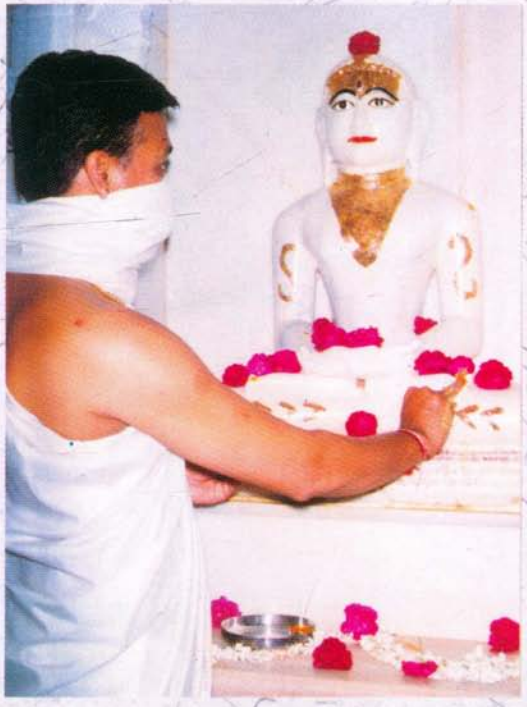

फूल पूजा की विधि ।

देवी देवताओं के मस्तक पर तिलक किया जाता है ।
उनकी नवांगी पूजा नही की जाती ।

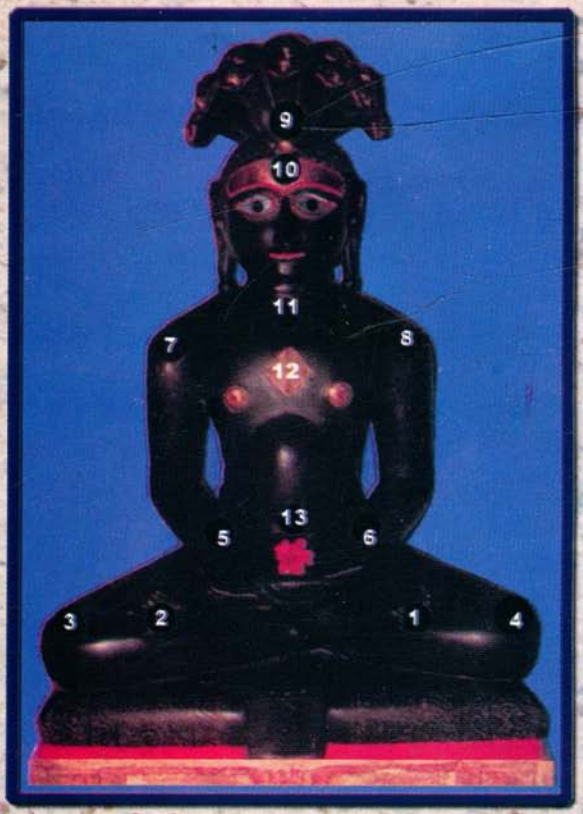

१३ तिलक का विवरण

1. दांया अंगूठा
2. बाया अंगूठा
3. दांया घुटना
4. बाया घुटना
5. दांया हाथ
6. बाया हाथ
7. दांया कंधा
8. बाया कंधा
9. शिखा
10. ललाट
11. कंठ
12. हृदय
13. नाभि

अष्टप्रकारी एवं नवांगी पूजाक्रम

प्रभु की दांयी ओर से दीपक पूजा ।
प्रभु की वांयी ओर से धूप पूजा ।

चैत्य वंदन पूर्व भूमि
प्रमार्जना स्वस्तिक
आलेखन एवं नैवेद्य
पूजा की विधि

दोनों हाथ और पांव तथा मस्तक जमीन को स्पर्श कर पंचांग प्रणिपात प्रणाम करें ।

काउसग्ग मुद्रा ।

पुरूषों की चैत्यवंदन मुद्रा

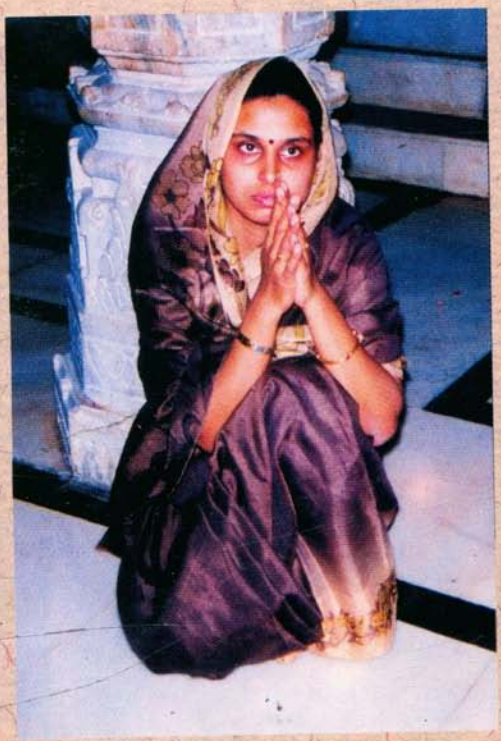

महिलाओं की चैत्यवंदन मुद्रा (महिलाएं चैत्यवंदन करते समय अपना सिर ढकें, साथ ही मंदिर में प्रवेश से लेकर बाहर जाने तक अपना सिर ढक कर रखें।

नमुत्थुणं योग मुद्रा में किया जाता है ।
जावंत केवि साहु, जावंति चेईयाई व जयविराय सूत्र पाठ मुक्तासुक्तिमुद्रा में होता है ।
अरिहंत चेइयाणं काउसग्ग जिन मुद्रा में होता है।

माला नाक की सीध में अनामिका पर रखकर अंगूठे से फिरायें। नाखून न लगायें। माला फिराने की सही विधि यही है ।

सिद्ध चक्र का चित्र
१. अरिहन्त २. सिद्ध
३. आचार्य ४. उपाध्याय
५. सकल साधु ६. दर्शन
७. ज्ञान ८. चारित्र ९. तप

प्रभु को पीठ दिखाकर
बाहर न निकलें।

जिनालय में उपयोगी उपकरण

१. मोरपीछी २. चंवर ३. पूजापेटी ४. कलश ५. सिल्वर कटोरी ६. आरति ७. मंगल दीपक ८. ओरसीया ९. स्टेन्डवाला दीपक १०. कलात्मक कलश ११. वृषभ कलश १२. वासक्षेप मंजुषा १३. पुष्पचंगेरी १४. घंटी, कंडील १५. पंखा १६. जलवटा १७. थाली, कटोरी १८. धूपधाना १९. दीपक स्टान्ड

जैन धर्म - एक परिचय

Philosophy is the fountain source of all the sciences अर्थात् दर्शन विज्ञान ही सभी विज्ञानों का उद्‌गम धाम है।

संसार के इतिहास का अध्ययन करने से यह पता लगता है कि इस विद्या का सत्यानुसंधान करने में भारत के महारथियों ने महान योगदान दिया है । अपने जीवन में सत्य का अलौकिक साक्षात्कार कर, उस तत्व चिन्तन को सर्वजन हिताय उपलब्ध कराने के कारण ही वे ऋषि महर्षि कहलाते हैं । वस्तु विज्ञान की प्रक्रिया कहें, चाहें विश्व व्यवस्था कहें, उसके सत्य स्वरूप को देखने वालों को सर्वज्ञ व युगदृष्टा कहा गया है । ऐसी अनेकानेक विभूतियों की जन्मदात्री है, यह भारत भूमि । इसलिये यह पवित्र भूमि "ऋतुम्भरा प्रज्ञा" की मातृभूमि अर्थात् 'Motherland of Wisdom and Truth' कहलाती हैं ।

यह उन्हीं महर्षियों की महत्ती कृपा है कि इस पवित्र भारत भूमि की प्रजा का रग-रग ऐसे दृढ धार्मिक संस्कारों से आपल्लावित है कि आज भी इस भूमि का प्रत्येक मानव, धर्म को प्राण से अधिक प्रिय मानता हैं। यहाँ चिरकाल से कई दार्शनिक विचारधाराएं अक्षीण रूप से बहती आ रही हैं। यद्यपि इन विचारधाराओं की आराधना में वैवेद्य नजर आता है तथापि धर्म के मूल उद्देश्य में कहीं कोई भेद नहीं है । सभी का मूल उद्देश्य है मुक्ति की प्राप्ति । उन्हीं विभिन्न विचारधाराओं में से एक अद्वितीय विचारधारा है-जैन दर्शन । इस धर्म में प्राणी मात्र के आत्म कल्याणार्थ आवश्यक हर तथ्यों के समस्त पहलुओं पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है, मुक्ति मार्ग बताया गया है एवं भूत भविष्य एवं वर्तमान में भवित अभवित बातों को भी बताया गया है।

इस धर्म के प्रवर्तकों द्वारा जो कुछ भी बताया गया है, वह आज के वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर किये जा रहे प्रयोगों के माध्यम से सत्यापित होता जा रहा है । इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि हमारे सर्वज्ञों ने अपने उग्र तप एवं जप से प्राप्त सर्वोत्तम योग शक्ति के माध्यम से जो कुछ भी देखा वही पूर्ण ज्ञान हैं एवं पूर्ण सैद्धांतिक शाश्वत सत्य हैं । इस तथ्य को आज विश्व के सब महान दार्शनिकों और तत्व वेतांओं ने एक मत से स्वीकारा है।

बात चाहे पुनर्जन्म की हो, आत्मासत्ता की वैधता की हो, या आत्मा सत्ता को पूर्णतया प्रभावित एवं संचालित करने वाली कर्म सत्ता की हो। भले ही वह विराट् सृष्टि स्वरूप चौदह राजलोक के भूगोल संबंधी हो चाहे 84

लाख जीव योनियों का विचार हो या परमाणु से भी सूक्ष्म स्कंध एवं स्कंध प्रदेश का विचार, हो इन सभी विज्ञान सम्मत बातों के किसी न किसी पहलू ने किसी न किसी रूप में उन विद्वानों को जरूर प्रभावित किया है ।

प्रस्तुत है यहाँ उन विद्वानों में से कुछ के विचार

1. मैं अपने देशवासियों को दिखाउंगा कि कैसे उत्तम नियम और ऊँचे विचार जैन धर्म और जैनाचार्यो के हैं । जैनों का साहित्य बौद्धों से बहुत बढकर है, और ज्यों ज्यों मैं जैन साहित्य एवं उनके उत्तम सिद्धांतों को समझता हूँ, त्यों त्यों मैं उन्हें अधिक पसंद करता हूँ- डा. जान्स हर्टल, जर्मनी

2. जैन धर्म पूरे तौर से स्वतंत्र है, इस धर्म में किसी दूसरे धर्म का अनुकरण नहीं है । – **डा. हर्मन जाकोबी M.A. Ph D. जर्मनी।**

3. महावीर का सत्य संदेश हमारे हृदय में विश्व बंधुत्व का शंखनाद करता है । – **सर अकबर हेदरी भू. पू.** राज्यपाल, असाम।

4. जैन दर्शन बहुत ही ऊंची पंक्ति का है। उसके मुख्य तत्व विज्ञान शास्त्र के आधार पर रचे हुए हैं, ऐसा मेरा अनुमान ही नहीं पूर्ण अनुभव है । ज्यों ज्यों भौतिक विज्ञान आगे बढता जाता है, जैन धर्म के सिद्धांतों को सत्य सिद्ध करता जाता है । – **डा. ऐल. पी. टेसीटोरी,** इटालियन विद्वान।

5. जैन धर्म की उत्पति और इसका इतिहास स्मृति शास्त्र और उनकी टीकाओं से भी अधिक पुरातन कालीन है ,अन्य धर्मो से पूर्णतया अलग एवं स्वतंत्र है । – **श्रीकुमार स्वामी शास्त्री** भू. पू.प्रधान न्यायाधीश, मद्रास।

6. जैन धर्म द्वारा भारत की संस्कृति को दिया गया सहयोग वास्तव में अद्‌भुत है । मेरी व्यक्तिगत मान्यता है कि भारत पर यदि मात्र जैन धर्म का वर्चस्व दृढ रहा होता तो हमें आधुनिक भारत की अपेक्षा अधिक संगठित और विस्तृत भारत मिला होता । – **सर शणमुगम चेट्टी,** सुप्रसिद्ध विद्वान।

क्या ये सब बातें इस तथ्य को प्रमाणित नहीं करती हैं कि जैन धर्म मात्र राष्ट्रीय धर्म ही नहीं, विश्व धर्म बनने की क्षमता रखता है ?

हमें गर्व होना चाहिये कि हमें ऐसे जैन कुल में जन्म मिला, जैन धर्म मिला। इसकी सार्थकता तभी होगी जब हम इसके द्वारा आत्म कल्याणार्थ प्रतिपादित सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारें और तदनुसार जीवन यापन करें ।

प्रस्तुत पुस्तक में जैन धर्म संबंधी कतिपय तथ्यों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से स्पष्ट करने का, सागर में बूंद के समान प्रयास किया गया है । पाठक इस संग्रह से लाभान्वित होंगे – इसी कामना सहित ।

जैन व जिनेश्वर का परिचय

प्रश्न :– जिनेश्वर किसे कहते हैं?

उत्तर :– 'राग' और 'द्वेष' को जीतने वाले अष्ट कर्म रूपी दुर्जय पहाड को भेदने वाले 'जिन' या 'जिनेश्वर' कहलाते हैं। जिन्होंने मोह का सर्वनाश कर दिया है और जो अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन व अनन्त वीर्य के स्वामी हैं, वे ही जिन हैं ।

प्रश्न :– जैन किसे कहते हैं?

उत्तर :– जिनेश्वर प्रभु के प्रति पूर्ण श्रद्धावान एवं उनके आदेश के प्रति पूर्ण निष्ठावान यानि जिन–दर्शन के प्रति पूर्ण सम्यकत्व भाव रखने वाला व्यक्ति ही सच्चा जैन है ।

प्रश्न :– जैन श्रावक के कर्तव्य क्या क्या हैं?

उत्तर :– जैन श्रावक के मुख्य कर्तव्यों को चार भागों में बाँटा जा सकता है । वे निम्न हैं :

दैनिक कर्तव्य :–

1. आठ कर्मों का नाश करने हेतु आठ नवकार गिनकर उठना।
2. सुबह सामायिक व प्रतिक्रमण करना ।
3. जिन दर्शन व गुरू दर्शन करना ।
5. स्वगृह का निरीक्षण करना, जिसमें यह देखना कि घर की व्यवस्था में जैनाचार के अनुरूप जयणा का पालन हुआ है या नहीं।
6. शुद्ध जल से जयणा पूर्वक स्नान करना।
7. अष्ट प्रकारी पूजा विधि पूर्वक करना।
8. व्याख्यान श्रवण का संयोग हो तो अवश्य करना।
9. सात्विक भोजन करना।
10. अपनी शक्ति के अनुरूप सात क्षेत्रों में दान देना ।
11. नीति पूर्वक आजीविका का उपार्जन करना ।
12. शाम्र को पुनः देव–दर्शन करना ।
13. शाम को प्रतिक्रमण व सामायिक करना ।
14. स्वाध्याय करना ।

15. धर्म चर्चा करना ।
16. बडों की सेवा व भक्ति करना ।
17. सात प्रकार के भय से मुक्त होने के लिये रात्रि में सात नवकार गिनकर सोना।

वार्षिक कर्तव्य :–

1. संघ पूजन ।
2. साधर्मिक भक्ति ।
3. रथ यात्रा ।
4. तीर्थ यात्रा ।
5. जिन मंदिर में स्नात्र महोत्सव ।
6. देव द्रव्य में सहयोग ।
7. रात्रि जागरण ।
8. श्रुतज्ञान पूजा महोत्सव।
9. महापूजन
10. उद्यापन
11. आलोचना

जीवन कर्तव्य :–

1. जिन मंदिर का निर्माण करवाना ।
2. गृह मंदिर रखना ।
3. जिन बिंब भरवाना ।
4. जिन बिबों की प्रतिष्ठा करवाना ।
5. दीक्षा दिलवाना ।
6. साधुओं को उनकी योग्यतानुसार पदवी दिलवाना ।
7. आगमों की हस्तप्रति लिखवाना ।
8. उपधान करवाना ।
9. उद्यापन करवाना ।
10. पौषधशाला, धर्मशाला, पाठशाला चिकित्सालय आदि का निर्माण करवाना ।
11. पडिमा वहन करना ।
12. पालीताणा जैसी तीर्थ भूमि पर चातुर्मास करवाना ।
13. महातीर्थों की यात्रार्थ संघ निकालना ।

14. संघ व शासन की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व दान देने को तैयार रहना ।

जीवन के अंतिम पलों में करने योग्य कर्म :–

1. मरण समय नजदीक जानने पर शत्रुन्जय जैसे तीर्थ पर ध्यान केन्द्रित करना ।
2. चार आहार का त्याग करना ।
3. यथेष्ट गुरू के पास अतिचार की आलोचना लेना ।
4. सर्व पाप कर्मों से निवृति लेना । (वोसिराना)
5. उनकी शरण स्वीकारना, यानि अरिहंत, सिद्ध, साधु एवं प्रभु द्वारा स्थापित धर्म की शरण स्वीकारना ।
6. बारह व्रत धारण करना ।
7. दुष्कृत्य की निंदा करना
8. सुकृत्य की अनुमोदना करना ।
9. सर्व जीवों से क्षमा मांगना
10. नवकार स्मरण सदैव करना ।

श्रावक के १२ व्रत

1. अहिंसा व्रत :– राग द्वेष पूर्ण प्रवृति से हिंसा होती है, अतः प्रमाद एवं राग द्वेष की प्रवृति त्याग कर स्थूल हिंसा का त्याग करते हुए शेष सूक्ष्म हिंसा का यथा संभव त्याग करना। अहिंसा अणु व्रत है यानि स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत ।

2. सत्याणु व्रत यानि स्थूल मृषावाद विरमण व्रत :– झूठ बोलने से बचना एवं यथा तथ्य कहना ही सत्य अणु व्रत है।

3. अचौर्य व्रत यानि स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत :– इच्छा होने पर भी स्वामी की आज्ञा बिना किसी वस्तु को लेना या उसका उपयोग करना चोरी है। इसका त्याग अचौर्य अणुव्रत है। यही स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत है ।

4. ब्रह्मचर्य व्रत :– आत्मिक एवं बौद्धिक विकास के लिये संयम तथा सदाचार की आवश्यकता है । आंतरिक शक्तियों को संयम से सुरक्षित रखकर हम उन्हें सत्कार्यों एवं प्रवृतियों में लगायें यह ब्रह्मचर्य व्रत है । यही सबसे कठिन व्रत है ।

5. अपरिग्रह व्रत अथवा स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत :– इच्छा आकाश के समान अनन्त हैं । इसलिए उसे परिमित कर तृष्णा, मोह व आसक्ति को नियंत्रित किया जाता हैं । यही अपरिग्रह व्रत है । यानि स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत है ।

6. दिशा परिमाण व्रत :– यानि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये धनोपार्जन के हेतु से चारों दिशाओं में भ्रमण का क्षेत्र मर्यादित करना । इसे दिशा परिमाण व्रत कहते हैं ।

7. भोगोपभोग परिमाण व्रत :– इस सातवें व्रत के अनुसार स्वयं के उपभोग की वस्तुएं जैसे खान, पान, अलंकार, वस्त्र, वाहन एवं धन की सीमा निर्धारित की जाती है । यानि निश्चित मात्रा से अधिक धन एवं वस्तुओं का उपयोग न करना भोगोपभोग परिमाण व्रत है ।

8. अनर्थ दण्ड विरमण व्रत :– श्रावक को जाने अनजाने लगने वाले अनावश्यक पाप अनर्थ दंड है। यानि बे मतलब बेजुबान प्राणियों को सताना, उनके तमाशों से मनोरंजन करना, किसी का मजाक उडाना, सिनेमा, नाटक आदि देखना ऐसे कार्यों को नियंत्रित करना अनर्थ दंड विरमण व्रत है।

9. सामायिक व्रत :– व्रतों को पालने में उपर्युक्त बल प्राप्ति का साधन सामायिक है । सामायिक का अर्थ है, मन की चंचल प्रवृतियों को शान्त एवं स्थिर करके समभाव प्राप्त करना । इससे आराधना में तल्लीनता आती है ।

10. देशावगाशिक व्रत :– दिशा परिमाण एवं उपभोग परिभोग की जीवनपर्यंत मर्यादा को प्रतिदिन संयमित करना इस व्रत का लक्ष्य है । देशावगासिक व्रत में देश व अवकाश ये दो शब्द हैं जिनका अर्थ है, स्थान विशेष, यानि स्वगति विधियों का मर्यादित क्षेत्र ।

11. पौषधोपवास व्रत :– आत्म चिंतन, आत्म निरीक्षण कर आत्म भाव में रमण करना यानि धर्म आराधना प्रवृति का पोषण व पुष्टिकरण ही पौषध व्रत है । इस व्रतानुसार उपवास आदि करके सांसारिक वृतियों का त्याग किया जाता है ।

12. अतिथि संविभाग व्रत :– अतिथि संविभाग शब्द के

दो खण्ड हैं- अतिथि और संविभाग अतिथि अर्थात् तिथि पर्व आदि सारे लौकिक व्यवहारों का त्याग कर भोजन के समय आहार के लिये आवे वह अतिथि कहलाता है । साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका ही अतिथि होते हैं। उन अतिथियों का संविभाग अर्थात् श्रद्धा एवं भावना पूर्वक सत्कार करना तथा भोजन कराना ही अतिथि संविभाग व्रत है ।

मार्गानुसारी जीवन के ३५ गुण

1. न्याय संपन्न वैभव :- गृहस्थ को सर्वप्रथम स्वामी द्रोह, मित्र द्रोह, विश्वास घात तथा चोरी आदि निंदनीय उपायों का त्याग करके अपने वर्ण के अनुसार सदाचार और न्याय नीति से ही उपार्जित धन वैभव से संपन्न होना चाहिये ।

2. शिष्टाचार प्रशंसक :- शिष्ट पुरूष वह कहलाता है जो व्रत तप आदि करता हो, ज्ञानी वृद्धों की सेवा से जिसे विशुद्ध शिक्षा मिली हो, विशेषतः जिसका आचरण सुंदर हो ।

3. समान कुल और शील वाले भिन्न गोत्रिय के साथ विवाह संबंध :- पिता दादा आदि पूर्वजों के वंश के समान वंश हो, मद्य, मांस आदि दुर्व्यसनों के त्यागरूपी शील सदाचार भी समान हो, ऐसे समान स्तर के कुल व शील वाले भिन्न गौत्रिय के साथ ही सद्गृहस्थ को विवाह संबंध करने चाहिये ।

4. पाप भीरू :- दृष्ट और अदृष्ट दुख के कारण रूप कर्मो से डरने वाला पाप भीरू कहलाता है । जैसे चोरी, परस्त्री गमन जुआ आदि।

5. प्रसिद्ध देशाचार का पालक :- सद्गृहस्थ को अपने परम्परागत रीति रिवाजों को जैसे वेश भूषा, भाषा, भोजन आदि अकारण नहीं छोडना चाहिये । यानि मोह व क्षोभ पैदा करने वाले भड़कीले वस्त्र कभी नहीं पहनने चाहिये ।

6. अवर्णवादी न होना :- अवर्णवाद का अर्थ है, निन्दा। सद्गृहस्थ को किसी की निंदा नहीं करनी चाहिये। चाहे अगला व्यक्ति जघन्य हो, मध्यम हो या उत्तम हो । दूसरों की निंदा करने से मन में घृणा, द्वेष, वैर विरोध तो होगा ही, साथ ही इससे नीच गौत्र का कर्म बंध होता है।

7. सद् गृहस्थ का निवास स्थान :– जो मकान बहुत द्वार वाला न हो, ज्यादा ऊँचा न हो, एकदम खुला भी न हो, अच्छे पडौसियों के बीच हो तथा सुरक्षित हो , वहाँ ही रहना चाहिये।

8. सदाचारी के संग संगति :– जीवन में सत्संग का बडा महत्व है । जो इस लोक व परलोक के लिये हितकर प्रवृति करते हों, जो खर, ठग, जालसाज व चोर न हो, यानि क्रूर, भाट व नट न हो, ऐसे व्यक्तियों की संगति ही करनी चाहिये ।

9. माता पिता का पूजक :– उत्तम पुरूष वही कहलाता है, जो अपने माता पिता का सम्मान करे। उनके बुढ़ापे का सहारा बने तथा उन्हें उनकी धर्म क्रिया में सहयोगी बनें ।

10. उपद्रव वाले स्थान को शीघ्र छोड देना :– जिस नगर में उपद्रव अशांति व भय का वातावरण पैदा हो जाय उसे छोड़ देना चाहिये।

11. निंदनीय कार्य का त्याग :– देश, जाति, व धर्म के लिये अहितकारी कार्य न करे । ऐसे कार्य निंदनीय हैं ।

12. आय के अनुसार व्यय करना :– गृहस्थ को अपने आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिये यानि उसे अपनी आय का 1/4 स्व आश्रितों पर खर्चना चाहिये दूसरा 1/4 भाग अपने धंधे में लगाना चाहिये, तीसरा 1/4 धर्म के लिये व चौथा 1/4 बचाना चाहिये ।

13. संपति के अनुसार वेश :– अपने आर्थिक स्तर एवं वैभव के अनुसार एवं देशकाल व परिस्थिति के अनुसार वेश व अलंकार धारण करना व श्रृंगार करना चाहिये ।

14. बुद्धि के आठ गुण का मालिक बनना :– 1. शुश्रुषा धर्म शास्त्र श्रवण की अभिलाषा करना । 2. धर्म श्रवण व धर्म क्रिया करना। 3. धर्मोपेदश आत्मसात करना। 4. धर्मोपदेश अनुसार आचरण करना । 5. धर्म के विषय में जानी हुई बातों के सिवाय दूसरी बातें जानने के लिये तर्क करना । 6. श्रुति, युक्ति व अनुभूति के अलावा अन्य बातों से दूर रहना, यानि हिंसा आदि कृत्यों में शामिल न होना। 7. उहापोह से उत्पन्न मोह व संदेह को दूर करके सम्यक ज्ञान प्राप्त करना। 8. तत्व ज्ञान की सहायता से विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील बनना।

15. प्रतिदिन धर्म श्रवण कर्ता :— आत्म अभ्युदय तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु नित धर्म श्रवण करना ।

16. अजीर्ण के समय भोजन छोड़ देना :— पहले किया हुआ भोजन जब तक पच न जाये तब तक दूसरी बार भोजन नहीं करना। क्योंकि ऐसा करने से अजीर्ण होता है । यह अजीर्ण सब रोगों का मूल है ।

17. समय पर उचित भोजन :— भूख लगने पर ही आसक्ति रहित अपनी प्रकृति, रूचि, जठराग्नि एवं निश्चित खुराक के अनुसार ही भोजन करें । तामसी व उत्तेजक खाद्य पदार्थों। का सेवन न करें।

18. परस्पर अबाधित रूप से तीनों वर्गों की साधना :— धर्म, अर्थ व काम ये तीन वर्ग कहलाते हैं । इन तीनों की संयमित रूप से जयणा रखते हुए संतुलित रूप से, व एक दूसरे को बाधित किये बिना साधना करनी चाहिये।

19. अतिथि सत्कार :— घर आये हुए अतिथि का स्वागत करना आवश्यक है । जैसे श्रावक, श्राविका व साधु साध्वी अगर भोजन के समय आ गये हैं या उन्हें बुलाकर भोजन करवाने की अनुकूलता है तो उन्हें घर बुलाकर भोजन अवश्य करवायें ।

20. अभिनिवेश से दूर :— मिथ्या आग्रह से दूर रहना चाहिये। कभी अपनी बात औरों पर थोपने के लिये जिद नहीं करना चाहिये । जो नीति मार्ग से अनभिज्ञ होता हैं , जिद्दी और अभिमानी होता है, वह अपने ही दुर्गुणों से जीवन भर दुखी रहता हैं ।

21. गुण का पक्षपाती :— एक सद्गृहस्थ को गुणों का एवं और उपलक्षण् से गुणीजनों का चाहक होना चाहिये, हिमायती होना चाहिये । गुणी जन जब भी अपने संपर्क में आवें, उन्हें सुनें, उनका उचित सम्मान करें, उनके आगे अपनी योग्यता का प्रदर्शन न करें ।

22. अनुचित देशकाल चर्चा का त्याग :— सद्गृहस्थ की जीवनचर्या देशकाल के अनुकूल होनी चाहिये। उसे ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये, जिससे सामाजिक नियम भंग हो,

स्वयं का सामाजिक जीवन विकृत बने । यानि उसे शुद्ध परंपरा अनुसार जीवन जीना चाहिये ।

23. बलाबल का ज्ञाता :– सद् गृहस्थ को स्वयं के बल का एवं आर्थिक स्तर का भान होना चाहिये यानि अपने सामर्थ्य से अधिक कार्य का साहस नहीं करना चाहिये ।

24. विद्या एवं ज्ञान वृद्धों का पूजक एवं वृतस्थ का सम्मान :– अनाचार के त्यागी व सम्यक आचार के दृढ पालक हों वे वृतस्थ कहलाते हैं । ऐसे वृतस्थ एवं ज्ञान वृद्धों को उचित सम्मान देना चाहिये । अपने घर आने पर उन्हें उच्च व उचित आसन देना चाहिये। उनका सत्कार करना चाहिये ।

25. पोष्य का पोषण :– सद्गृहस्थ का यह उत्तरदायित्व है कि परिवार में माता पिता, पुत्र–पुत्री आदि जो भी व्यक्ति, उनके आश्रित हो या संबंधित हो, उनका यथेष्ट भरण पोषण करे । उनका योग क्षेम वहन करें ।

26. दीर्घ दर्शी :– सद् गृहस्थ तीक्ष्ण बुद्धि का धनी होता हैं। वह अपनी प्रतिभा द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्य को पकड़ लेता हैं। वह कोई भी कार्य गंभीर चिंतन के बाद ही करता हैं।

27. विशेषज्ञ :– सार, असार, कार्य, अकार्य, वाच्य–अवाच्य, लाभ–हानि का विवेक करना तथा नये आत्म हितकारी ज्ञान प्राप्त करना । यह सब दृष्टियों से भली प्रकार देख लेना विशेषज्ञता हैं ।

28. कृतज्ञ :– दूसरों से मिली सहायता को याद रखना तथा ऐसी सहायता तथा उपकार का बदला चुकाने के लिये सदा तत्पर रहना।

29. लज्जावान :– सद्गृहस्थ के लिये लज्जा का गुण परम आवश्यक हैं। लज्जावान व्यक्ति किसी भी पाप कार्य को करने में शर्म करेगा। तथा यम–नियम जो उसने ले रखे हैं, उनका प्राणांत पालन करेगा। लज्जा अनेकों गुणों की जननी हैं । वह अनेक गुणों युक्त आर्य माता हैं ।

30. लोक वल्लभ :– सद्गृहस्थ को लोकप्रिय होना जरूरी हैं। लोकप्रिय वही हो सकता है जो विनय, नम्रता, सेवा, सरलता, सहानुभूति व दया आदि गुणों से युक्त हों ।

31. दयावान :– दुखी जीवों के दुख को दूर करने की भावना दया कहलाती हैं । जैसे संकट के समय आप अपने लिये दया चाहते हैं वैसे ही समस्त जीवों पर आप भी दया करें ।

32. प्रकृति सौम्य :– श्रावक की प्रकृति और आकृति दोनों सौम्य होनी चाहिये । क्रूर आकृति और भयंकर स्वभाव वाला व्यक्ति लोगों के मन में उद्वेग पैदा करता है । उसका प्रभाव क्षणिक होता हैं जबकि सौम्य व्यक्ति से सभी आकृष्ट होते हैं ,कोई भयभीत नहीं होता, बल्कि प्रभावित होता है।

33. परोपकारी :– यथासंभव लोकोपकार करना चाहिये क्योंकि परोपकारी लोक दृष्टि में आँखों में अंजन समान होता है।

34. आंतरिक छः शत्रुओं के त्याग को तैयार :– गृहस्थ के लिये काम, क्रोध, लोभ, मान ,मद और मत्सर यह छः अंतरंग शत्रु हैं। 1. परदारा/मत्सर गमन पाप हैं । 2. क्रोध में आकर किसी को अकारण हानि पहुंचाना पाप हैं । 3. अकारण किसी लाभ को पाने की चेष्टा करना लोभ है , जो सुपात्र दान में भी रूकावट पैदा करता हैं। 4. सदुपदेश को न मानना मान है। 5. अयोग्य एवं अनर्थकारी कार्य करके हर्षित होना। 6. किसी की उन्नति देख कर जलन करना मत्सर है।

35. इन्द्रिय समूह को वश में करने को तत्पर :– अपनी इंद्रियों को काबू में रखने का प्रयास सदा रखना चाहिये ।

नोट :– ये समस्त मार्गानुसारी जीवन की 35 बातें या 35 गुण किसी भी धर्म के आदमी को आदमी से इंसान बनाने का अचूक साधन हैं।

- निर्गुणता के प्रति आप जितना द्वेष पैदा करते जायेंगे, वैसे–वैसे आपके अन्तः चक्षु खुलते जायेंगे।
- जिन शासन–प्रदत्त संस्कार युक्त अगर हम हमारा जीवन बनाये तो, मनुष्यलोक भी, देवलोक बन सकता है।
- माता, पिता, और गुरु — ये तीनों पृथ्वी पर जीवित देवता हैं ।

मंदिर में पालनार्थ पांच अभिगम

प्रश्न :– 'जिन दर्शन व पूजा' क्यों करनी चाहिये?

उत्तर :– जिन दर्शन से पाप भावना व अशुभ विचार खत्म हो जाते हैं । वंदन मात्र से विघ्न दूर हो जाते हैं, तथा वांछित फल की प्राप्ति होती है ।

जिन पूजा का तत्काल फल चित्त की प्रसन्नता है। मन में शुद्ध भाव लाकर प्रभू पूजा करने से आत्मा निर्मल बनती है। निर्मल आत्मा ही उर्ध्वगामी बन सकती है । शुक्ल ध्यान में स्थिर हो सकती है । आत्मोद्धार इसीसे संभव हैं । यानि मोक्ष पद तक पहुँचने की एक सीढ़ी शुद्ध भाव से की गई जिन पूजा भी है ।

पूर्व भव के पुण्योदय से हमने मनुष्य भव पाया, उसमें भी उत्तम जैन कुल पाया । अब अगर जैन से जिनेश्वर बनना हैं तो जिन पूजा व जिन भक्ति में तो मन रमाना ही होगा। जिन भक्ति, जिन दर्शन पूजा कैसे की जाये उसकी विस्तृत जानकारी अगले पृष्ठों पर दी जा रही हैं।

नोट :– जैन धर्म के मतानुसार जिनेश्वर प्रभु जगत के कर्ता नहीं हैं । यहाँ तो कर्म सत्ता को महान् गिना गया है । फिर भी जिनेश्वर देव की पूजा का विधान इसलिये रखा गया है कि हम भी उनके बताये मुक्ति मार्ग को अपनाकर कर्म बंधन से मुक्त हो सकें । नवांगी पूजा का हेतु यही है ।

प्रश्न :– प्रभु दर्शन से पूर्व कौन से पाँच अभिगम ध्यान में रखने चाहिये? तथा अभिगम शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर :– जिन मंदिर में ध्यान रखने योग्य पाँच अभिगम है। अभिगम यानि विनय, जैसे हम हमारे राष्ट्रीय नेता या किसी विशिष्ट व्यक्ति को मिलने जाते वक्त एवं मिलते वक्त उनके प्रति मन में विनय का अहो भाव रखते हैं। एवं वर्तन में विशेष शिष्टता का पालन करते हैं। उसी तरह प्रभु मंदिर में जाते वक्त निम्न लिखित पाँच

विनय (पाँच अभिगम) का ध्यान रखना पडता है ।

1. स्वउपयोगी संचित का त्याग :– अपनी निजी उपयोगी वस्तुएं जैसे पुष्पहार, राजचिन्ह, मुखवास व दवा इत्यादि पदार्थो को मंदिर के बाहर छोडकर मंदिर में प्रवेश करना चाहिये । अगर भूल से साथ ले भी जाय तो उसका स्वयं के लिये प्रयोग न करें या उसमें से प्रभु के लिये उपयोग में आवें जैसी वस्तु हो तो उसे उपयोग में ले लेवें । शेष वस्तुएं विसर्जित कर दें ।

2. उचित सामग्री साथ ले जांय :– परमात्मा की पूजा के लिये धूप, दीप, नैवेद्य, फल फूल, जल आदि साथ लेकर मंदिर में जाना चाहिए । उचित समग्री का अर्थ है– न्यायोपार्जित द्रव्य से प्राप्त प्रभू पूजा योग्य स्व समग्री ।

3. उत्तरासन :– जिनालय के द्वार में प्रवेश के पहले पुरूष उत्तरासन धारण कर शरीर को अलंकृत करें ।

4. अंजलिबद्ध प्रणाम :– मंदिर में प्रवेश करते ही सर्व प्रथम परम्पिता परमेश्वर का मुख देखें । प्रभु मुख देखते ही तुरंत दो हाथ जोड़कर कपाल से लगाकर, मस्तक थोड़ा झुकाकर नमो जिणाणं कहें।

5. प्रणिधान :– यानि अब आपको यह मन में संकल्प करना चाहिये कि मैं जिनालय में प्रवेश करने के बाद पुनः मंदिर से बाहर न निकलूं तब तक मन, वचन और काया से परमात्म भक्ति में ओत प्रोत रहूंगा।

जिनालय में उपयोगी सामग्री की सूचि :-

1. मोर पींछी 2. चामर 3 वालाकूंची 4. अंग पोछने के वस्त्र 5. चंदन कटोरी 6. प्लेट 7. थाली 8. आरती 9. मंगल दीवो 10. धूप दान 11. पंखी 12. दर्पण 13. समोशरण 14. भंडार 15. जल कलश 16. कलश 17. नंदी कलश 18. कुंभ 19. अष्टमंगल कुंभ 20. पाट्ला 21. अष्ट मंगलपाटला 22. वासक्षेप पेटी 23. फूलदानी 24. जलकुंडी 25. मुलायम झाडू 26. सूपडी 27. दीपक 28. स्टेंड वाले दीपक 29. नवकार वाली ।

जिन पूजा करते वक्त सात प्रकार की शुद्धि :-

यह सर्वमान्य सत्य है कि स्वच्छता व शुद्धता हर किसी को पसंद है । जिस स्थान का वातावरण शुद्ध व सुंदर हो वहाँ जाने पर स्वयं का मन भी शांत एवं दिमाग ताजा बन जाता है । तब हर काम करने में तन्मयता आती है, काम पूर्ण तथा परिणाम सुंदर होता है । फिर जिन पूजा तो प्रभु कृपा पाने का साधन है जो बिना शुद्धि पाले सफल हो ही नहीं सकती । ये सात शुद्धि कैसी हो इसका उल्लेख निम्न लिखित है :-

1. अंग शुद्धि :- छाना हुआ पानी बाल्टी में लेकर अंग शुद्धि यानि जयणा पूर्वक स्नान करना चाहिये ।

2. वस्त्र शुद्धि :- स्नान के पश्चात् सुगंधित धूप से वासित स्वच्छ धुले ,सुंदर एवं मूल्यवान वस्त्र धारण करने चाहिये । वस्त्र बिना सिले, बिना फटे हुए हों तथा मल, मूत्र निवृति के समय उपयोग में आये हुए न हों ।

3. भूमि शुद्धि :- जिस जिनालय में आप पूजा करने जाते हैं उस स्थान की शुद्धता का भी आपको ध्यान रखना चाहिये । वहाँ आप यह देखें कि मंदिर साफ, सुथरा, सुगंधित व आकर्षक कैसे हो।

4. मन शुद्धि :- मन के सारे मलीन विचार मंदिर में प्रवेश के पूर्व ही त्याग देने चाहिये ।

5. पूजा उपकरण शुद्धि :- अच्छे व शुद्ध साधनों से पूजा करने से ही मन अधिकाधिक प्रभु भक्ति में लीन बनता है।

6. द्रव्य शुद्धि :- प्रभु सेवा में न्याय से उपार्जित किया हुआ द्रव्य ही होना चाहिये । इसी से पुण्यानुबंधी पुण्य का उपार्जन किया जा सकता है ।

7. विधि शुद्धि :- जैसे प्रयोगशाला में अगर कोई प्रयोग उचित विधि से न किया जाय तो उचित परिणाम नहीं मिलता है, उसी तरह अगर जिन पूजा भी निर्धारित विधि से न की जाय तो उसके उद्देश्य पूर्ण नहीं होते यानि परिणाम शून्य या अपूर्ण रहता है ।

●●●●●●●●●●●

जिन मंदिर में प्रवेश के पश्चात् मंदिर से बाहर आने तक की विधि :-

1. परमात्मा का मुख, ध्वज या कलश देखते ही प्रथम 'नमो जिणाणं' कहना चाहिये ।
2. जिन मंदिर में प्रवेश करते ही प्रथम 'निसीही' बोलना चाहिये।
3. स्वयं को केशर युक्त चंदन का तिलक करना चाहिये ।
4. तत् पश्चात् आधा झुककर फिर प्रणाम करना चाहिये ।
5. अगले क्रम में तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिये ।
6. साथ साथ लयबद्ध प्रभु स्तुति का पाठ करना चाहिये ।
7. दूसरी निसीही बोलकर मूल गंभारे में प्रवेश करना चाहिये ।
8. प्रतिमाजी के ऊपर चढाया गया निर्माल्य व फूल हटाने चाहिये।
9. सूक्ष्म कचरा व जीव भी प्रतिमाजी के ऊपर से हट सके इसके लिये मोर पींछी करनी चाहिये ।
10. सर्व प्रथम जल कलश से प्रभुजी का प्रक्षालन करना चाहिये।
11. मुलायम वस्त्र से प्रतिमाजी पर चिपका केशर, चंदन व ब्रास हटाना चाहिये ।
12. अगर आवश्यकता हो तो जतणापूर्वक वालाकूंची (खसकूंची) का प्रयोग भी करना चाहिये तथा शुद्ध जल से चिकनाई दूर करना चाहिये।
13. प्रतिमाजी को पंचामृत से अभिषेक करना चाहिये ।
14. पबासन पर दो बार पाट लूंछना करना चाहिये ।
15. प्रभुजी को तीन बार अंग लूंछन करना चाहिये ।
16. अंग लूंछन के पश्चात् सर्व प्रथम सुगंधित द्रव्यो से विलेपन करना चाहिये।
17. इसी क्रम में केशर युक्त चंदन पूजा व पुष्प पूजा करनी चाहिये।
18. धूप–पूजा, दीप पूजा, अक्षत पूजा, नैवेद्य पूजा और फल पूजा भी करनी चाहिये ।
19. घंटनाद करना चाहिये ।
20. चामर नृत्य करना चाहिये। दर्पण में प्रभु मुख देखना चाहिये ।
21. अवस्थात्रिक भक्ति प्रारंभ करनी चाहिये ।

22. तीसरी निसीही बोलकर चैत्य वंदन प्रारंभ करना, चाहिये।
23. चैत्यवंदन करते वक्त प्रमार्जना त्रिक, दिशात्याग त्रिक, आलंबन त्रिक मुद्रा त्रिक एवं प्राणीधान त्रिक का पालन करना चाहिये।
24. पूजा उपकरण यथा स्थान रखने चाहिये।
25. प्रभु गुणगान करते हुए वहाँ से विदा होना चाहिये।
26. प्रभु को पीठ न पडे इस तरह बाहर निकलना चाहिये।

नोट :– प्रभुजी का पक्षालन करने से पूर्व मात्र वासक्षेप पूजा, अग्र पूजा व भाव पूजा ही होती है, यह ध्यान रखें।

नोट :– नवांगी पूजा करते वक्त कुल तेरह तिलक के लिये अपनी अनामिका को तेरह बार चंदन की कटोरी में डुबाना चाहिये। पूजा केशर मिश्रित चंदन से की जाती है। अकेले केशर से नहीं। पूजा के पश्चात् यह देखें कि नाखून में चंदन या केशर न लगा हो।

प्रभू की नवांगी पूजा करते वक्त मन में निम्न भाव होने चाहिये :–

1. अंगुष्ट पूजा :– श्री जिनेश्वर प्रभू की नौ अंगी पूजा की श्रृंखला में प्रथम प्रभू के दाहिने अंगूठे की पूजा की जाती है । तत् पश्चात् बायें अंगूठे की पूजा होती है। जिससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम भी प्रभू की तरह बल प्राप्ति होने पर हम भी क्षमावान बने रहे। यह पूजा प्रभू के प्रति विनय का प्रतीक है।

2. घुटना पूजा :– प्रभू के घुटनों पर तिलक करते वक्त यह भावना होनी चाहिये कि प्रभू की तरह हम भी हर संकट में अडिग रहें ।

3. हाथ पर :– प्रभू के हाथों को तिलक करते वक्त हमें यह भावना करनी चाहिये कि हम भी लक्ष्मी के प्रति अपनी मूर्छा त्यागें तथा शक्ति अनुसार दान पुण्य कर सकें ।

4. कंधे पर :– कंधों पर तिलक करते वक्त हमारे मन में यह चिंतन रहे कि जिस तरह प्रभू ने अपनी आत्म–शक्ति के बल पर संसार सागर पार करने में सफलता प्राप्त की वैसी ही शक्ति हमें भी प्राप्त हो।

5. शिखा पर :– शिखा पर तिलक करते वक्त हमारे मन में यह भावना होनी चाहिये कि हे प्रभू जिस तरह आप स्फटिक सी निर्मल सिद्ध–शिला पर बिराजमान हैं वैसे ही हमें भी ऐसी सिद्ध शिला पर वास मिले ।

6. कपाल पर :– कपाल पर तिलक करते वक्त प्रभूजी से हमें यह अर्ज करनी चाहिये कि हे प्रभू! जैसे आप अपने बल पर तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर त्रिभुवन के तिलक रूप बने, ऐसा ही हमें भी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो ।

7. कंठ पर :– जिस तरह जिनेश्वर प्रभू जगत के सर्व जीवों के आत्म हितार्थ अपने मधुर कंठ से देशना देंते थे तथा उस देशना की मधुर वाणी को देव, पशु, मानव सहित अन्य सभी प्राणियों ने अपनी अपनी भाषा में सुनी थी, साथ ही अपनी अपनी शंकाओं का समाधान भी पाया था, वैसी शक्ति हमें भी प्राप्त हो।

8. हृदय पर :– हे प्रभू ! आपने अपने हृदय कमल के उपशम के बल पर अपने रागद्वेष को जला दिया है । जैसे हिम वन खंडों को जला देता है वैसी ही शक्ति हमारे हृदय में भी हमें विकसाना है। जिससे हम भी अपने रागद्वेष जलाने में सफल हो सकें ।

9. नाभि पर :– हे प्रभू ! आपकी नाभि के आठों प्रदेश कर्म रहित हैं ,यानि आपकी नाभि की पूजा द्वारा हम भी हमारे सभी प्रदेश कर्म–बंधन रहित बनाने में सफलता पावें ।

- पैसा सामग्री देगा, सुरक्षा नहीं
  पुण्य सुरक्षा देगा, सद्गति की गारंटी नहीं,
  परमात्मा सब कुछ देते हैं–सामग्री सुरक्षा व सद्गति
- सम्यक्त्व का प्रतीक तिलक है ।
  देशविरक्ति का प्रतीक चरवला है ।
  सर्व विरक्ति का प्रतीक रजोहरण है ।
- जिन शासन की सेवा का एक ही फल मांगता हूँ कि
  इस लोकोत्तर शासन की सेवा मुझे हर जन्म में प्राप्त हो।

जिनालय में पालनार्थ दस त्रिक :-

1. निसीहि त्रिक 2. प्रदक्षिणा त्रिक 3. प्रणाम त्रिक 4. पूजा त्रिक 5. अवस्था त्रिक 6. प्रमार्जना त्रिक 7. दिशात्याग त्रिक 8. आलंबन त्रिक 9. मुद्रा त्रिक 10. प्राणीधान त्रिक

1. निसीहि त्रिक :– श्री जिनेश्वर भगवान के मंदिर के मुख्य दरवाजे में प्रवेश करते ही तीन निसीहि बोली जाती है ।

अ. प्रथम निसीहि :– अब आप घर संबंधी विचारों का, संसार संबंधी विचारों का मन, वचन व काया से त्याग करते हैं। यह प्रथम निसीहि हैं । इसमें मंदिर संबंधी कार्य व आशातना मिटाने के लिये व्यवस्था करने की छूट रहती है ।

आ. द्वितीय निसीहि :– प्रभूजी की तीन प्रदक्षिणा देने के बाद और मंदिर संबंधी व्यवस्था का उचित निरीक्षण करके, अष्ट प्रकारी पूजा के लिये मूल गंभारे में प्रवेश करने से पूर्व दूसरी निसीहि बोली जाती हैं।

इ. तीसरी निसीहि :– भगवान की प्रदक्षिणा व द्रव्य पूजा से निवृति लेने हेतु तीसरी निसीहि कही जाती है ।

2. प्रदक्षिणा त्रिक :– प्रभूजी की दाहिनी तरफ से ज्ञान, दर्शन,चारित्र इन तीन रत्नत्रयी की प्राप्ति के हेतु से तीन प्रदक्षिणा दी जाती हैं । प्रदक्षिणा देते समय चार गति रूप संसार का भ्रमण तोडने के लिये, प्रभू से प्रार्थना रूप स्तुति पाठ करना चाहिये। इसी के साथ साथ मंदिर संबंधी व्यवस्था का सूक्ष्म निरीक्षण भी करें। खास यह देखें कि मंदिर जी में कोई आशातना तो नहीं हो रही है । इस तरह अपनी दृष्टि नीचे रखते हुए तीन प्रदक्षिणा पूरी करनी चाहिये ।

3. प्रणाम त्रिक :– 1. अंजलीबद्ध प्रणाम 2. अर्धावनत प्रणाम3. पंचांग प्रणिपात प्रणाम ।

अ. अंजलिबद्ध प्रणाम :– प्रभू दर्शन होते ही सम्मानपूर्वक अपना सर झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करना अंजलिबद्ध प्रणाम हैं।

आ. अर्धावनत प्रणाम :– प्रभूजी की तीन प्रदक्षिणा पूर्ण

करने के बाद आधा शरीर झुकाकर दोनों हाथ जोडकर नमो जिणाणं कहना, यह अर्धावनत प्रणाम है। इसके बाद ही प्रभूजी की अष्टप्रकारी पूजा की जाती है।

इ. पंचांग प्रणिपात प्रणाम :— प्रभूजी की अष्टप्रकारी पूजा कर लेने के बाद चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति करने से पहले तीसरी निसीहि बोलकर अपने खेस से तीन बार भूमि प्रमार्जना करते हुए दोनों हाथ घुटने और सिर ये पांच अंग जमीन से स्पर्श कराते हुए खमासमणा देना पंचांग प्रणिपात प्रणाम कहलाता है।

4. पूजा त्रिक :— इसके तीन प्रकार हैं प्रथम 1. अंगपूजा 2. अग्रपूजा 3. भाव पूजा ।

द्वितीय में 1. प्रातः समय 2. दुपहर के समय 3. शाम के समय।

क. अंगपूजा :— प्रभूजी को स्पर्श करके की जाने वाली पूजा जैसे जल, चंदन, पुष्प, जो प्रतिमाजी के ऊपर लगाया जाता है वह अंग पूजा है ।

ख. अग्र पूजा :— धूप, दीपक, अक्षत, फल व नैवेद्य आदि से प्रभूजी की जो पूजा की जाती है, वह अग्रपूजा कहलाती है।

ग. भाव पूजा :— प्रभूजी के आगे चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति आदि करना यह भाव पूजा है ।

नोट :— जैन धर्म में भाव विहीन किसी भी धर्म क्रिया को मृतप्राय एवं परिणाम शून्य माना गया है। भक्ति भाव की उत्कृष्टता से ही फलती है। उत्तरोत्तर उत्तम भाव से प्रभू भक्ति करने वाला मात्र अन्तर्मुहूर्त में स्व आत्म कल्याण करने में सफल हो सकता है। यानि वह जैन से जिनेश्वर बन सकता है।

द्वितीय पूजा त्रिक :—

क. प्रातः :— अपनी अंग शुद्धि (हाथ पाँव धोकर) करके शुद्ध वस्त्र पहनकर धूप पूजा,दीप पूजा व अक्षत पूजा मात्र की जाती है। अगर भगवान की प्रतिमा का पक्षाल हो गया हो तो भगवान को बिना छुए फूल पूजा भी होती है।

ख. दोपहर के समय :— अष्ट प्रकारी पूजा व स्नात्र पूजा महोत्सव दुपहर के समय होता है ।

ग. सायंकाल :– शाम को आरती,मंगल दीप , द्रीप पूजा व धूप पूजा की जाती है।

5. अवस्था त्रिक :– इसके तीन भेद निम्न हैं ।

1. पिंडस्थ अवस्था 2. पदस्थ् अवस्था 3. रूपातीत अवस्था।

1. पिंडस्थ अवस्था :– पिंडस्थ अवस्था के भी तीन भेद हैं जो निम्न हैं :–

अ. जन्म अवस्था :– प्रभूजी का स्नात्र महोत्सव करते समय व पक्षाल करते समय हमारा यह चिंतन होना चाहिये कि हे नाथ ! आपका जन्म होते ही छप्पन दिगकुमारियों के सिंहासन चलायमान होते हैं। तब वे देवलोक से आकर शुचिकर्म करते हुए जन्म महोत्सव करती हैं। तत्पश्चात् सभी चौसठ इन्द्र आपको मेरू शिखर पर ले जाते हैं। वहाँ इन्द्र स्वयं का अभिमान त्यागकर ऋषभ (बैल) रूप धारण करते हैं तथा एक करोड साठ लाख रत्नजडित बडे बडे कलशों से 250 अभिषेक करते हैं तो भी आपको जरा भी अभिमान नहीं हुआ। धन्य है आपकी लघुता ।

आ. राज्य अवस्था :– हे नाथ ! आपको इतनी बडी राज्य संपति और सत्ता मिलने पर भी आपको अंश मात्र राग नहीं हुआ, कमल की तरह निर्लिप्त रहे । धन्य है आपके वैराग्य को ।

इ. श्रमण अवस्था :– धन्य है आपको, हे प्रभो ! आपने संपति व सत्ता को एकदम त्याग करके कठोर तप, घोर परिषह, उपसर्ग आदि सहन करने के लिये चारित्र ग्रहण किया ।

2. पदस्थ अवस्था :– हे प्रभू ! आप तो अवधिज्ञान से जानते ही थे कि मुझे केवल ज्ञान प्राप्त होगा और मोक्ष में जाऊँगा, तो भी आपने चारित्र लेकर घोर तपस्या की । घोर उपसर्ग सहे। समतापूर्वक सहन करके चार घाती कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त किया। तब देवताओं ने आकर समोवसरण बनाया और अष्ट प्रतिहार्य (1. अशोक वृक्ष 2. पुष्प वृष्टि 3. तीन छत्र 4. भा–मंडल 5. चामर 6. देव दुंदुभि 7. दिव्य ध्वनि 8.सिंहासन) से उसे सुशोभित किया । तब आपने समोवशरण में आकर के भव्य जीवों को बोध देने के लिये अमृत से भरी वाणी की वर्षा करके चतुर्विध संघ की स्थापना की। आपके अतिशय और

वाणी के प्रभाव से अनेक पापी आत्माएं संसार समुद्र से तिर गये। पशु पक्षी भी अपना आपसी वैर भाव छोडकर आपकी वाणी सुनने के लिये आते हैं । हर प्राणी अपनी अपनी भाषा में प्रभू की देशना सुनते हैं और अपनी अपनी शंकाओं का समाधान भी पाते हैं।

3. रूपातीत अवस्था :— आपके केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद भव्य जीवों के उपकार के लिये देशना देकर बाकी के अघाती कर्मों का नाश करके आपने सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर लिया । अब आप निराकार अशरीरी, अनंतज्ञानी, अनन्त सुखी, जन्म, मरण, रोग, शोक, दरिद्रता आदि से रहित हो गये हैं। अब आप कृतकृत्य हो गये हैं । अब आपको कुछ भी करना शेष नहीं । हमें भी ऊपर मुजब पींडस्थादि अवस्थाओं का चिंतन करके प्रभु गुणों को प्राप्त करना हैं । यानि प्रभू जैसी अवस्थाएं हमें भी प्राप्त करना है ।

6. दिशात्याग त्रिक :— प्रभूजी के आगे चैत्यवंदन स्तवन स्तुति करते समय मन, वचन, काया की एकाग्रता रखने के लिये आस पास ऊपर या पीछे तीन दिशाओं का त्याग करना यानि अन्य तीन दिशाओं में नहीं देखना । तथा प्रभू भक्ति में ही मन लगाना।

7. प्रमार्जना त्रिक :— चैत्यवंदन करने के पहले तीन बार अपने खेस से भूमि को साफ करना प्रमार्जना त्रिक कहलाता हैं।

8. आलंबन त्रिक :— अ. वर्णालंबन आ. अर्थालंबन इ. प्रतिमा आलंबन

<u>अ. वर्णालंबन</u> :— वचनों द्वारा सूत्रों को शुद्ध और सही रूप से बोलना।

<u>आ. अर्थालंबन</u> :— मन द्वारा सूत्रों के अर्थ का चिंतन करना . जिससे प्रभू भक्ति में एकाग्रता आती हैं ।

<u>इ. प्रतिमा आलंबन</u> :— प्रभू की प्रतिमा को साक्षात जिनेश्वर भगवान मानना ।

9. मुद्रा त्रिक:— अ. योग मुद्रा आ. जिन मुद्रा इ. मुक्ता सुक्ति मुद्रा।

<u>अ. योग मुद्रा</u> :— चैत्यवंदन करते समय नमुत्थुणं आदि

सूत्र बोलते समय दोनों हाथ जोड़कर, अंगुलियों को आपस में मिलाकर हाथ की कोहनी को नाभि के स्थान पर रखकर दोनों पैर के घुटने जमीन पर रखना या बांया घुटना खडा रखना यह योग मुद्रा है ।

आ. जिन मुद्रा :– काऊसग्ग करते समय पैर के आगे के भाग में चार अंगुल और पीछे के भाग में चार अंगुल से कुछ कम अन्तर रखना । दोनों हाथ लटकते हुए रखना तथा अपनी दृष्टि जिन प्रतिमाजी की तरफ या स्वयं की नाक पर रखना यह जिन मुद्रा हैं ।

इ. मुक्ता शुक्ति मुद्रा :– जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू व और जय वीयराय सूत्र (आभवम्खंडा तक) बोलते समय दोनों हाथ ललाट पर रखना । दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में मिलाना और हाथ के अंदर का भाग मोती के सीप की तरह पोला रखना । यह मुक्ता सुक्ति मुद्रा हैं ।

10. प्रणिधान त्रिक :– मंदिर जी में जिन भक्ति करते समय मन वचन और काया की एकाग्रता रखना प्रणिधान त्रिक कहलाता हैं ।

✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧✧

सुखी घर के लिये आवश्यक तथ्य

शरीर :– निरोगी एवं सशक्त।
भ्रमण प्रवास :– तीर्थ यात्रा के सिवाय नहीं।
पुत्र – पुत्री :– विनयी एवं आज्ञाकारी।
प्रतिष्ठा :– समाज एंवं धर्म गुरूओं के बीच।
विचार :– पवित्र एवं पाप भीरू।
आर्थिक स्थिति :– कर्ज मुक्त, सुकृत में खर्च के योग्य एवं परिवार पालनार्थ पर्याप्त।
धर्मपत्नी :– सुशील एवं सुपात्र।
परिवार :– विपुल मैत्री भाव संपन्न।
आंख :– ब्रह्मचर्य के तेज से ओतप्रोत।

जिन मंदिर के विषय में विशेष सावधानियां :-

1. जीव जंतुओं की यतना के लिये मंदिरजी व उपाश्रय में मुलायम झाडू होना चाहिये ।

2. रोशनी हेतु मंदिर जी में घी के दीपक का ही विधान है।

3. तीर्थंकर परमात्मा का जन्मदिन जन्म कल्याणक कहा जाता है।

4. मंदिरजी व उपाश्रय में खडे रहकर संसार संबंधी बात नहीं करनी चाहिये ।

5. पूजा के कपड़े पहनकर दूसरा कार्य सामायिक प्रतिक्रमण करना गलत है । साथ ही इन कपड़ों में चाय पान व भोजन करना भी निषेध हैं। पूजा का समय मुख्यतया मध्यान्ह है फिर भी आजीविका उपार्जन संबंधी कारणों से अनुकूलता न हो तो भी कम से कम सूर्योदय के बाद पूजा करनी चाहिये।

6. मंदिर व उपाश्रय अति भव्य व आकर्षक होने चाहिये, जिससे आराधकों को उनकी धर्म क्रिया करने में आनंद आये ।

7. जिन प्रतिमाओं की पूजा के बाद ही देवी देवताओं की पूजा करनी चाहिये । क्योंकि समकित दृष्टि देवी देवता तो अपने साधर्मिक भाई बहन हैं। इस नाते उनके कपाल पर स–सम्मान अपने अंगूठे से तिलक करना चाहिये ।

8. स्व–द्रव्य से ही पूजा करनी चाहिये । स्वद्रव्य से सामग्री लाने की शक्ति न हो तो मंदिर में पूजा करने वालों को केशर घीस कर देना चाहिये तथा उससे पुण्य कमाना चाहिये ।

9. पूजा करते समय सिर्फ अपनी अनामिका अंगूली मात्र से ही प्रभू को छूना चाहिये । दूसरे अंग व कपड़ों का प्रभूजी को स्पर्श न हो, यह देखें। साथ ही प्रभूजी की हथेली पर तिलक नहीं होता, यह भी ध्यान रखें । प्रभूजी के हाथों में सोने या चांदी का श्रीफल मात्र रक्खा जाता है या बिजोरा फूल भी रक्खा जा सकता है ।

10. आरती व मंगलदीप उतारते वख्त यह ध्यान रखना चाहिये कि अपनीं नाभी से नीचे व नाक से ऊपर आरती नहीं जानी चाहिये। आरती उतारने के पश्चात् उसे उचित जगह पर रख कर छेद वाले ढक्कन से ढक देना चाहिये इससे जीवों की विराधना

के पाप से बचा जा सकता है। मंदिर में संभवतया शुद्ध घी का ही उपयोग होना चाहिये।

11. मंदिरजी में स्तवन पाठ धीरे धीरे करना चाहिये ताकि औरों की भक्ति में अंतराय न पड़े ।

12. नवांगी पूजा करते वक्त दोहे बोलने चाहिये न आवे तो नवकार बोलें, पर मन में या धीमी आवाज में बोलें।

13. धार्मिक स्थान यानि मंदिर या उपाश्रय में मात्र धर्म क्रिया ही करनी चाहिये। लोभ में आकर आपके उद्देश्य से विवाह भोज अथवा अन्य सांसारिक कार्य के लिये इन्हें किराये पर नहीं देना चाहिये। बारात को वहाँ ठहराना नहीं चाहिये। फिल्मी शो, वीडियो शो आदि नहीं होने चाहिये । यानि राग उत्पन्न करने वाले कोई भौतिक कार्य धर्म स्थानों में नहीं होने चाहिये ।

14. प्रभू भक्ति निमित्त बोली गई रकम उत्साह से उसी दिन पेढी में जमा करा देनी चाहिये, नहीं तो दोष लगता है। मंदिर के व्यवस्थापकों को भी ऐसी रकम तुरंत काम में लानी चाहिये। अपने यहाँ जरूरत न हो तो और जगह भेज देनी चाहिये ।

15. अंतराय वाली बहन तीन दिन तक प्रभू का दर्शन नहीं कर सकती एवं अंतराय से सात दिन पूजा नहीं कर सकती हैं।

16. पूजा की सामग्री शुद्ध सात्विक एवं मूल्यवान होनी चाहिये। जैसे अखंड चावल, बादाम, मीश्री, फल, नैवेद्य, केशर, बरास, धूप आदि। प्रभूजी एवं गुरूजी के आगे कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिये । चूंकि ये सब भाव पूजा हैं, अतः प्रभू भक्ति में उत्तम भाव जगाने हेतु, उत्तम पूजा सामग्री का ही उपयोग करना चाहिये। क्योंकि पूजा में आपका जैसा उत्तम भाव होगा, वैसा सुंदर उसका परिणाम होगा । जैसे मंदिर जी के लिये मात्र चावल साफ करने में भी कर्म की निर्जरा है । निष्काम भाव से परम पुरूषों की पूजा करने से अनन्त गुणा लाभ मिलता है। अतः स्व आत्म कल्याणार्थ प्रभू पूजा करनी चाहिये न कि भौतिक लाभ के लिये ।

17. दर्शन पूजा के लिये घर से निकलते वक्त रास्ते में मिलने वाले दीन–दुखियों को अपनी शक्ति अनुसार दान अवश्य देना चाहिये।

18. पूजा के लिये स्नान के पश्चात् ऊनी कमली पहनना चाहिये।

किसी स्वच्छ रूमाल से शरीर को साफ करना चाहिये। भूल से भी गंदा टॉवेल न लें, उसे पूजा के कपड़ों से अलग ही रखे।

19. अच्छे शुद्ध कपड़े पहनकर पूजा के लिये मंदिर में जाना तथा वहाँ सूखी जमीन पर पाँव धोना। मंदिर में प्रवेश करने के बाद मंदिर में (आवश्यक हो तो) सफाई करना, तथा पूजा सामग्री स्व हाथों से तैयार करना।

20. देवों के राजा इन्द्र भी अपनी सत्ता एवं पद का गर्व भुलाकर पशु रूप यानि बैल रूप धारण करके प्रभू का अभिषेक करने को तत्पर रहते हैं, उसी तरह हमें भी विनीत भाव से प्रभू भक्ति करनी चाहिये।

21. पूजा करने के लिये अपने खेस के एक भाग के आठ पट बनाना तथा उसे अपने मुँह और नाक पर इस तरह बांधे कि जिससे स्वयं को मूर्छा भी न आये और अपने मुँह और नाक से निकलती हुई दुर्गंध से प्रभू की आशातना भी न हो।

22. स्वच्छ कलश में स्वच्छ कुएं का मीठा जल लेकर सावधानी से केशर घिसने का पत्थर पहले साफ करें । तत् पश्चात् उसपर केशर चंदन घिसें । फिर थोडा केशर अलग निकाल कर बादाम के आकार का स्वयं को तिलक करें । केशर हमेशा चंदन व बरास युक्त हो ।

23. मंदिरजी में घंटनाद निम्न अवसरों पर करना चाहिये।

1. मंदिर में प्रवेश करने के तुरंत बाद 2.स्नात्र पूजा पढाते समय या अन्य कोई विशेष पूजा के समय (आवश्यक हो तो) 3. आरती व मंगलदीप करते समय 4.मंदिर से बाहर आते समय।

24. द्रव्य पूजा करने के बाद भाव पूजा यानि चैत्यवंदन, स्तवन स्तुति आदि उल्लास से करने चाहिये । सभी प्रकार की पूजा की समाप्ति के बाद शक्ति अनुसार पच्चक्खान लेना । फिर मंदिर से बाहर निकलते समय भगवान को पीठ न पडे उसका ध्यान रखना चाहिये। घर जाते समय नीचे दृष्टि रखनी चाहिये । घर जाकर कपड़े बदलकर यह देखें कि भोजन का समय है और भोजन तैयार है, तो साधु साध्वी, अतिथि, श्रावक, श्राविका आदि को भोजन के लिये आमन्त्रण देना। तथा उसके बाद में भोजन करना । भोजन के समय झूठा नहीं छोड़ना चाहिये। थाली धोकर पानी पीना। बर्तन में

अन्य जीव पैदा न हो इसके लिये उन्हें 48 मिनिट के भीतर धो डालना चाहिये। पीने के पानी में भी झूठा बर्तन नहीं डालना चाहिये।

नोट :– चावल का ही स्वस्तिक बनाने का आशय यह है कि जिस तरह चावल बोने से पुनः नहीं उगता, उसी तरह हमें भी पुनः जन्म न लेना पड़े ।

कुछ जिज्ञासाएं एवं उनका समाधान

प्रश्न :– श्री मंदिरजी में स्वस्तिक एवं इसके ऊपर तीन ढेरी उस पर चंद्राकृति एवं चंद्राकृति पर एक लाईन बनाने के पीछे क्या आशय हैं?

उत्तर :– साथीयां देव, मनुष्य, तिर्यच और नरक इन चार गतिओं का प्रतीक हैं । अक्षत की तीन ढेरी ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी तीन रत्नों की प्राप्ति करके उसकी साधना द्वारा चार गतिओं का नाश करने का प्रतीक है। और अंत में हमें सिद्ध–शिला में जाना है, इस इच्छा का प्रतीक वह चंद्र हैं । चंद्र से ऊपर की अंतिम अक्षत की लाईन सिद्ध की है । जो हमें यह याद दिलाती है कि हमें भी सिद्ध बनना हैं ।

प्रश्न :– प्रभूजी को पक्षाल क्यों किया जाता हैं ?

उत्तर :– प्रभूजी को स्नान की आवश्यकता नहीं हैं । परन्तु प्रभूजी को पक्षाल करने से अपनी आत्मा पर लगे हुए कर्म रूपी मैंल साफ हो जाते हैं इस तरह भावपूर्वक पक्षाल करने से हमारी आत्मा निर्मल बन जाती है ।

प्रश्न :– जिन मंदिर में प्रवेश करते समय निसीहि क्यों बोली जाती है?

उत्तर :– देहरासर में प्रवेश करते समय तीन निसीहि बोलने की प्रथा है, जिसका अर्थ है, संसार के पाप व्यवहार का मंदिर में प्रवेश से पूर्व त्याग करना चाहिये। यानि मंदिर में प्रवेश के पश्चात् किसी तरह का सांसारिक व्यवहार नहीं करना चाहिये ।

प्रश्न :– राह चलते बीच में जिनालय आने पर नमो जिणाणं नहीं कहने पर क्या प्रायश्चित आता है?

उत्तर :– छठ तप यानि दो उपवास का प्रायश्चित ।

जिन दर्शन एवं पूजा संबंधी प्रश्नोतर

प्रश्न :– अष्ट मंगल के नाम क्या हैं ?

उत्तर :– 1. दर्पण 2. भद्रासन 3. वर्धमान 4. श्री वत्स 5. मीनयुगल 6. कलश 7. स्वस्तिक 8. नंदावर्त ।

प्रश्न :– जिनेश्वर भगवान के आगे कैसे स्तवन या स्तुति बोले जाने चाहिये ?

उत्तर :– जो स्तवन पूर्वाचार्यों द्वारा रचे गये हों, और जिसमें प्रभू कल्याणकों का या प्रभू गुणों का वर्णन हो या जिसमें स्वयं के दर्दों की दास्तान या स्व दुर्गुणों का विवेचन हों ऐसे स्तवन बोलने चाहिये ।

प्रश्न :– फूल पूजा किस प्रयोजन से की जाती है ?

उत्तर :– प्रभू के अंग पर चढने से फूल को जैसे भव्यत्व मिलता है, उसी प्रकार फूल पूजा करने वालों को भी सम्यक्त्व प्राप्त हो फूल पूजा का यही आशय है ।

प्रश्न :– धूप पूजा क्यों करते हैं ?

उत्तर :– धूप से सुवासित धाराएं जैसे ऊपर जाती हैं इसी तरह धूप पूजा करने वाले भी हमेशा उर्ध्वगामी बनें, इस भावना से धूप पूजा की जाती हैं। साथ ही मिथ्यात्व की दुर्गंध दूर करने का भाव भी इसमें समाहित है।

प्रश्न :– दीप पूजा क्यों करते हैं?

उत्तर :– भव्य दीप का प्रकाश करते हुए भक्त के मन में यह भावना होती है कि इस दीप की तरह हमारे हृदय में केवलज्ञान की ज्योत प्रज्वलित है ।

प्रश्न :– स्नात्र पूजा किसे कहते हैं? इससे क्या लाभ है? तथा इसकी रचना किसने की ?

उत्तर :– जिस पूजा में प्रभू के जन्माभिषेक का वर्णन आता है, इससे मोहनीय कर्म का नाश होता है तथा विकार भाव क्षीण होते हैं। स्नात्र पूजा के रचनाकार श्री वीरविजयजी महाराज हैं।

****

भजो नवकार हो जाओ भव पार

प्रश्न :– नवकार के विषय में शास्त्र क्या कहते हैं ?

उत्तर :– नवकार के विषय में शास्त्र निम्न बातें कहते हैं :–

1. भावनापूर्वक नवकार मंत्र गिनने से चोर, जंगली, प्राणी, साँप, अग्नि,राक्षस राजा आदि का भय नाश होता है। (महानिशीथ सूत्र)

2. बच्चे को जन्म के समय नमस्कार महामंत्र सुनाने से मनुष्य का जीवन दुख रहित बनता है । मृत्यु के समय नवकार मंत्र सुनाने से आत्मा की सद्गति होती हैं। जैसे नवकार के प्रभाव से समली का जीव राजपुत्री व चोर का जीव यक्ष बना। (उपदेश प्रसाद)

3. नवकार मंत्र के जाप का फल करोड़ स्तोत्र के समान है और स्तोत्र करोड़ पूजा समान है । एक करोड पूजा एक जाप के समान है, करोड़ जाप एक ध्यान के समान है । एक करोड़ ध्यान एक लय के समान हैं।(लय का अर्थ है चित की एकाग्रता) (उपदेश प्रसाद)

4. नवकार मंत्र के एक अक्षर का जाप सात सागरोपम का पाप नष्ट करता है ।

5. नवकार मंत्र के एक पद का जाप पचास सागरोपम का पाप नष्ट करता है ।

6. संपूर्ण नवकार मंत्र गिनने से पाँच सौ सागरोपम का पाप नष्ट होता है ।

7. विधि पूर्वक एक लाख नवकार के जाप के साथ प्रभू पूजा करने से तीर्थंकर नाम कर्म का बंध होता है ।

8. 80808808 नवकार मंत्र गिनने वाला मनुष्य तीसरे भव में मोक्ष जाता है । (नमस्कार चिंतामणी)

प्रश्न :– कैसे नवकार गिनने से क्या लाभ है ?

उत्तर :– 1. कमल बंध से 108 नवकार का जाप करने वाले को बिना उपवास किये भी उपवास का फल प्राप्त होता है।

2. अरिहंत सिद्ध ये छ अक्षर 400 बार जपने से एक उपवास का लाभ मिलता हैं । मात्र 'अ' अक्षर निरंतर जपने से भी उपवास का फल प्राप्त होता हैं ।

3. अरिहंत–सिद्ध–आचार्य, उपाध्याय–साहू ये 16 अक्षर का 200 बार जाप करने से एक उपवास का लाभ मिलता है।
4. जो अंगूठे के ऊपर माला रखकर तर्जनी अंगुली से माला गिनता है वो मुक्ति सुख पाता हैं ।
5. मध्यमा से माला गिनने वाला द्रव्यादिक प्राप्त करता हैं।
6. अनामिका से माला गिनने वाला ग्रह शांति प्राप्त करता है।
7. कनिष्ठा से माला गिनने वाले के शत्रु मित्र बन जाते हैं। (धर्म संग्रह)

प्रश्न :– माला किस तरह गिननी चाहिये?

उत्तर :– माला को दाहिने हाथ के अंगूठे पर रखकर, हाथ की दूसरी अंगूली से गिन सकते हैं । माला कभी नाक के ऊपर नहीं जानी चाहिये व नाभि के नीचे नहीं होनी चाहिये। मेरू का उल्लंघन नहीं होना चाहिये तथा माला के मणके को नाखून नहीं लगने चाहिये । (धर्म संग्रह)

प्रश्न :– नवकार माला में 108 मणके ही क्यों हैं ?

उत्तर :– नवकार माला के 108 मणकों का संबंध पंच परमेष्ठि के कुल 108 गुणों से है । वे निम्नलिखित हैं : अरिहंत के 12 गुण + सिद्धप्रभु के 8 गुण + आचार्य के 36 गुण + उपाध्याय के 25 गुण + साधु के 27 गुण यानि 12+8+36+25+27 –108 गुण ।

प्रश्न :– नवकार मंत्र का आगमिक नाम क्या है ?

उत्तर :– पंच–मंगल महाश्रुत स्कंध सूत्रों में अन्तर्निहित होने से यह भगवती सूत्र भी कहलाता है ।

सूचना:– सुबह उठते ही आठ अंगुली के 24 विभागों की कल्पना करके 24 तीर्थंकरों का नाम याद करना तथा दो हथेली इक्कठी करके सिद्ध शिला के आकार को नमस्कार करना चाहिये। (हित शिक्षा का रास)

"सब शास्त्रों का सार नवकार है , क्योंकि वह शाश्वत आत्मा का परम विशुद्ध स्वरूप ही है ।

इन्हें भी पहचानें

प्रश्न :– साधर्मिक किसे कहते हैं? तथा उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?

उत्तर :–स्वधर्म को मानने वाले साधर्मिक कहलाते हैं । स्वयं के समकक्ष साधर्मिक का उचित सम्मान तथा स्वयं से श्रेष्ठ साधर्मिक का आदर करना चाहिये तथा स्वयं से कमजोर हो वैसे साधर्मिक को अपने घर में बुलाकर उनकी उचित भक्ति पूर्वक सहायता करनी चाहिये, जिससे उनकी हालत सुधरे तथा वे धर्म पथ पर आगे बढें।

प्रश्न :– उपधान किसे कहते हैं?

उत्तर :– जैन शासन में विधिपूर्वक किसी भी सूत्र को ग्रहण करने का विशेष महत्व है । उपधान तप में तप के साथ विधिपूर्वक अपने गुरू भगवंतों से सूत्र ग्रहण किये जाते हैं।

प्रश्न :– जैन पाठशाला किसे कहते हैं ?

उत्तर :– ऐसी पाठशाला जिसमें उत्तम संस्कारों का बीजारोपण एवं सिंचन हो, जहाँ जैन धर्म के रहस्यों को समझाया जाय एवं सम्यगज्ञान का पाठ पढाया जाय, ऐसी संस्था को जैन पाठशाला कहते हैं ।

प्रश्न :– जिन पूजा का वर्णन किन किन आगमों में आता है?

उत्तर :– जिन पूजा का वर्णन रायपसेनी सूत्र, जिवाभिगम सूत्र व भगवती सूत्र आदि में आता है ।

प्रश्न :– आप जिनागम के बारे में क्या जानते हैं ?

उत्तर :– जिनेश्वर भगवान द्वारा लोक कल्याणार्थ दिये गये उपदेशों का संपूर्ण संग्रह जिनागम है ।

प्रश्न :– उद्यापन क्या है? इसका क्या लाभ हैं ?

उत्तर :– जिस समारोह में ज्ञान, दर्शन, चारित्र के उपकरण रखे जाते हैं उसे उद्यापन कहते हैं । इसके आयोजन से ज्ञान,दर्शन व चारित्र की अपूर्व भक्ति का लाभ मिलता हैं तथा इससे अपना समकित निर्मल बनता है ।

प्रश्न :– मौन एकादशी का क्या महत्व है ?

उत्तर :– यह जैन धर्म का महान् पुनीत पर्व है । इस दिन भगवान मल्लीनाथ अरनाथ एवं नमिनाथ भगवान के कल्याणक हुए। साथ ही यह विभिन्न 150 पूर्वागामी तीर्थंकरों का भी कल्याणक दिन है। इस दिन 150 नवकार वाली गिनने का विधान है। इस दिन किये गये उपवास का 150 उपवास के बराबर फल मिलता है ऐसा शास्त्रों में उल्लेख हैं ।

प्रश्न :– ज्ञान पंचमी की आराधना क्यों की जाती है ?

उत्तर :– यह भी हम जैनों का पुनीत पर्व है । इस दिन ज्ञान प्राप्ति एवं ज्ञान वृद्धि की कामना से ज्ञान के पांचों स्वरूपों की विधिवत आराधना की जाती है। पांच वर्ष व पांच मास तक प्रत्येक शुक्ला पंचमी को उपवास करने से ज्ञान पंचमी की आराधना का लाभ मिलता है।

प्रश्न :– दीपावली पर्व का जैन धर्म में क्या महत्व है ?

उत्तर :– यह दिन हमारे आसन्न उपकारी वीर प्रभू का निर्वाण कल्याणक है तथा इसके अगले दिन महावीर प्रभू के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस दिन छट्ठ या अट्ठम तप करने से कोटि कोटि गुणा फल की प्राप्ति होती हैं ।

विशेष :– वीर प्रभू हमारे अत्यंत उपकारी हैं, अभी उन्हीं का शासन चल रहा है । अतः प्रभू के पांचों कल्याणकों के दिनों में उपवास छट्ठ, अट्ठम का तप करने से अधिकाधिक पुण्य लाभ होता है ।

<u>सुखी जीवन के लिये उपयोगी</u>

1. सद्गुणों का मूल :– विनय	5. रोग का मूल :– अजीर्ण
2. सब रस का मूल :– पानी	6. मौत का मूल :– शरीर
3. पाप का मूल :– लोभ	7. बन्ध का मूल :– स्नेह
4. कलह का मूल :– हंसी	8. धर्म का मूल :– दया

भक्ति के रंग अनेक

1. गोपगिरी के आम राजा ने गुरू भक्ति हेतु एक ऐसी पौषधशाला बनवाई जिसमें 100 स्तम्भ, तीन प्रवेश द्वार व विशाल व्याख्यान मंडप था । इसमें एक घंटा था जो ज्योतिष मणियों से मंडित था तथा चंद्रकांत मणि से उसका तल बना हुआ था । उसके निर्माण में तीन लाख द्रव्य खर्च हुआ था।

2. कभी पालनपुर जिनालय में प्रति दिन भक्तों द्वारा चढाई गई सामग्री को 40 क्वींटल चावल (लगभग 100 मन) तथा 7.4 क्वींटल बादाम प्रभू को चढायी जाती थी। प्रति दिन 84 श्रेष्ठी पालकी में बैठकर दर्शन को आया करते थे ।

3. कुमारपाल महाराजा त्रिभुवनपाल विहार में प्रतिदिन 62 सामन्तों तथा 1800 दुर्गपतियों के साथ अष्ट प्रकारी पूजा करते थे । वे प्रतिदिन अपने द्वारा बनवाये गये 32 जिनालयों की चैत्य परिपाटी पूर्ण करके भोजन करते थे । उन्होंने 1444 नये जिन बिंब भरवाये तथा त्रिभुवनपाल विहार में 24 मूर्ति चांदी की एवं 125 इंच की मूलनायक श्री नेमनाथ प्रभू की प्रतिमा बहुमूल्य रत्नों से भरवाई थी । साथ ही 96 करोड स्वर्ण मुद्राएं मात्र एक मंदिर बनवाने में खर्च की थी ।

4. लंकेश्वर रावण के महल में भी एक गृह मंदिर था जिसमें नीलमणि की मुनि सुव्रतस्वामी की प्रतिमा थी, जिसकी वह रोज भक्ति करता था। उसने अष्टापद तीर्थ पर जिन भक्ति करते हुए तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया था ।

5. हंसराज धारू के पुत्र जगडुशाह ने सिद्धाचल गिरि पर सवा करोड मूल्य का रत्न देकर तीर्थ माला पहनी थी ।

6. सूरि सम्राट बप्पभट्ट सूरिश्वरजी म.सा. प्रतिदिन अपनी आकाश गामिनी विद्या द्वारा सिद्धाचल, गिरनार, मथुरा, भरूच तथा गोपालगिरी आदि तीर्थों के दर्शन करने के बाद ही आहार पानी ग्रहण करते थे ।

7. आबू के पास स्थित उमरग्राम निवासी पारा शाह के पुत्र देसलशाह ने 14 करोड स्वर्ण मुद्राएं खर्च करके शत्रुंजय आदि तीर्थों की यात्रा की थी ।

8. कोणिकपुत्र संप्रति महाराजा हमेशा एक जिनालय के शिलान्यास के समाचार सुनने के बाद ही भोजन किया करते थे।

9. श्रेणिक महाराजा जिस दिशा में प्रभू महावीर विचरते उस दिशा में सात कदम आगे जाकर 108 स्वर्ण जव के स्वस्तिक बनाते थे।

10. वस्तुपाल तेजपाल ने आबू पर 12 करोड़ 53 लाख स्वर्ण मुद्राएं व्यय कर एक मुख्य जिनालय बनवाया था, जिसका नाम लुणींग वसहि है।

11. वस्तुपाल तेजपाल ने ही शत्रुंजय पर 18 करोड़ 86 लाख द्रव्य खर्च किया तथा गिरनार पर 12 करोड़ 80 लाख द्रव्य खर्च किया तथा सभी मंदिरों में स्वर्ण आभूषण भेंट किये।

12. थराद के आभू संघवी ने 12 करोड़ स्वर्ण मुद्राएं खर्च करके शत्रुंजय का संघ निकाला और 6 लाख 30 हजार धार्मिक पुस्तकों की रचना करवाई तथा 360 कमजोर आर्थिक स्थिति वाले साधर्मिकों को अपने समकक्ष बनाया ।

ज्ञान की आशातना के कुछ कारण

1. पुस्तकें हाथ में रखकर पैशाब करने से आशातना होती हैं।
2. पुस्तकें हाथ में रखकर खानपान करने से ज्ञान की आशातना होती है।
3. सोने के लिये तकिये की जगह पुस्तक का उपयोग करना भी आशातना है।
4. कागज पर सोना नहीं चाहिये। कागज पर खाना रखकर नहीं खाना चाहिये।
5. कागज या पुस्तक को जलाना नहीं चाहिये ।
6. कागज व पुस्तक पर पैर नहीं रखना चाहिये ।
7. पुस्तकों को कभी पछाड़कर नहीं फेंकना चाहिये ।
8. थूक से ज्ञान को कभी मत मिटाओ ।
9. कागज या पुस्तक को फाड़ो मत और जलाओ मत ।
10. ज्ञान की वस्तुओं को संभाल कर, सजाकर रखो, इधर उधर फेंको मत।
11. ज्ञान का कभी तिरस्कार न करें ।
12. किताब या कॉपीयों से हवा न खायें ।
13. ज्ञान का गलत उपयोग ज्ञान की सबसे बडी आशातना है।

उपाश्रय में सामायिक व प्रतिक्रमण संबंधी जानकारी

प्रश्न :– सामायिक का अर्थ क्या है ?

उत्तर :– जिस आराधना से समभाव की प्राप्ति हो, उसे सामायिक कहते हैं ।

प्रश्न :– सामायिक कितने प्रकार की होती है? कौन कौन सी?

उत्तर :– सामायिक चार प्रकार की होती है ।
1. श्रुत सामायिक 2.समकित सामायिक 3. देश विरती सामायिक 4. सर्व विरती सामायिक

प्रश्न :– सामायिक कहाँ पर की जा सकती है?

उत्तर :– सामायिक निम्न स्थानों पर की जा सकती हैं
1. पौषधशाला 2. जहाँ साधु साध्वी ठहरे हों वहाँ 3. घर के एकान्त स्थान में ।

प्रश्न :– वीर प्रभू ने किसकी सामायिक की प्रशंसा की?

उत्तर :– वीर प्रभू ने पूणिया श्रावक के सामायिक की प्रशंसा की थी।

प्रश्न :– शास्त्रों में एक सामायिक का कितना लाभ बताया है?

उत्तर :– एक लाख वर्ष तक निरंतर एक लाख सोना मोहर का दान दिया जाय, तो भी एक भाव पूर्वक एकचित होकर की गई सामायिक से प्राप्त पुण्य उस दान से प्राप्त पुण्य से अधिक होता है। शुद्धि पूर्वक सामायिक करने से लगभग *92,5925925* पल्योपम करोड़ से अधिक पल्योपम का देवलोक आयुष्य मिल सकता है।

प्रश्न :– गौतम स्वामी ने कितने तापसों को करेमि भंते दिया?

उत्तर :– गौतम स्वामी ने 1500 तापसों को करेमि भंते दिया था।

प्रश्न :– सामायिक में कितने प्रकार के दोष लगने की संभावना रहती है?

उत्तर :– सामायिक करते समय 32 दोष लगने की संभावना रहती है। वे निम्न हैं : 10 मन के, 10 वचन के, 12 काया के।

10 मन के दोष :– 1. शत्रु को देखकर द्वेष करना या उस पर क्रोध करना। 2. अविवेक पूर्ण चिंतन 3. बाजार भावों का विचार करना 4. मन में उद्वेग भाव लाना । 5.यश की इच्छा करना 6. विनय न करना। 7. भय पूर्वक चिंतन 8. व्यापार का चिंतन 9. सामायिक के फल पर शंका करना। 10. फल की इच्छा से क्रिया करना ।

वचन के दस दोष :– 1. अभद्र संबोधन करना 2. खराब वचन बोलना 3. पाप कर्म के आदेश देना 4. बड़बड़ाना 5. कलह करना 6. आगम संसारी का स्वागत करना 7. गाली देना 8. बालक के साथ खेलना 9. विक्रिया करना 10. हंसी मजाक करना।

काया (शरीर) के 12 दोष :– 1. आसन को बार बार फेरना 2.चारों तरफ देखना 3. पाप कर्म करना 4. आलस मरोड़ना 5. अभिनय पूर्वक बैठना 6. दिवार का सहारा लेना 7.मैल उतारना 8. शरीर खुजलाना 9. पैर पर पैर चढाना 10. काम वासना से अंग खुल्ले रखना। 11. किटाणु के उपद्रव से शरीर ढकना 12. नींद करना।

प्रश्न :– एक इरिया वहिया के पाठ में कितने प्रकार से मिःच्छामि दुक्कडम् किया जाता है?

उत्तर :– अट्ठारह लाख चौवीस हजार एक सौ बीस प्रकार से ।

प्रश्न :– इरिया वहिया सूत्र का दूसरा नाम क्या हैं?

उत्तर :– लघु प्रतिकमण सूत्र और प्रायश्चित सूत्र ।

प्रश्न :– प्रतिक्रमण का क्या अर्थ है?

उत्तर :– पाप क्रिया का प्रतिकार करना तथा किये गये पापों की शुद्धि करने का अनुष्ठान करना यानि पाप से पीछे हटना।

प्रश्न :– प्रतिक्रमण के कितने प्रकार हैं? तथा वे कब–कब किये जाते हैं?

उत्तर :– प्रतिक्रमण के पाँच प्रकार हैं :–

1. राईय 2. देवसियं 3. पक्खी 4. चौमासी 5. संवत्सरी ।

1. राईय प्रतिक्रमण सुबह में
2. देवसियं प्रतिक्रमण शाम में

3. पक्खी प्रतिक्रमण पाक्षिक चतुर्दशी की शाम को होता है।
4. चौमासी प्रतिक्रमण चार महीने में एक बार चतुर्दशी की शाम को होता है ।
5. संवत्सरी प्रतिक्रमण वर्ष में एक बार पर्युषण के आठवें दिन चतुर्थी की शाम को होता है ।

प्रश्न :– पौषध में कितने प्रकार के पच्चक्खान होते हैं?

उत्तर :– पौषध में चार प्रकार के पच्चक्खान होते हैं, वे निम्न हैं :– 1. आहार पौषध, 2. शरीर सत्कार पौषण, 3. ब्रह्मचर्य पौषध, 4. अव्यापार पौषध (पाप व्यापार त्याग)।

प्रश्न :– मुँहपत्ति का प्रमाण (माप) कितना होना चाहिये?

उत्तर :– स्वयं की एक वेत व चार अंगुल प्रमाण ।

नोट :– मुँहपत्ति एक किनारे वाली होनी चाहिये । क्योंकि तीन गति से आत्म मुक्ति संभव नहीं है । मात्र मनुष्य गति से ही आत्मा को मोक्षरूपी किनारा मिल सकता है । यह भी ध्यान रखें कि मुँहपत्ति पर किसी तरह की चित्रकारी न की गई हों।

काउस्सग्ग का फल

1. शुद्ध भाव से श्वासोश्वास प्रमाण का काउसग्ग करने वालों को 24508 पल्योपम से कुछ अधिक देवलोक का आयुष्य पाने जितना पुण्य प्राप्त हो सकता है ।

2. आठ श्वासोश्वास अर्थात् समग्र नवकार के काउसग्ग करने वाले जीवों को 19,63,267 पल्योपम का देव आयुष्य प्राप्त हो सकता है।

3. पच्चीस श्वासोश्वास अर्थात् चंदेसु निम्मलयरा तक का काउसग्ग करने वाली आत्मा को 61,35,216 पल्योपम का देव आयुष्य पाने जितना पुण्य प्राप्त हो सकता है ।

यह ध्यान रखें :–

अ. मुँहपत्ति अथवा चरवले के बिना सामायिक या प्रतिक्रमण आदि कोई क्रिया नहीं हो सकती । यह जिनाज्ञा हैं । अतः ऐसे अवसर पर चरवला न रखना दोष है ।

आ. कटासण त्रसकाय जीवों की रक्षार्थ उनका होना चाहिये तथा उसका माप 24 या 21 अंगुल होना चाहिये, कटासणे की किनारी का ओटना जीव हिंसा का कारण हैं व उस पर नाम लिखना ज्ञान की आशातना का कारण है । हो सके तो कटासणा सफेद ही रखें, ताकि जीवों की जयणा हो सके ।

इ. सामायिक व प्रतिक्रमण में श्रावक के लिये जीव रक्षा का साधन है चरवला ।

ई. दर्शन, पूजन व गुरूवंदन आदि क्रियाओं में जयणा का साधन आपका उत्तरासण यानि शरीर पर धारण किया हुआ खेस है।

आराधना के विशिष्ट दिन

कार्तिक सुद 1 – गौतम स्वामी केवलज्ञान दिन ।
कार्तिक सुद 2 – दूज की आराधना का प्रारंभ
कार्तिक सुद 5 – ज्ञान पंचमी
कार्तिक सुद 14 – चातुर्मासिक 14
कार्तिक सुद 15 – द्राविडवारि खिल्लजी का सिद्धगिरी पर 10 करोड मुनिवरों के साथ मोक्ष गमन।
मगसर वद 10 – श्री महावीर प्रभू दीक्षा कल्याणक।
मगसर सुद 11 – मौन एकादशी ।
पोष वद 10 – श्री पार्श्वनाथ प्रभू जन्म कल्याणक।
पोष वद 11 – श्री पार्श्वनाथ प्रभू दीक्षा कल्याणक।
फाल्गुण सुद 3 – बीस विहरमान के दीक्षा कल्याणक।
फाल्गुण सुद 13 – गिरीराज पर छेः कोस की फेरी ।
फाल्गुण सुद 13 – कृष्ण पुत्र शांब व प्रद्युमन को साढे आठ करोड मुनियों के साथ सिद्धगिरी पर्वत पर सिद्ध पद की प्राप्ति ।
फाल्गुण सुद 14 – चातुर्मासिक चौदस ।
चैत्र वद 8 – आदिनाथ प्रभू का जन्म दीक्षा कल्याणक (वर्षीतप प्रारंभ)

चैत्र सुद 7 – शाश्वती ओली प्रारंभ ।
चैत्र सुद 13 – महावीर प्रभू का जन्म कल्याणक तथा बीस विहरमान प्रभू का केवलज्ञान कल्याणक।
चैत्र सुद 15 – पुंडरिक गणधर पांच करोड आत्माओं के साथ सिद्धगिरी पर सिद्धे बने ।
वैशाख वद 10 – वीस विहरमान प्रभू के जन्म कल्याणक।
वैशाख सुद 3 – अक्षय तृतीया (वर्षीतप के पारने का दिन)।
वैशाख सुद 10 – श्री महावीर स्वामी प्रभू का केवलज्ञान कल्याणक ।
वैशाख सुद 11 – शासन स्थापना दिन ।
आषाढ सुद 6 – प्रभू महावीर स्वामीजी का च्यवन कल्याणक।
आषाढ सुद 14 – चातुर्मासिक चौदस ।
श्रावण वद 1 – बीस विहरमान प्रभू का च्यवन कल्याणक।
श्रावण सुद 3 – बीस विहरमान प्रभू का निर्वाण कल्याणक।
भादो वद 12 – पर्युषण पर्व प्रारंभ ।
भादो सुद 4 – संवत्सरी प्रतिक्रमण ।
भादो सुद 5 – पारणा पंचमी
भादो सुद 8 – दुबली आठम ।
आसोज सुद 7 – शाश्वती ओली प्रारंभ
आसोज सुद 15 – पांच पांडव 20 करोड मुनियों के साथ सिद्ध बने ।
कार्तिक वद अमावस्या15 – महावीर प्रभू का निर्वाण कल्याणक।

उत्तमा सुखिनो बोध्या, दुःखिनो मध्यमा पुनः ।
सुखिनो दुखिनो वाऽपि बोधमर्हन्ति नाधमा ।।

"उत्तम पुरुष सुखी होने से बोध पाते हैं, मध्यम पुरुष दुःखी होने से बोध पाते हैं , जबकि अधम पुरुष सुख और दुःख किसी से बोध प्राप्त नहीं करते ।"

कुछ स्वाभाविक प्रश्न

प्रश्न :– चरवले का माप कितना होना चाहिये?

उत्तर :– खुद के हाथ के अनुसार 24 अंगुल डंडी एवं 8 अंगुल ऊन के डोरे ।

प्रश्न :– रात्रि में गुरू महाराज के पास जाते समय क्या बोलना चाहिये?

उत्तर :– उपाश्रय में प्रवेश करते समय वहाँ बिराजित गुरू भगवंतों को रात्रि में मत्थएण वंदामि तथा बाहर निकलते समय त्रिकाल वंदना कहना चाहिये ।

प्रश्न :– तप युक्त पौषध करने से कितना लाभ होता है?

उत्तर :– मणि जड़ित सोने की सीढ़ियों वाले सोने के फर्श वाले हजार स्तंभों वाले जिन मंदिर को बनवाने से जो पुण्य प्राप्त होता है, उससे भी अधिक तप युक्त पौषध से पुण्य प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न :– कुमारपाल महाराजा ने पौषध में क्या सहन किया?

उत्तर :– काउस्सग्ग अवस्था में उनके शरीर पर एक मकोड़ा चढा वह उन्हें काटने लगा । महाराजा ने शरीर के उस भाग की चमडी को काटकर भी उस मकोड़े की रक्षा की ।

प्रश्न :– वीर प्रभू के निर्वाण के समय किस किस स्थान पर कितने राजाओं ने पौषध किये थे?

उत्तर :– वीर प्रभू के निर्वाण के समय दिवाली के दिन अपापापुरी में नव लिच्छवी नव मल्ली गणराज्य के राजाओं ने आहार त्याग रूप पौषध किये ।

प्रश्न :– एक पौषध से कितना लाभ?

उत्तर :– एक दिन के पौषध से 30 सामायिक का लाभ होता है।

प्रश्न :– पौषधव्रत में कितने दोषों का त्याग करना चाहिए?

उत्तर :– अठ्ठारह (18) दोषों का त्याग करना चाहिए।

प्रश्न :– श्री संघ के नायक कौन हैं ?

उत्तर :– आचार्य भगवान हैं।

प्रश्न :– साधु के उपकरणों के नाम क्या हैं?

उत्तर :– 1. रजोहरण 2. मुँहपत्ति 3. डंड 4. झोली 5. आसन 6. संथारा 7. उत्तर पट्टो 8. पात्रा 9. चेतना 10.तरपणी 11. चोल पट्टो 12. कांबली व अन्य वस्त्र 13. छोटी पूंजनी 14. मांडलों।

प्रश्न :– सुबह का राइय प्रतिक्रमण कितने बजे तक होता हैं?

उत्तर :– राइय प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र की चूलिका के अनुसार सूर्योदय के बाद पोना घंटे तक तथा व्यवहार सूत्र के अनुसार मध्यान्ह तक हो सकता है । दूसरा नियम अपवाद मार्ग है तथा यह रोज के लिये नहीं हैं।

प्रश्न :– नियम लेने न लेने से क्या लाभ हानि होती है ?

उत्तर :– नियम लेने से लाभ :– 1. दृढ़ता बढती है 2. त्याग की शिक्षा मिलती है । 3. दिनचर्या में स्थिरता आती हैं। 4. कर्म बंध के दरवाजे बंद होते है । 5. उत्तरोतर सच्चे सुख की प्राप्ति होती है ।

नियम न लेने से नुकसान :– 1. पाप की अनुमोदना सतत चलती है जिससे कर्म बंध होता हैं ।

2.छूट छांट की वजह से कभी निर्धारित नियम का भंग हो जाता है ।

3.जैसे ब्याज पर राशि लाने के बाद उसे काम में न भी लावे तो भी ब्याज तो लगता हैं , ठीक उसी प्रकार से नियम न लेने से भी तत्संबंधी पाप के भागी तो हम बनते ही हैं।

प्रश्न :– किसी भी कार्य संपादन के पांच कारण बताईये?

उत्तर :– किसी भी कार्य संपादन के मुख्य कारण पांच हैं ।

1. नियति :– अर्थात् जो होना है, वह अवश्य होगा ही।
2. स्वभाव :– योग्यता
3. काल :– कार्य पूर्णता का समय ।
4. कर्म :– कर्ता के कर्म का विपाक
5. पुरूषार्थी :– परिश्रम करना व साहस करना ।

विविध प्रश्न

प्रश्न :– शाश्वत सूत्र कौन कौन से हैं ?

उत्तर :– शाश्वत कुल तीन हैं। 1. नवकार मंत्र 2. करेमिभंते 3. नमुत्थुणं।

प्रश्न :– आठ प्रतिहार्य के नाम बताईये ?

उत्तर :– 1. अशोक वृक्ष 2. सुर पुष्प वृष्टि 3. दिव्य ध्वनि 4. चामर युगल 5. सिंहासन् 6. आभा मंडल 7. देव दुंदुभि 8. छत्रत्रय ।

प्रश्न :– दस श्रावक के नाम बताओ ?

उत्तर :– 1. आनंद 2. कामदेव 3. चुलणी पिता 4. सुरादेव 5. चुल्लक शतक 6. कुंभ कोलीक 7. सद्दाल पुत्र 8. महाशतक 9. नंदिनीपिता 10. तेतेली पिता ।

प्रश्न :– तप कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर :– तप बारह प्रकार के होते हैं :– छः बाह्य तप तथा छः अभ्यंतर तप

अ : बाह्य तप :– 1. अनसन 2. वृति संक्षेप 3. काया क्लेष 4. उणोदरी 5. रस त्याग 6. संलीनता ।

आ : अभ्यंतर तप: 1. प्रायश्चित्त 2. विनय 3. वैयावच्च 4. स्वाध्याय 5. कायोत्सर्ग 6. ध्यान ।

प्रश्न :– छः री पालक के छः नियम क्या हैं?

उत्तर :– 1.एकासना, 2. षद् आवश्यककारी 3.भूमि शयन, 4.सचित त्याग, 5.पदाचारी, 6.ब्रह्मचारी ।

प्रश्न :– 60000 (साठ हजार) वर्ष तक आयंबिल किसने किये व क्यों किये?

उत्तर :– आदिनाथ प्रभु की पुत्री सुंदरी ने अपने प्रति अपने भाई भरत का राग कम करने के लिये साठ हजार वर्ष तक आयंबिल किये।

प्रश्न :– संसार में रहते हुए भी धर्म क्रिया की जा सकती है तो फिर दीक्षा ग्रहण करने की क्या आवश्यकता है?

उत्तर :– संसार में रहते हुए पांच स्थावर काय की हिंसा से तो बचा नहीं जा सकता है । साथ ही संतान प्राप्ति की

चाह भी बनी रहती है । उसकी अनुमोदना की आदत भी बनी रहती है। इसी मुख्य बंधन से मुक्ति हेतु दीक्षा आवश्यक है ।

प्रश्न :– सात प्रकार के गरणों के नाम लिखिये?

उत्तर :– 1. पानी छानने का गरणा 2. छाछ छानने का गरणा 3.दूध छानने का गरणा 4. गरम पानी का गरणा 5.तैल छानने का गरणा 6. घी छानने का गरणा 7. आटा छानने का गरणा।

प्रश्न :– दती का अर्थ क्या है ?

उत्तर :– दती का अर्थ है, दिन में एक बार एक धारा से थाली में जो भोजन आता हैं, उसे दती कहते हैं ।

प्रश्न :– देव किसे कहते हैं? तथा उसके कितने भेद हैं?

उत्तर :– नाम कर्म के उपार्जन से देवलोक में उत्पन्न हुई आत्माएं देव कहलाती हैं । देवगति प्राप्त करने वाली आत्मा को अवधिज्ञान की प्राप्ति होती है तथा वे उत्कृष्ट सुख युक्त दीर्घ आयुष्य वाले होते हैं। देवों के चार प्रकार हैं। 1. भुवनपति, 2. व्यंतर, 3. ज्योतिष, 4. वैमानिक देव।

प्रश्न :– एकल ठाणा तप किसे कहते हैं?

उत्तर :– दिन में एक बार एक आसन पर बैठकर मुंह व हाथ सिवाय अन्य कोई भी अंग नहीं हिलाते हुए भोजन लेना तथा भोजन के तुरंत बाद उसी समय चौविहार करना ।

प्रश्न :– जंबू स्वामी के निर्वाण के बाद किन किन वस्तुओं का विच्छेद हुआ?

उत्तर :– 1. परम् अवधिज्ञान 2. मनः पर्यवज्ञान 3. केवलज्ञान 4. उपशम श्रेणी 5. क्षपकश्रेणी 6. परिहार विशुद्धि चारित्र 7.सूक्ष्म संपराय चारित्र 8. यथाख्यात चारित्र 9. पुलाक लब्धि 10. आहारक लब्धि 11. सिद्धि गमन 12. जिन कल्प (प्रभावक चारित्र)

प्रश्न :– चक्रवर्ती के चौदह रत्नों के नाम लिखिये?

उत्तर :– 1. चक्र 2. छत्र 3. दंड 4. मणि 5. कांकिणी 6.सेनापति 7. गाथापति 8. पुरोहित 9. सूत्रधार 10. स्त्री 11. घोडा

12. हाथी 13. चर्म 14. तलवार । ये सारे चौदह रत्न 1000 यक्षों से अधिष्ठित होते हैं । इनका स्पर्श मात्र भी आरामदायक होता है।

प्रश्न :– वाणी के छः गुण लिखिये?

उत्तर :– 1. हित 2. मित 3.मधुर 4. शालीनता 5. गर्व रहित 6. सच्चाई

प्रश्न :– विद्यार्थी के पांच लक्षण कौन कौन से हैं?

उत्तर :– 1. कौअे की सी चेष्टा 2. बगुले जैसा ध्यान 3. कुते जैसी नींद 4. कम खानेवाला 5. ब्रहम्चारी।

प्रश्न :– मद्रास (चेन्नई) का प्रथम जिनालय कौन सा है?

उत्तर :– श्री चन्द्रप्रभु जैन मंदिर, सूल्लै ।

प्रश्न :– मद्रास (चेन्नई) का प्राचीनतम जैन तीर्थ कौन सा है?

उत्तर :– केशरवाड़ी (पोळल) श्री आदिनाथ जिनालय यहाँ की प्रतिमा श्याम वर्ण कसौटी पत्थर से निर्मित है तथा इतिहास वेताओं के अनुसार यह मूर्ति 2500 वर्ष पूर्व समप्रति महाराज के समय की है ।

प्रश्न :– मद्रास शहर में छोटे– बड़े कुल कितने जिनालय हैं?

उत्तर :– छोटे– बड़े घर मंदिर सब मिलाकर 46 जिनालय हैं।

प्रश्न :– दक्षिण भारत में मुख्य जैन तीर्थ एवं मंदिर कहाँ कहाँ हैं?

उत्तर :– 1. कुलपाकजी (हैदराबाद के पास) 2. पेदावीरम् (भीमावरम) 3. काकटूर (नेल्लूर) 4. राजेन्द्रधाम (नेल्लूर) 5. केशरवाडी (मद्रास) 6. दादावाडी (मद्रास) 7. बाहुबलीजी (श्रवण बेलगोल) 8. हींकार तीर्थ (गुंटूर), 9. पक्षी तीर्थ (तीरुकुलीकुंडरम्) 10. श्री 108 पार्श्वधाम (देव्वनहल्ली)

प्रश्न :– बम्बई में सर्व प्रथम जिनालय कब और कहां हुआ?

उत्तर :– सन् 1813 में सर्व प्रथम फोर्ट में शांतिनाथ भगवान के मंदिर का निर्माण हुआ ।

प्रश्न :– तुंगीया नगर की क्या विशेषता थी?

उत्तर :– इस नगर के लोग रात को भी दरवाजा खुला रखते थे।

प्रश्न :– साधु दोष युक्त आहार ले तो क्या होता है?

उत्तर :– साधु अकारण दोष युक्त (आधाकर्मी) आहार ले तो उसे अनंत भव करने पडते हैं ।

प्रश्न :– सात चारित्र कौन कौन से हैं ?

उत्तर :– 1. सामायिक 2. छेदोप स्थापनीय 3. परिहार विशुद्धि 4.सूक्ष्म संपराय 5. यथा ख्यात 6. देश विरति 7. सर्व विरति।

प्रश्न :– कुमारपाल महाराजा का क्या नियम था ? मन का पाप भयंकर कैसे?

उत्तर :– कुमारपाल महाराजा मन से पाप होने पर उपवास करते थे। वचन से पाप होने पर आयंबिल करते थे। काया से पाप होने पर एकासणा करते थे । इससे यह स्पष्ट होता है कि मन का पाप सबसे बड़ा है जो अनेक अशुभ कर्मो को जन्माता हैं।

प्रश्न :– श्रेणिक राजा के परिवार के कुल कितने लोगों ने दीक्षा ली थी?

उत्तर :– श्रेणिक राजा की 23 रानियों ने, 23 पुत्रों ने व 10 पौत्रों ने यानि कुल 56 लोगों ने दीक्षा ली थी ।

प्रश्न :– जीवों का हत्यारा होते हुए भी किसने संयम व्रत लिया था?

उत्तर :– अर्जुनमाली ने वीर प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की थी ।

प्रश्न :– वासुदेव के हाथों प्रतिवासुदेव मरकर किस योनि में जाते हैं?

उत्तर :– वासुदेव के हाथों से प्रतिवासुदेव मरकर नियमानुसार नरक में जाते हैं ।

प्रश्न :– वृक्ष पर बैठे बैठे जाति स्मरण ज्ञान किसे हुआ?

उत्तर :– पुरोहित पुत्र देवभद्र व यशोभद्र को जाति स्मरण ज्ञान हुआ।

प्रश्न :– एक सुपारी उछलकर नीचे पड़े तब तक नौ श्लोको की रचना करने वाले मुनि का नाम बताओ?

उत्तर :– उपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराज ।

प्रश्न :– एक नींबू उछलकर नीचे पड़े तब तक नौ श्लोकों की रचना करने वाले आचार्य का नाम क्या था?

उत्तर :– आचार्य हेमचंद्राचार्य ।

प्रश्न :– संतिकरं सूत्र की रचना किसने की ?

उत्तर :– आचार्य मुनि सुंदर सूरि ने ।

प्रश्न :– बलदेव अपना आयुष्य पूर्ण करके क्या गति पाते हैं?

उत्तर :– वे सभी इसी भव में दीक्षित होकर आत्मोद्धार करते हुए मरकर या तो वैमानिक देव बनते हैं या मोक्ष प्राप्त करते हैं।

प्रश्न :– फागण सुद 13 छः कोस की यात्रा क्यों की जाती हैं?

उत्तर :– इस दिन कृष्ण के पुत्र शांब और प्रद्युमन 8 करोड मुनियों के साथ भांडवजी पहाड पर मोक्ष गये थे।

प्रश्न :– नरक के द्वार कितने व कौन कौन से हैं ?

उत्तर :– नरक के चार द्वार हैं :– 1. रात्रि भोजन 2. परस्त्री गमन 3. आचार भक्षण 4. अनंत काय भक्षण ।

प्रश्न :– सनत्कुमार चक्री के शरीर में कितने रोग थे तथा कुल कितने वर्ष तक वेदना सहन की थी ?

उत्तर :– सनत्कुमार चक्री के शरीर में 16 महारोग थे तथा 700 वर्ष तक उन्होंने वेदना सहन की थी ।

प्रश्न :– गजसुकुमाल ने जिस समय दीक्षा ग्रहण की उस समय उनकी माता ने उन्हें क्या कहा?

उत्तर :– गजसुकुमाल की माता ने गजसुकुमाल को दीक्षा लेते वक्त यह कहा हे पुत्र! तू मुझे छोडकर दूसरी माता मत करना।

प्रश्न :– द्रोपदी ने पूर्व में अनन्त भव क्यों किये?

उत्तर :– उसने पूर्व भव में साधु महाराज को कडवी तुबंडी का साग बोहराया था ।

प्रश्न :– संग्राम सुनार ने क्या सुकृत किया था?

उत्तर :– मांडवगढ में जिस समय आचार्य सोमसुंदर सूरिश्वरजी म.सा. भगवती सूत्र का वांचन कर रहे थे, उस वांचन में आने वाले प्रत्येक गोयमा शब्द के लिये स्वयं ने मुद्रा। उनकी माता ने 1/4 मुद्रा व पत्नी 1/4 मुद्रा कुल प्रत्येक गोयमा शब्द के लिये $1^1/_2$ डेढ़ स्वर्ण मुद्रा अर्पित की थी।

प्रश्न :– वर्तमान में जैन धर्म का मुख्य केंद्र कौन सा हैं?

उत्तर :– गुजरात प्रदेश।

प्रश्न :– जंबू स्वामी ने कितने लोगों के साथ दीक्षा ग्रहण की?

उत्तर :– जंबू स्वामी ने आठ पत्नियों तथा आठों पत्नियों के माता पिता एवं स्वयं के माता पिता एवं 527 चोरों के संघ के साथ दीक्षा ग्रहण की ।

प्रश्न :– वंकचूल ने कौन से चार नियम लिये थे?

उत्तर :– वंकचूल ने निम्न चार नियम लिये थे। 1. अनजाना फल नहीं खाना 2. कोएं का मांस नहीं खाना 3. राज राणी से मैथून त्याग 4. सात कदम पीछे जाकर किसी पर प्रहार करना।

प्रश्न :– दीपावली पर्व पर किस राजा की सभा में कौन सा सूत्र रचा गया?

उत्तर :– हस्तीपाल राजा की सभा में उतराध्ययन सूत्र की रचना की गई।

प्रश्न :– पर्युषण पर्व के पांच कर्तव्य कौन कौन से हैं?

उत्तर :– 1. अमारि प्रवर्तन 2. साधर्मिक भक्ति 3. रथ यात्रा 4. अट्ठम तप 5. परस्पर क्षमापना । (संदर्भ : कल्प सूत्र)

प्रश्न :– चूल्हे पर चन्दरवा बांधने से क्या लाभ है?

उत्तर :– ऐसे करने से प्रतिदिन पांच तीर्थों की यात्रा अथवा पांच मुनियों को सम्मान पूर्वक गोचरी वोहराने का पुण्य मिलता है।

प्रश्न :– ज्ञानियों की दृष्टि में संसार में सुखी व्यक्ति कौन?

उत्तर :– श्राध्य विधि अनुसार बिना फटे वस्त्र पहनने वाला, जिसके सर पर कर्जे का बोज न हो, थोडे घी से चुपडी गर्म रोटी खाने वाला सुखी व्यक्ति कहलाता है ।

प्रश्न :– अष्ट प्रवचन माता किसे कहते हैं ?

उत्तर :– संयम धर्म का पालन पोषण पांच समिति व तीन गुप्ति से होता है अतः इन्हें अष्ट प्रवचन माता कहा जाता है।

प्रश्न :– कौन से सेठ ने सौ पंखुडियों वाले कमलों की माला से परमात्मा की पूजा की ?

उत्तर :– छाडा सेठ ने ।

प्रश्न :– स्वाध्याय से क्या तात्पर्य हैं? यह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर :– 'स्व' का अध्ययन स्वाध्याय कहलाता है । यह पांच

प्रकार का होता है । 1. वाचना 2. पृच्छना 3. परावर्तना 4. अनुप्रेक्षा 5. धर्म कथा।

प्रश्न :– ध्यान से क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर :– किसी एक लक्ष्य पर मन को एकाग्र करना उसे ध्यान कहते हैं। इसके चार प्रकार हैं। वे निम्न हैं। 1. आर्तध्यान 2. रौद्रध्यान 3. धर्म ध्यान और 4. शुक्ल ध्यान।

प्रश्न :– जाति स्मरण ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर :– पूर्व भव का स्मरण हो जाना, जाति स्मरण ज्ञान कहलाता है।

प्रश्न : हरिभद्रसूरि दीक्षा पूर्व क्या थे?

उत्तर :– राज पुरोहित।

प्रश्न : इस असार संसार में एकमात्र निश्चल क्या है?

उत्तर :– धर्म।

प्रश्न : प्रभू को कैसा फूल नहीं चढाया जाता है ?

उत्तर :– जो फूल जमीन पर गिरकर खराब हो गया हो वो फूल प्रभू को नहीं चढाया जाता है।

प्रश्न :– काल वेला में स्वाध्याय करने से क्या होता है?

उत्तर :– काल वेला में स्वाध्याय करने से जिनाज्ञा का भंग, देव उपद्रव और ज्ञानावरणीय कर्म बंध होता हैं । (संदर्भः संबोध प्रकरण)

प्रश्न :– कुमारपाल महाराजा का जन्म कब हुआ?

उत्तर :– कुमारपाल महाराजा का जन्म विक्रम संवत् 1144 में हुआ तथा मृत्यु विक्रम संवत् 1230 में हुई ।

प्रश्न :– शालीभद्र और धन्नासेठ दोनों साला बहनोई की आत्मा अभी किस गति में है?

उत्तर :– शालीभद्र एवं धन्नासेठ दोनों महामुनि की आत्मा इस समय सर्वार्थसिद्धि विमान में हैं ।

प्रश्न :– श्रेणीक राजा मरकर कौन से नरक में गये ?

उत्तर :– श्रेणीक महाराजा मरकर पहली नरक में गये ।

प्रश्न :– साधु साध्वी रात को कान में रूई डालकर सोते हैं या नहीं?

उत्तर :– साधु साध्वी रात को कान में रूई डालकर सोते हैं।

क्योंकि यह प्रथा जीव दया से ही संबंधित है। जयणा का एक तरीका है ।

प्रश्न :– देव द्रव्य भक्षण से क्या गति होती है ?

उत्तर :– प्रभु महावीर को यही प्रश्न जब गौतम गणधर से पूछा तो प्रभु ने गौतम से यह कहा –हे गौतम, देव द्रव्य भक्षण से तथा परस्त्री गमन से सात बार सातवीं नरक में पैदा होना पडता हैं । (संदर्भ : संबोध प्रकरण)

प्रश्न :– त्रेषठ शलाका पुरूष कौन कौन से हैं?

उत्तर :– त्रेषठ शलाका पुरूष निम्न हैं । 24 तीर्थंकर + 12 चक्रवर्ती + 9 वासुदेव + 9 प्रति वासुदेव + 9 बलदेव ।

प्रश्न :– वैराग्य के कितने प्रकार हैं?

उत्तर :– वैराग्य के तीन प्रकार होते हैं :– 1. दुख गर्भित वैराग्य 2. मोह गर्भित वैराग्य 3. ज्ञान गर्भित वैराग्य।

प्रश्न :– शिव पुराण में जैनं धर्म के विषय में क्या लिखा है?

उत्तर :– शिव पुराण में यह कहा गया है कि एक बार अगर कोई आदिनाथ प्रभु के दर्शन कर ले तो उसे 68 तीर्थों की यात्रा से प्राप्त पुण्य के बराबर पुण्य प्राप्त होता है ।

प्रश्न :– अजित शांति की रचना कब हुई?

उत्तर :– नेमीनाथ प्रभु के गणधर नंदिषेण मुनि ने शत्रुन्जय तीर्थ पर अजित शांति की रचना की थी। इस बात को लगभग छियासी हजार पांच सौ वर्ष हो चुके हैं। (संदर्भ : शत्रुंजय कल्प)

प्रश्न :– पांचवें आरे की समाप्ति के साथ किस किस बात का विच्छेद होगा?

उत्तर :– पांचवें आरे की समाप्ति यानि लगभग 21000 वर्ष पूर्ण होने पर उस दिन के पूर्वान्ह में 1. श्रुत सूरि 2.धर्म व 3. संघ का विच्छेद होगा । मध्यान्ह में विमल वाहन राजा और सुधर्म मंत्री, तथा शाम को बादर अग्निकाय का विच्छेद होगा।

प्रश्न :– वंदितु सूत्र के रचयिता कौन हैं ?

उत्तर :– वंदितु सूत्र के रचयिता गणधर भगवान हैं।

प्रश्न :– आशातना किसे कहते हैं?

उत्तर :– जिस व्यवहार या वर्तन से पुण्य लाभ के बदले पाप का बंध हो वो व्यवहार या वर्तन आशातना कहलाता है। उनमें मंदिर संबंधी आशातनायें निम्न प्रकार हैं :– 1. जिनालय में पान व तम्बाकू खाना । 2. जिनालय में पानी पीना। 3. जिनालय में भोजन करना। 4 जिनालय में बूट चप्पल पहनकर जाना । 5. जिनालय में यौनाचार करना । 6. जिनालय में नींद करना या सो जाना । 7.जिनालय में थूकना ,गंदा कचरा डालना। 8. जिनालय में जुंआ खेलना 9. जिनालय में मल मूत्र आदि त्यागना। 10. जिनालय में अभद्र शब्द बोलना, अभद्र व्यवहार करना।

प्रश्न :– शुद्ध भावना का अर्थ क्या है? वे कौन कौन सी हैं?

उत्तर :– आत्मा को शुद्ध भाव में लाये एवं शुद्ध रखे वे शुद्ध भावनाएं कहलाती हैं। ऐसी भावनाएं चार प्रकार की हैं।

1. मैत्री भावना : सभी जीवों को मित्रवत् समझना ।
2. प्रमोद भावना : गुणीजनों को देखकर हर्षित होना।
3. कारूण्य भावना: दुखी एवं धर्म रहित जीवों को देख कर उनके प्रति मन में करूणा लाना।
4. मध्यस्थ भावना : अज्ञानी, तामसी व मूर्ख व्यक्तियों पर भी समभाव रखना। और अनित्यादि देवों के प्रति भी दुर्भाव नहीं रखना।

प्रश्न :– समकित के पांच आभूषण कौन से हैं?

उत्तर :– 1. स्थिरता 2. प्रभावना 3. भक्ति 4. जिनशासन में कुशलता व 5. तीर्थ सेवा ।

प्रश्न :– इस भरत क्षेत्र के अंतिम आचार्य कौन होंगे?

उत्तर :– भरत क्षेत्र के अंतिम आचार्य श्री दुप्पहसूरि होंगे ।

प्रश्न :– शाश्वती प्रतिमाओं की ऊँचाई कितनी हैं?

उत्तर :– तिर्च्छा लोक में शाश्वती प्रतिमाएं पांच सौ धनुष प्रमाण ऊँची हैं, जो नंदिश्वर द्वीप एवं वैताढ्य पर्वत पर आई हुई हैं ।

प्रश्न :– मिथ्यात्व के पांच प्रकार कौन कौन से हैं?

उत्तर :– 1. आभिग्राहिक 2. अनाभिग्राहिक 3. आभिनिवेषिक 4.सांशयिक 5. अनाभोगिक

प्रश्न :– बीस विहरमान के जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक कब हुए?

उत्तर :– बीस विहरमान का जन्म कुंथूनाथ भगवान व अरनाथ भगवान के समय में हुआ । मुनिसुव्रतस्वामीजी व नेमीनाथ प्रभूजी की शासनावधि के बीच उनका दीक्षा तथा केवलज्ञान कल्याणक हुआ।

कुछ सूत्रों के अपर नाम

1. नवकार मंत्र :– पंचमंगल महाश्रुत स्कंध ।
2. पंचिंदिय सूत्र :– गुरू स्थापना सूत्र ।
3. इच्छामि खमासमण :– पंचांग प्रणतिपात प्रणाम सूत्र ।
4. इच्छकार :– सुगुरू की सुख शाता पृच्छा सूत्र।
5. इरियावहियं :– लघु प्रतिक्रमण सूत्र।
6. अन्नत्थ :– आगार सूत्र ।
7. लोगस्स :– चौबीस जिन स्तवन ।
8. करेमि भंते :– प्रतिज्ञा सूत्र ।
9. सामाइयं वयं जूतो :– सामायिक समापना सूत्र ।
10. जग चिंतामणी :– चेत्यवंदन सूत्र ।
11. नमुत्थुणं :– चैत्यस्तव ।
12. सिद्धाण बुद्धाणं :– सिद्धों की स्तुति ।
13. जय वियराय :– प्रार्थना सूत्र ।
14. पुक्खर वद्धी :– श्रुतस्तव ।
15. नाणंमि :– अतिचार की आठ गाथा ।
16. अब्भुट्ठियो सूत्र :– सुगुरू वंदन ।
17. सकल तीर्थ :– तीर्थ वंदन ।

कर्म के विषय में कुछ जानकारी

प्रश्न :– कर्म के कितने प्रकार होते हैं? व कौन से हैं?

उत्तर :– कर्म आठ प्रकार के होते हैं। वे निम्न हैं :– 1. ज्ञानावरणीय 2.दर्शनावरणीय 3.वेदनीय कर्म 4. मोहनीय कर्म 5. आयुष्य कर्म 6.नाम कर्म 7. गौत्र कर्म और 8. अन्तराय कर्म।

प्रश्न :– कर्म के अस्तित्व को कैसे जाना जा सकता है?

उत्तर :– दो सगे भाईयों में एक बुद्धिमान और दूसरा जड़ होने के पीछे जो कारण है वो है अपने अपने कर्म ।

प्रश्न :– कर्म तो जड़ है, फिर उसका प्रभाव आत्मा पर कैसे पडता है?

उत्तर :– जैसे ब्राह्मी औषधी लेने से बुद्धि विकसित होती है, तथा मदिरापान से बुद्धि विकृत होती है । ठीक वैसा ही प्रभाव कर्म का है। जैसे मोहनधूल पड़ते ही मानव पागल हो जाता है। उसी प्रकार जीव कर्मो के कारण ही सुखी या दुखी हो जाता है ।

प्रश्न :– किस क्रिया से कौन सा कर्म बंधन होता है?

उत्तर :– अ) ज्ञानावरणीय कर्म :– ज्ञान की विराधना करने से , समकित धारी की ईर्ष्या करने से , गुरू की अवज्ञा व निरादर करने से , विद्या अध्ययन में अंतराय करने से ,ज्ञान के उपकरण व अक्षर युक्त साधनों की आशातना करने से व ज्ञानेन्द्रियों के दुरूपयोग से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है ।

आ) दर्शनावरणीय कर्म :– जिनालय में आशातना करने से, समकित की निंदा करने से, देव द्रव्य भक्षण करने से तथा उत्सूत्र प्ररूपणा करने से दर्शन मोहनीय कर्म का बंध होता है ।

इ) वेदनीय कर्म :– बड़ों के प्रति आदरभाव तथा प्राणी मात्र के प्रति दया व उदारता का भाव रखने से शाता वेदनीय कर्म का बंध होता है तथा इसके विपरीत आचरण करने से अशाता वेदनीय कर्म का बंध होता है।

ई) मोहनीय कर्म :– विषय कषायों में आसक्त, रहने से मोहनीय कर्म का बंध होता हैं । इसकी स्थिति जघन्य से अंतर्मुहूर्त तक एवं उत्कृष्ट से 70 क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम तक होती है ।

उ) आयुष्य कर्म :– आयुष्य कर्म के चार प्रकार हैं ।

1. नरक आयुष्य कर्म :– महा आरंभ समारंभ, महापरिग्रह व क्रूर भाव से नरक आयुष्य का बंध होता है ।

2. तिर्यंच आयुष्य कर्म :– माया, छल, कपट आदि से तिर्यंच आयुष्य का बंध होता है ।

3. मनुष्य आयुष्य कर्म :– सरल स्वभावी, मंद कषायी एवं दान में रूचि लेने वाले प्राणी को मनुष्य आयुष्य कर्म का बंध होता है ।

4. देव आयुष्य कर्म :– कष्ट सहन से (यानि तप करने से),देश विरति व सर्वविरति व्रत पालन से देव आयुष्य कर्म का बंध होता है ।

ऊ) नाम कर्म :– मन, वचन एंव काया की वक्रता से अशुभ नाम कर्म का उपार्जन होता है तथा सरलता एवं सहयोग की भावना से शुभ नाम कर्म का बंध होता है।

ए) गौत्र कर्म :– स्व प्रशंसा एवं पर निंदा से नीच गौत्र कर्म का बंध होता हैं एवं इसके विपरीत आचरण से उच्च गौत्र कर्म का बंध होता है ।

ऐ) अंतराय कर्म :– पूजा आदि शुभ कार्यों में अंतराय पहुंचाने से तथा हिंसा आदि में तत्पर रहने से अंतराय कर्म का बंध होता हैं ।

प्रश्न :– अंतराय कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर :– अंतराय कर्म के पाँच भेद हैं । 1. दानांतराय 2. लाभांतराय 3. भोगांतराय 4. उपभोगांतराय 5. वीर्यांतराय ।

1. दानांतराय :– दान की सामग्री सामने है । सुपात्र भी सामने है दान के फल की जानकारी भी है , फिर भी जो मनुष्य दान नहीं दे पाता उसका कारण दानांतराय ही हैं।

2. लाभांतराय :– योग्यता होते हुए भी इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होने का कारण लाभांतराय कर्म ही हैं ।

3. भोगांतराय :– पच्चक्खान न होते हुए भी जो व्यक्ति भोग सामग्री का उपभोग (कंजूसी के कारण, रोग के कारण या अन्य किसी कारण) न कर पाये वही भोगांतराय कर्म हैं।

4. उपभोगांतराय कर्म :– जिस कर्म के उदय से किसी तरह का पच्चक्खान न होते हुए भी स्वेच्छापूर्वक (किसी वस्तु की स्वयं के लिये हर संभव उपलब्धता होते हुए भी एवं उपभोग के लिये स्वयं स्वतंत्र होते हुए भी) उपभोग न कर पाये उसे उपभोगांतराय की स्थिति कहते हैं ।

5. वीर्यांतराय कर्म :– शरीर स्वस्थ हो, जवानी हो, फिर कोई मनुष्य स्वाभिमान रहित भृतप्राय जीवन ही जी पाता है, उसका कारण वीर्यांतराय कर्म का उदय ही है ।

पटाखा जलाने से अष्ट कर्मों का बंध

1. कागज जलाने से ज्ञान की आशातना यानि ज्ञानावरणीय कर्म का बंध ।
2. जलने से मौत का भय, इससे नाम कर्म का बंध ।
3. पटाखों से अन्य जीवों को वेदना होती है , जिससे वेदनीय कर्म का बंध।
4. पटाखा फोड़ने से उत्पन्न आनंद से मोहनीय कर्म का बंध होता है।
5. आयुष्य बंध हो सकता है ।
6. अन्य जीवों के अंग पटाखों के तिनकों के कारण पीडित हो सकते हैं, जिससे दर्शन मोहनीय कर्म का बंध होता है।
7. पटाखा फोडने में गर्व की अनुभूति से गौत्र कर्म का बंध होता है।
8. पटाखों से लोगों की नींद व विद्यार्थियों की पढाई में अंतराय पडता है। जिससे अंतराय कर्म का बंध होता है।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋ ❋

नौ तत्व का सारांश

प्रश्न :– जीव व अजीव का ज्ञान बोध क्यों होना चाहिये?

उत्तर :– सभी जीव दुख से मुक्ति पाना चाहते हैं, किन्तु सत्य एवं सार्थक उपायों के अभाव में यह इच्छा पूरी नहीं हो पाती। अतः सर्व प्रथम तत्व के स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है ,क्योंकि हम 'पर' को 'स्व' मानने की भूल कर बैठते हैं तथा उसे ही पाने का प्रयास करते हैं। परिणाम स्वरूप दुखी होते हैं। 'स्व' यानि आत्मा जो जीव तत्व है । 'पर' का मतलब पुद्गल है। हम आत्मा के जतन के विषय में तो सोचते नहीं और पुद्गल यानि शरीर का जतन करते रहते हैं ।

प्रश्न :– जीव को देखा नहीं फिर कैसे जानते हैं ?

उत्तर :– जीव अरूपी होने से दिखाई नहीं देता । जैसे किसी मृत व्यक्ति के शव को पत्थर मारने से वह बोलता नहीं लेकिन अगर वही पत्थर किसी जीवित व्यक्ति को मारेंगे तो वह जरूर चिल्लायेगा। यह उसका चिल्लाना (संवेदना,चेतना) ही उसमें जीव होना प्रकट करता है।

प्रश्न :– अजीव पदार्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर :– अचेतन पदार्थ को अजीव कहते हैं । अधर्मास्तिकाय पदार्थ अजीव होते हैं ।

प्रश्न :– पुण्य का स्वरूप क्या है?

उत्तर :– जो क्रिया आत्मा को पवित्र करती है, जिसकी प्रकृति सुखदायक है, जिसकी प्राप्ति दुर्लभ है, लेकिन उसका उपयोग सुखदायक है, एवं उसका परिणाम शुभ होता है वो ही पुण्य है ।

प्रश्न :– पुण्य की प्राप्ति कैसे की जा सकती है?

उत्तर :– हर पल शुभ एवं सर्वत्र सात्विक भाव से विशेषतया निम्नानुसार पुण्य प्राप्त किया जा सकता है ।

1. अन्न पुण्य :– यानि अन्नदान करने से ।
2. पान पुण्य :– जलदान देने से ।

3. लयण पुण्यः स्थान प्रदान करने से ।
4. शयण पुण्यः पाट, बिछौना आदि दान देने से ।
5. वस्त्र पुण्यः वस्त्रदान देने से ।
6. मन पुण्य : मन को शुद्ध एवं शुभ रखने से ।
7. वचन पुण्यः मुंह से शुभ वचन बोलने से ।
8. काय पुण्यः काया द्वारा जीव दया पालने से ।
9. नमस्कार पुण्य : गुणीजनो को बारंबार नमस्कार करने से।

प्रश्न :– पाप का स्वरूप क्या है?

उत्तर :– जो क्रिया आत्मा को अपवित्र करे, मलीन करे वो पाप है। इसकी प्राप्ति 18 प्रकार से होती है । इसका उपभोग दुखदायक एवं परिणाम अशुभ होता है ।

प्रश्न :– आश्रव तत्व क्या है? इसकी जानकारी क्यों आवश्यक है?

उत्तर :– जीव की शुभाशुभ प्रकृति से आकर्षित होकर कर्मवर्गणा जीव रूपी जल के तालाब में पुण्य एवं पाप रूपी जल प्रवाह आता रहता है । यानि जिस तत्व द्वारा आत्मा कर्म बंधन में बंधती है, वह आश्रव तत्व है । 'स्व' आत्मोद्धार के लिये इसकी जानकारी आवश्यक है।

प्रश्न :– संवर का स्वरूप क्या है ?

उत्तर :– आश्रव तत्व की वृद्धि जिस तत्व से रूकती है, वह संवर है। शुभ क्रिया करते हुए भी यदि पाप के विचारों का उपद्रव मन में होता रहता है तो वो शुभ क्रिया भी उचित फल नहीं देती । अतः शुभ क्रिया के फल की प्राप्ति के लिये मन में उठते पाप विचार के प्रवाह को रोकना नितांत आवश्यक है। जिस प्रकार गटर में आने वाले गंदे पानी के प्रवाह को रोका न जाये तो, उसमें लाख अन्तर की शीशियां उडलने पर भी उक्त गटर से सुगंध नहीं आ सकती ।

प्रश्न :– जीव का स्वरूप क्या है?

उत्तर :– दर्शन, ज्ञान, चारित्र यही जीव का स्वरूप है । इसके सिवाय (धन पुत्र, पत्नी) इत्यादि जीव की पहचान नहीं है।

इन संबंधों को बांधना भी जीव के लिये दुखदायी होता है। यह बात जानकार ही जीव का सच्चा स्वरूप जाना जा सकता हैं । जीव के ऐसे सच्चे स्वरूप को प्रगट करने के लिये किये गये सच्चे उपाय से ही सच्चा सुख पाया जा सकता हैं।

प्रश्न :– निर्जरा का स्वरूप क्या हैं व उसकी आवश्यकता क्या हैं?

उत्तर :– अशतः कर्म का नाश करना निर्जरा है । मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा वाला जीव एक साथ सभी कर्म बंधन समाप्त नहीं कर सकता । किन्तु तप व जप इत्यादि द्वारा थोडे कर्म– बंधन तो समाप्त कर ही सकता है। शायद मोक्ष प्राप्ति में सफल न भी हो पाय तो भी स्वयं को दुर्गति से तो बचा ही सकता हैं।

प्रश्न :– बंध तत्व का स्वरूप क्या है ?

उत्तर :– क्षीर नीर की तरह कर्म का आत्मा के साथ बंधन ही बंध – तत्व है । (क्षीर नीर यानि क्षीर+जल) कर्म बंध चार कारणों से होता है । 1. मिथ्यात्व 2. अव्रत 3. कषाय 4. योग ।

प्रश्न :– मोक्ष तत्व का स्वरूप क्या हैं ?

उत्तर :– सर्व दुखों का अंत मोक्ष है । स्वयं में जब आत्म स्वरूप प्रगट हो जाय वह स्थिति ही मोक्ष है । जैसे रात में निद्रा में जो आनन्द होता है वैसा ही आनन्द जब हमें शाश्वत रूप में मिल जाय यानि जन्म मरण के बंधन से संपूर्ण मुक्ति जब हम पा जाय उसे मोक्ष की स्थिति कहते हैं ।

प्रश्न :– नौ कषाय कौन कौन से हैं?

उत्तर :– 1. हास्य 2. रति 3. अरति 4. भय 5. शोक 6. जुगुप्सा 7. स्त्रीवेद 8. पुरूषवेद 9. नपुंसक वेद ।

प्रश्न :– योग वक्रता किसे कहते हैं?

उत्तर :– मन, वचन व काया में अन्तर होना, तथा मन, वचन, काया की अशुभ प्रवृति को योग वक्रता कहते हैं ।

oooooooooooooooooooooooooooo

जीव विचार संबंधी प्रश्न

प्रश्न :– जीव के कितने प्रकार हैं ?

उत्तर :– भव्य जीव :– मोक्ष जाने की योग्यता वाला ।
अभव्य :– मोक्ष जाने के लिये अयोग्य ।
जाति भव्य :– मोक्ष जाने की योग्यता होते हुए भी सामग्री के अभाव के कारण जा नही सकता ।
भव्यत्व :– प्रत्येक जीव की विशेष प्रकार की योग्यता।

प्रश्न :– व्यवहार राशि वाले जीव कौन से कहलाते हैं?

उत्तर :– जो जीव कम से कम एक बार भी निगोद का स्थान छोडकर पृथ्वीकाय में आये हों, वे व्यवहार राशि वाले जीव कहलाते हैं?

प्रश्न :– अव्यवहार राशि वाले जीव कौन से कहलाते हैं?

उत्तर :– जो जीव एक बार भी निगोद से अलग नहीं हुए हों, वे अव्यवहार राशि वाले जीव कहलाते हैं ।

प्रश्न :– विकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर :– दो इन्द्रिय जीव जैसे (अरीया) त्रेइन्द्रिय जैसे (कीडी – मकोडा) चउरेन्द्रिय जीव (भमरी व बिच्छू) आदि विकलेन्द्रिय जीव कहलाते हैं।

प्रश्न :– पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर :– आहार आदि ग्रहण करके पुद्गल शरीर रूप धारण करता है। पुद्गल की उक्त शक्ति को पर्याप्ति कहते हैं।

प्रश्न :– किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?

उत्तर :– स्वयं से निम्न कोटि के जीवों पर दयाभाव रखना चाहिये। समान प्राणियों के लिये मैत्री भाव तथा स्वयं से बलशालियों के लिये पूज्य भाव रखना चाहिये।

प्रश्न :– पुद्गल किसे कहते है । उनके कितने भेद हैं?

उत्तर :– सडन, पडन, विध्वंसनीय तथा पृथकीकरण के योग्य पदार्थ पुद्गल कहलाता हैं । उसके चार भेद हैं।
1. स्कंध 2. देश 3. प्रदेश 4. परमाणु ।

प्रश्न :– धर्म के कितने प्रकार हैं?

उत्तर :– धर्म के चार प्रकार हैं। 1. दान 2. शियल (शील) 3. तप

4. भाव से दो प्रकार के धर्म ये भी हैं। 1.साधु धर्म 2. श्रावक धर्म।

प्रश्न :– द्रव्य प्राण किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर :– जिसके सहयोग से प्राणी जीवित रहता है तथा जिसके असहयोग से प्राणी मरता हैं, उसे द्रव्य प्राण कहते हैं। उसके 10 भेद हैं । वे निम्न हैं । 1) पाँच इंद्रिय 2) तीन बल 3) आयुष्य एंव 4) श्वासोश्वास ।

प्रश्न :– परमाणु किसे कहते हैं?

उत्तर :– स्कंध या प्रदेश से अलग हुआ अविभाज्य सूक्ष्मतम् अंश परमाणु कहलाता हैं ।

प्रश्न :– सिद्ध जीव किसे कहते हैं?

उत्तर :– चार घाती कर्म व चार अघाती कर्म यानी कुल अष्ठ कर्मों से मुक्त जीव सिद्ध कहलाते हैं। वे जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त होकर सिद्ध शीला पर स्थिर हो जाते हैं।

प्रश्न :– जब जीव मरता ही नहीं तो फिर पाप कैसे लगता है?

उत्तर :– आत्मा अमर है पर वह नित नवीन योनि धारण करती हैं। उक्त योनि का अपना प्राण होता है और प्राण हर योनि के जीव को प्रिय होता हैं, ऐसे जीवों के अति प्रिय प्राणों को नष्ट करने से या कष्ट पहुंचाने से पाप लगता है।

प्रश्न :– परमाधामी किसे कहते हैं ? वे कितने हैं?

उत्तर :– घोर पापाचार एवं अन्य जीवों के साथ क्रूर व्यवहार करने वाले असुर देवों को परमाधामी कहते हैं। जो तीसरी नरक तक के जीवों को असीम दुख देते हैं, वे पन्द्रह प्रकार के हैं।

प्रश्न :– अजीव द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उत्तर :– 1. धर्मास्तिकाय 2. अधर्मास्तिाकय 3. आकाशास्तिकाय 4. पुद्गलास्तिकाय 5. काल ।

प्रश्न :– भव्य जीव कितने प्रकार के होते हैं ? तथा कौन कौन से ?

उत्तर :– भव्य जीव निम्न प्रकार के होते हैं ।

1. आसन्न जीव : जल्दी मोक्ष जाने वाले ।
2. मध्यम् भव्य : कुछ भव में मोक्ष जाने वाले ।
3. दुर्भव्य : कई भवों के पश्चात् मोक्ष जाने वाले।

प्रश्न :– संसारी जीव के सात सुख कौन कौन से हैं?

उत्तर :– 1. निरोगी काया 2. ऋण मुक्त 3. यात्रा प्रवास के सिवाय परदेश न जाना पडे 4. सुपात्र पत्नी 5. पुत्र पौत्र का सुख 6.स्वजनों के बीच रहने का अवसर 7. समाज में प्रतिष्ठा हो।

प्रश्न :– उत्तम से अति उत्तम आराधना करने वाले कितने देवलोक तक जा सकते हैं?

उत्तर :– उत्तम से उत्तम आराधना करने वाले श्रावक अधिक से अधिक बारहवें देवलोक तक जा सकते हैं ।

प्रश्न :– अभव्य जीव मरकर कहां तक जा सकता है?

उत्तर :– अभव्य संयमी जीव उत्कृष्ट आराधना करके भी नौवें ग्रैवेयक तक तो जा सकता है पर अनुत्तर विमान तक नहीं जा सकता है।

प्रश्न :– वर्गणा के कितने भेद हैं?

उत्तर :– वर्गणा के मुख्य आठ भेद हैं । 1. औदारिक वर्गणा 2. वैक्रिय वर्गणा 3. आहारक वर्गणा 4. तेजस वर्गणा 5. भाषा वर्गणा 6. श्वासोश्वासो वर्गणा 7. मनो वर्गणा 8. कार्मण वर्गणा।

प्रश्न :– संघयण किसे कहते हैं? और उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर :– शरीर की विभिन्न हड्डियों की मजबूती संघयण कहलाती हैं। उसके छः प्रकार हैं। 1. वज्र ऋषभनाराच 2. ऋषभनाराच 3. नाराच 4. अर्ध नाराच 5. कीलीका 6. सेवार्त।

प्रश्न :– संस्थान का अर्थ क्या हैं? तथा उसके कितने प्रकार हैं?

उत्तर :– शरीर के आकार को संस्थान कहते हैं । उसके छः प्रकार हैं। 1. सम चतुरस्त्र 2. न्यग्रोध परिमंडल 3.सादी 4. वामन 5. कुब्ज 6. हुंडक ।

प्रश्न :– एक बार के मैथुन सेवन से कितनी हिंसा होती है?

उत्तर :– अब्रह्मचर्य सेवन से भयंकर हिंसा होती है । इससे

लगभग नौ लाख असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा होती है ।

प्रश्न :– संसार का अर्थ क्या है? क्या इस जगत का कोई कर्ता है?

उत्तर :– अनादि काल से जीव निगोद में आठ कर्मो के आवरण से ढंका हुआ घिरा हुआ रहता है । एक जीव यानि आत्मा का जब मोक्ष होता है, तब अन्य जीव अपने भव्यत्व के परिपाक से बाहर निकलता है। फिर अनंत भव चक्र में भ्रमण करते हुए अनेक जीवों के रूप में प्रकट होता रहता है । आत्माओं के इसी अनन्त यात्रा क्रम को संसार कहते हैं । यह संसार संयोग निर्मित है, स्व निर्मित है। इसका कोई निर्माता नहीं है। अनन्त भवचक्र में भ्रमण कर रही आत्माएं चिर कालीन सनातन पुद्‌गल का आश्रय तो लेती ही रही हैं। वे विभिन्न काल में विभिन्न रूप लेती ही रही हैं तथा लेती ही रहेगी। यह प्रक्रिया ही संसार है।

OOO⌘O⌘O⌘OOO

–: नरकवासी का पत्र :–

हे बन्धुवर,

यह पत्र मैं नरक में से लिख रहा हूँ। तुम तो कुशल होगे ही, मेरी अकुशलता के समाचार लिख रहा हूँ। भाई, तेरे से अलग होकर मै सबसे पहले नर्क में कुंभी (छोटे मुँह वाले घड़े जैसा पात्र) में पैदा हुआ । थोड़ी ही देर में मेरे जन्म का समाचार जान राक्षस (यानी परमाधामी) दौड के आये। भयंकर अंधेरा था, फिर भी जोर–जोर से चिल्ला रहे थे, पकड़ो–पकड़ो छोटी सी कुंभी में से बाहर आना मेरे लिये कठिन था । तभी एक राक्षस चिमटा लेकर आया और चिमटे से पकड़ कर मुझे बाहर खींचा, तुम्हीं सोचो कितना दर्द हुआ होगा मुझे।

अभी तो मैं इस वेदना के दर्द से उभरा भी न था कि तभी एक राक्षस आया , जिसने मुझे याद करवाया 'हे दुष्ट ! माँ बाप की सेवा करने के बदले पत्नी के बहकावे में आकर उनसे मारपीट करता था। ले चख अब उसका मजा और फिर भीम जैसी गदा लेकर मुझे मारने लगा। भाई! उस शस्त्र के एक ही प्रहार से किसी भी मनुष्य की

मौत हो जाय । परंतु यहां तो मुझे ऐसे प्रहार बार–बार झेलने पड़ रहे हैं, इससे मुझे बेहद पीडा हो रही है। मजबूरी है, क्योंकि यहाँ का आयुष्य पूरा किये बिना कोई मर भी नहीं सकता । लगता है यहाँ मुझे मरने की इच्छा में ही शेष जीवन पूरा करना होगा।

भैया! यहाँ का आयुष्य दस हजार वर्ष से असख्य वर्षों तक का होता है। शरीर पारे जैसा या गीले आटे की लुगदी जैसा होता है। काटो तो टुकड़े टुकड़े हो जाता है, तथा उन टुकड़ों को पुनः जोडो तो इकट्टा हो जाता है तथा पुनः जीवित हो जाता है। तुझे मालूम है यहाँ की गर्मी कैसी है ? नहीं न ! हाँ तुझे तो मालूम भी कैसे होगा ? हाँ तो सुन,अपने देश की टाटा फाउंड्री मालूम है जहाँ लोहा पिघाला जाता है, नरक की इस गर्मी की तुलना में, उसके भट्टे की गर्मी तो मुझे गुलाबी सर्दी जैसी प्रतीत होती है। शायद तुम सोचोगे कि वहाँ की गर्मी अगर ऐसी है, तो वहाँ सर्दी कैसी होगी ?

तो सुन! जो कोई मुझे तेरे हिमालय के एवरेस्ट पर खुले शरीर रख दें तो आराम से स्वयं फेश होने के लिए वहाँ चहल कदमी करूं। यानि वो यहाँ की सर्दी के सामने कुछ भी नहीं । सच बात तो यह है कि यहाँ खून को जमा दे, ऐसी सर्दी होती है। काँप गया न तू । यह सब तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ ताकि तू स्वयं को नरक की उन तकलीफों से बचाने के लिये, वहाँ धरती पर भूल से भी कोई गलत कार्य न करे।

मेरे शरीर की कोई आकृति नहीं है, बस मिटटी के पिण्ड जैसा मनुष्य हूँ। जिसे करोड़ों रोग लग गए हैं। (नरक के जीव को पाँच करोड, अडसठ लाख , नवाणु हजार पाँच सौ चोरासी रोग होते हैं) तू ही सोच, इतना बीमार जीव कितने दुख पाता होगा। वेतरणी खूनी की नदी यहाँ बहती है तथा पेड़ ऐसे हैं जिन्हे छूने से शरीर से खून रिसने का अहसास होता है। यानि वे वृक्ष कांटेदार कवच जैसे होते हैं। तुझे डर तो लग रहा होगा, पर यह सब तुझे बताना जरूरी है।

एक बात और हमारी आधुनिका जो गर्भपात करवाने से नहीं झिझकती उन्हें यहाँ सबसे बडी सजा मिलती है । उनका वहाँ पेट फाड़ा जाता है तथा मुँह में गर्म शीशा डाला जाता है। इसके उपरांत भवोभव तक वे निः संतान रहने की सजा पाती हैं। तथा इस काम के अनुमोदक भी यही सजा पाते हैं।

अरे भाई ! आगे सुन रात्रि भोजन करने वाली आत्माओं के मुँह में यहाँ गर्म लावा डाल दिया जाता है। जमीकंद कंदमूल खाने वालों की यहाँ जीभ काट दी जाती है। साथ ही यह याद दिलाया जाता

है कि "यह जानते हुए भी कि कंदमूल व जमीकंद के एक सूई के अग्र भाग जितने भाग में भी अनंत जीव होते हैं, फिर भी तुमने उन्हें चाव से खाया तथा तिथी के दिन वो सब घर में नहीं आया, तो बाजार में खड़े रहकर चाव से खाया । ले अब चख यहाँ उसका मजा !

द्विदल (यानि कठोल के साथ कच्चा दूध दही वैगरह जिनमें दो इन्द्रिय जीव पैदा हो गये हैं वैसा) खाते समय दो इन्द्रिय जीवों की हत्या की। फिर भी तेरे दिल में दया नहीं आई , ऐसा कहते हुए अंसख्य राक्षस मुझ पर टूट पडते हैं, मै रो पडता फिर भी मेरी आवाज वहाँ सुनने वाला कोई नहीं ।

तुझे आइसकीम, ठंडे पेय , शराब, तम्बाकू, आदि के नशे की क्या सजा है , मालुम है ? वहाँ ऐसा करने वाले के मुँह में पिघला हुआ शीशा डाल दिया जाता है। परस्त्री को सताना तथा परस्त्री के साथ में मैथुन करने वाले को लोहे की गरम लाल पुतली के साथ आलिंगन करने को कहा जाता है। ऐसे में उस जीव की कैसी हालत होती होगी, उसका अनुमान लगाकर तो देखना !

मेरे दोस्त ! बाजार के बिना सुखाये हुए आचार, बोल, बासी अनाज आदि खाने का दंड भी सुन ले। ऐसा काम करने वाली आत्माओं के मुँह में खून व मांस डालकर खिलाते हैं। अनछना पानी पीने वाले को वहाँ दुर्गन्ध भरा व कीड़ों से भरा पानी पीने को दिया जाता है । तुम्हीं सोचो। कितनी भी प्यास लगी हो तो भी ऐसा पानी कैसे पीया जा सकता है ?

शिकार के शौकीन निरपराध पशुओं को तीर से भेदने वाले, मांसाहार करने वाले, कत्लखाना चलाने वाले, मुर्गीपालन करने वाले तथा मुर्गी के अंडों से पैसा कमाने वाले यहाँ क्या सजा पाते हैं ? क्या तू जानना चाहता है यह ? तो सुन, उन जीवों को नर्क में बार बार काटा जाता है, काट काट कर फिर जोडा जाता है।

भाई, तुझे लगता है कि इतना तो बहुत हो गया, परंतु नहीं, अभी तो बहुत सहना है। देवगुरू जैन धर्म की निंदा की, दूसरे धर्म के देवों को अच्छा कहा, ऐसी याद दिला कर वे हमारी जीभ पर तेज धार वाले हथियार घुसा देते हैं ।

यह सब लिखने का अवसर भी मिलना हमें मुश्किल है पर आज प्रभू का जन्म कल्याणक है। अतः नरक में थोडा प्रकाश हुआ है। और हमें भी थोडा आराम मिला है। अतः यह पत्र तुम्हें लिख पाया हूँ वरना असंभव था यह। बस यही ।

– संकलित

प्रभु संबंधित प्रश्न

उत्तर :– परमात्मा की देशना छः हजार चार सौ रागों में चलती है। मात्र मालकोश में ही नहीं ।

प्रश्न :– अरिहंत परमात्मा के पांच कल्याणकों के नाम बताइऐ?

उत्तर :– 1.च्यवन कल्याणक 2.जन्म कल्याणक 3. दीक्षा कल्याणक 4.केवलज्ञान कल्याणक 5.निर्वाण कल्याणक।

प्रश्न :– अनागत चौवीसी के प्रथम तीर्थंकर कब होंगे ? तथा उनका नाम क्या होगा ?

उत्तर :– आज से 81500 वर्ष पश्चात् प्रथम तीर्थंकर के रूप में पदम्नाभ नाम से श्रेणीक महाराजा की आत्मा पुनः जन्म लेगी।

प्रश्न :– भगवान दीक्षा लेने के पहले कितना दान देते हैं?

उत्तर :– भगवान स्वयं की दीक्षा तिथि से एक वर्ष पहले से प्रतिदिन दान देते हैं तथा कुल 388 करोड 80 लाख मुद्रा का दान देते हैं।

प्रश्न :– प्रभु महावीर ने कौन कौन से तप किये थे?

उत्तर :– प्रभु महावीर द्वारा किये गये तप निम्न हैं:– 1. छः मास का उपवास एक बार। 2.175 उपवास एक बार 3. चार मास उपवास नौ बार 4. तीन महीने का उपवास दो बार 5. दो बार ढाई मास 6. दो बार डेढ मास 7.12 मास क्षमण 8. 12 अट्ठम 9. 12पंचरांगी 9. 229 छट्ठ 10. एक भद्रप्रतिमा तप 11.एक महा भद्रप्रतिमा 12. एक सर्वतो भद्रप्रतिमा । कुल मिलाकर महावीर प्रभु ने 12 साल एवं 6 मास में 349 दिन आहार लिया तथा 48 मिनिट का प्रमाद किया । (संदर्भ महावीर चरित्र)

प्रश्न :– तीर्थंकर भगवान छः आरों में से कौन से आरे में उत्पन्न होते हैं?

उत्तर :– तीर्थंकर भगवान नियमानुसार तीसरे या चौथे आरे में ही होते हैं।

प्रश्न :– वीर प्रभु ने अपने 27 भवों में कौन कौन से बड़े

पद प्राप्त किये?

उत्तर :– श्रेयांसनाथ भगवान के शासनकाल में अपने 18 वें भव में त्रिपृष्ठ वासुदेव हुए । 23वें भव में प्रियमित्र चक्रवर्ती हुए तथा 27 वें भव में स्वयं भगवान महावीर हुए ।

प्रश्न :– प्रभु महावीर के साधु–साध्वी व श्रावक श्राविकाओं की संख्या क्या है?

उत्तर :– साधु 14000, साध्वी 36000, श्रावक 1,59,000 व श्राविकाएं कुल थी 3,18,000।

प्रश्न :– वीर प्रभु से दीक्षित होने वाले मुख्य श्रीमतों के नाम गिनाईये?

उत्तर :– वीर प्रभु से दीक्षित होने वाले मुख्य श्रीमंत निम्न हैं । 1. गोभद सेठ 2. शालीभद्र 3. अभयकुमार 4. सुदर्शन सेठ 5. धन्यकुमार आदि।

प्रश्न :– चंद्र केवली का नाम कितनी चौबीसी तक रहेगा?

उत्तर :– आठ सौ चौबीसी तक।

प्रश्न :– तीर्थंकर का स्वरूप कैसा है?

उत्तर :– भगवान सर्वांग सुंदर होते हैं । कान स्कंध तक लम्बे होते हैं , हाथ घुटनों तक लम्बे होते हैं। उनके शरीर का प्रमाण 108 अंगुल होता है। बारह अंगुल की शिखा होती है। विशेष प्रभू के शरीर पर 108 लक्षण होते हैं।

प्रश्न :– भगवान ने केवलज्ञान से क्या देखा?

उत्तर :– उन्होंने देखा कि समस्त संसार दुखी है । उनका दुख दिन प्रतिदिन बढता ही जा रहा है । यह सर्वत्र विद्यमान जो अज्ञान के कारण है , अतः इन्हें प्रतिबोध देना अति आवश्यक है।

प्रश्न :– प्रभु सब जीवों को शासन रसिक क्यों बनाना चाहते हैं?

उत्तर :– क्योंकि प्रभु के हृदय में प्राणीमात्र के लिये मैत्री भाव है। वे तो करूणा सागर हैं और सबका कल्याण चाहते हैं।

प्रश्न :– परमात्मा का बल कितना है ?

उत्तर :– परमात्मा के बल का अनुमान कुछ इस तरह लगाया जा सकता है ।

12 योद्धाओं का बल – एक बैल में ।
10 बैलों का बल – एक अश्व में ।
12 अश्वों का बल – एक भैंसे में ।
500 भैंसों का बल – एक हाथी में ।
500 हाथियों का बल – एक केशरी सिंह में ।
2080 केशरीसिहों का बल – एक अष्टापद में ।
10 अष्टापद का बल – एक वासुदेव में ।
2. वासुदेव का बल – एक चक्रवर्ती में ।
1 करोड चक्रवर्ती का बल – एक देव में ।
1 करोड देवों का बल – एक इन्द्र में ।

ऐसे अनंत इन्द्र मिलकर भी प्रभु की तर्जनी अंगुली भी नहीं झुका सकते ।

प्रश्न :– प्रभु महावीर के कान में कीले क्यों ठोके गये थे?

उत्तर :– महावीर प्रभु के जीव ने त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में शय्या पालक के कान में तपता शीशा डाला था । इसका परिणाम थी वह घटना।

प्रश्न :– गिरनार में नेमनाथ प्रभु की प्रतिमा किसने भराई?

उत्तर :– गत चौबीसी के तीसरे तीर्थंकर सागरम प्रभु से बोध पाकर ब्रह्मेन्द्र ने नेमनाथ प्रभु की प्रतिमा भरवाई थी। बाद में वे उन्हीं प्रभु के गणधर बनकर मोक्ष गये ।

प्रश्न :– श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा किसने भराई?

उत्तर :– गत चौबीसी के नवमें तीर्थंकर दामोदर स्वामी से बोध पाकर आषाढी श्रावक ने यह प्रतिमा भराई थी, बाद में वे ही श्रावक उनके गणधर बनकर मोक्ष गये। (धर्मग्रंथ)

आहार - विहार

प्रश्न :– रात्रि भोजन न करने से क्या लाभ है?

उत्तर :– रात्रि भोजन नहीं करने से अनेक सूक्ष्म जीवों की हत्या के पाप से बचा जा सकता है । मात्र एक माह रात्रि भोजन नहीं करने से और सुबह नवकारसी का पच्चक्खान पालने से 15 उपवास के पुण्य के समकक्ष पुण्य प्राप्त किया जा सकता है ।

प्रश्न :– पानी छानकर क्यों पीना चाहिये?

उत्तर :– पानी में अनेकों जीव होते हैं जो अपनी खुली आँखों से नहीं देखे जा सकते। उन्हीं जीवों की रक्षा के लिये पानी छानकर पीना चाहिये। यह भौतिक दृष्टि से भी स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद है। नल पर कपड़े की थैली बाँधने से जीवों का रक्षण नहीं होता । वे अंदर ही अंदर पड़े पड़े समाप्त हो जाते हैं, अतः उन थैलियों को रोज धोना चाहिये। कुमारपाल महाराजा के शासन काल में उनके सात लाख घोड़ों को भी पानी छानकर पिलाया जाता था।

प्रश्न :– द्विदल के विषय में आप क्या जानते हैं? यह खाने योग्य क्यों नहीं?

उत्तर :– कच्चे दूध, दही या छाछ के साथ किसी भी कठोल का संयोग द्विदल कहलाता है। द्विदल से असंख्य बेइन्द्रिय जीवों की उत्पति होती है । द्विदल सेवन से उन जीवों का नाश होता है। जो पाप है। इसके साथ साथ द्विदल सेवन से अपने शरीर में विजातीय द्रव्य पैदा होते हैं । जो शरीर के लिये हानिकारक है। इसलिये दहीवडे जैसी कोई भी आईटम बनाने से पहले दही को गरम करना चाहिये, नहीं तो द्विदल उपयोग का पाप लगता है ।

प्रश्न :– पर्व तिथि के दिन हरी सब्जी क्यों नहीं खानी चाहिये?

उत्तर :— पर्व तिथि के दिन चंद्र पृथ्वी व शरीर सीधे एक दिशा में आ जाते हैं तब समुद्र के पानी की तरह शरीर में उपस्थित जल तत्व में भी परिवर्तन आता है । इसके कारण अग्नितत्व मंद पडता है तथा वायु तत्व बढने लगता है जो मस्तिष्क को प्रभावित कर उसमें विकृति पैदा कर देता है। हरी सब्जी में 90: पानी होता है, अतः अगर तिथि के दिन हरी सब्जी न खायी जाय तो शरीर में मौजूद जल तत्व संतुलित बना रहता है। दूसरी बात यह भी है कि हरी सब्जी स्वादिष्ट होने के कारण मन में राग भी उत्पन्न करती है और जब तक राग है , हमें भव भ्रमण से मुक्ति नहीं मिल सकती ।

प्रश्न :— आलू प्याज क्यों नहीं खाने चाहिये ?

उत्तर :— आलू प्याज में सूई के अग्र भाग जितने अंश में अनंत जीव विद्यमान होते हैं । तथा इनमें गंध भी तीव्र होती है, जो कामोतेजक भी हैं । अतः इन्हें नहीं खाना चाहिये । क्योंकि काम क्रोध और लोभ ये तीनों हमें संसार में भटकाने वाले हैं।

प्रश्न :— पानी उबालने से तेऊकाय जीव की बडी विराधना होती है। यह दोष है फिर गरम पानी क्यों पीना चाहिये?

उत्तर :— पानी उबालने से कुछ हिंसा अवश्य होती है, किन्तु उसके बाद नौ घंटे तक उसमें जीव उत्पन्न नहीं होते। जबकि कच्चे पानी में हर पल जीव उत्पन्न होते रहते हैं।

बत्तीस अनंतकाय की जानकारी

वनस्पतिकाय के दो प्रकार होते हैं :—

1. प्रत्येक वनस्पतिकाय 2. साधारण वनस्पति काय। साधारण वनस्पतिकाय में अनन्ता जीव होते हैं। इसमें बत्तीस अनन्तकाय अरवाद्य हैं । यानि श्रावक को इसका सेवन नहीं करना *चाहिये। विद्वानों का मत है कि इन्हें खाने से केन्सर होता है।*

उन बत्तीस अनन्तकाय को पाँच विभागों में बाँटा जा सकता है।

अ. सब्जी, आ. भाजी, इ. पत्रवेल, ई. औषध, उ. जंगली वनस्पति।

अ. शाक यानि सब्जी :– 1. शकरकंद 2. आलू 3, गाजर मूली 4 प्याज 5. लहसुण 6. वंशकरेला 7. सूरण 8. कुणी ईमली।
आ. भाजी :– 1. पालक की भाजी 2. वन्त्युले की भाजी 3. थेग 4. हरीमौथ 5. किसलय ।
इ. बेल :– 1. अमृतवेल 2. विनणीवेल 3. गडूचीवेल 4. सुक्करवेल 5. लवणवेल 6. शतावरी 7. गिरी कर्णिकावेल (गरमर)।
ई. औषध :– 1. लवणक 2. कौरा 3. हरी हलइदर 4. हरा अदरक (ताजा) 5. कसुमर।
उ. जंगली वनस्पति :– 1. थोर 2. वज्रकंद 3. लोढक 4. खरसीया 5. खिलोडीकंद 6. बील्ली कोटाय।

प्रश्न :– जैन धर्म की दृष्टि 22 अभक्ष्य कौन कौन से हैं? उन्हें कितने भागों में बाँटा सकता है?

उत्तर :– जैन दर्शन की दृष्टि से 22 अभक्ष्य हैं । इन्हें छः भागों में बाँटा जा सकता है । वे निम्न हैं :–

1. संयोगि अभक्ष्यः– द्विदल कच्ची दही के साथ दाल, चलित रस, बेर व अचार, रात्रि भोजन
2. महाविगई :– मांस, मदिरा, शहद, मक्खन
3. 32 अनंतकाय :– 9 शाक, 5 प्रकार के औषध, 5 भाजी, 6 जंगली वनस्पती, 7 बेल के प्रकार।
4. फल :– बहुबीज, बेंगन, तुच्छफल जैसे पीले गुंदे, अनजाने फल आदि।
5. टेटे :– बगरद के टेटे, पीपल के टेटे, पारस पीपल के टेटे, काले उंबर का टेटा, सादा उंबर का टेटा।
6. तुच्छ वस्तु :– बरफ, ओले, कच्ची मिट्टी , जहर।

When you are leaving home to go to the hotel , think that it may push you to a hospital , where you may get very according means to be pushed yourself to the hell, because hotel foods are able enough to do so . So please do not eat hotel foods if you are a Jain and purely dedicated to the Jain principles.

चरक ऋषी का संदेश

आयुर्वेद के पितामह तुल्य श्री चरक ऋषी ने अपने ग्रंथ आहार, आरोग्य एवं आध्यात्म में कुछ ऐसी अद्‌भुत बातें बतलाई हैं कि इसे पढ़कर अमेरिकन वैज्ञानिक एवं विद्वान भी इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे । उन्होंने पहले इन तथ्यों का गहन अध्ययन किया , सच्चाई को जाना , फिर आखिर इन तथ्यों को मान्यता भी दी। इतना ही नहीं उन नियमों का पालन भी प्रारंभ कर दिया। वे ही तथ्य संक्षिप्त में यहां उल्लेखित हैं।

1. धर्म, अर्थ काम और मोक्ष का आधार आरोग्य है ।

2. सभी बीमारियों का मूल अनुचित आहार है ।

3. भोजन का स्वाद पसंद आ जाने पर भी उसे अधिक मात्रा में नहीं लेना चाहिये ।

4. सप्रमाण एवं सात्विक आहार से सुख एवं दीर्घ आयुष्य प्राप्त होता है ।

5. यह शरीर एक महल है । आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य इसके स्तंभ हैं।

6. हमारे स्वास्थ्य के लिये सही यही है कि हम आरोग्य पूर्ण आहार लें, अल्प आहार लें एवं समय पर आहार लें ।

7. हमेशा अच्छी भूख लगने के बाद भोजन करें, उचित एवं प्रमाण सर भोजन करें, योग्य स्थान में भोजन करें । (यानि होटल में नहीं) खाने में ज्यादा जल्दी भी नहीं करें तथा ज्यादा विलंब भी न करे ।

8. खाना खाते समय मौन रखें, हंसे भी नहीं, मन को भटकने न दें । स्थिर मन से अच्छी तरह भोजन करें । टी. वी. देखते हुए नहीं।

9. हमने जरूरत से ज्यादा भोजन कर लिया है इसकी पहचान निम्न है ।

1. पेट में तनाव पैदा होता है । 2. पेट की दोनों बाजू ज्यादा फूल जाती है । 3. पेट भारी लगता है । 4. उठने बैठने में तकलीफ होती है । 5. सांस लेने में तकलीफ का अनुभव 6. दूसरे दिन शौच निवृति साफ नहीं होती है। अगर ऐसा है तो समझ लीजिये आपने ज्यादा खा लिया है।

10. भारी खुराक (यानि मिठाई) ठंडा पेय (शीतल कुलड्रींक्स), रूखा (यानि ड्रायफुड), सूखा हुआ (यानि ब्रेडपाव आदि), कठिन खाना (यानि पीपरमट, चॉकलेट), अपवित्र खुराक (यानि होटल का खाना), असमय (यानि रात्रि में), एवं विरोधाभाषी खुराक लेने वाले को तथा मन में, क्रोध, सेक्स, जलन, महत्वाकांक्षा, भय, शरम, एवं उद्वेग आदि भावों को मन में रखकर भोजन लेने वाले व्यक्ति को भारी रोग होने की संभावना रहती है।

11. मनोरोग, चिंता एवं डिप्रेशन जैसे रोगों में ज्ञान विज्ञान धीरज, प्रभु स्मरण और समाधि से उचित परिणाम पाया जा सकता है। यह बात आज के वैज्ञानिक भी मानते हैं।

12. धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए धंधा करने से जीवन में शांति की प्राप्ति होती है । धर्म शास्त्रों के अध्ययन के लिये समय एवं सुख भी मिलता है ।

13. ईहलोक एवं परलोक दोनों को सुधारने के लिये व्यक्ति को निम्न आवेगों पर अवश्य अंकुश लगाना चाहिये। 1.अनुचित व्यवहार 2. लोभ 3.शोक 4. भय 5. क्रोध 6. अभिमान 7. निर्लज्जता 8. ईर्ष्या 9. अतिराग 10. परपीडा 11. कटुवचन 12. चुगलखोरी 13. झूठ 14. गप्प 15. स्त्री संभोग 16. चोरी एवं 17. हिंसा । अगर इन आवेगों को रोक लिया जाय तो अवश्य ही अनेक रोगों से बचा जा सकता है ।

14. शरीर के रोग मिटाने के लिये तीन उपाय हैं :—1. देव श्रद्धा, मंत्र जाप, पच्चक्खान, एवं मांगलिक अनुष्ठान। 2. योग्य निदान 3. मन का निग्रह, समता भाव, एवं स्वजनों के दिल की सच्ची दुआ । इन बातों को आज के डॉक्टर भी सच्चे दिल से मानने लगे हैं।

15. सतत स्वस्थ रहने के लिये संगत की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः दुष्ट, पापी चुगलखोर, झगड़ालू, तुच्छ, मसखरा, ईर्ष्यालु, लोभी, निदंक, लुच्चा, चंचल, निर्दयी, एवं अधर्मी दोस्तों की संगत से बचे। मन को मलीन होने से बचाने के लिये यह आवश्यक है।

16. जिन्हें सदैव स्वस्थ रहना है, उन्हें इतना तो करना ही होगा। 1. झूठ से 2. हराम की कमाई से 3. आपसी वैमनस्य से 4. द्वेष आदि से बचना है। अयोग्य व्यक्तियों की संगत भी त्यागना

होगा । जिस वाहन से दुर्घटना का अंदेशा हो उसकी सवारी का मोह छोडना होगा। ज्यादा जोर से हंसना भी गलत है। मंदिर की ध्वजा की परछाई, गुरू की परछाई एवं बुरी वस्तु को लांघ कर नहीं जाना चाहिये।

प्रश्न :– इस विश्व में एड्स जैसे खतरनाक रोग क्यों होते हैं?

उत्तर :– इस विषय में विद्वानों का मत यह है कि रोगों का मूल अधर्म है। जब किसी देश विशेष के नेता एवं नायक लोग अधर्म का आचरण करने लगते हैं , तब देश की आम जनता भी वैसा ही आचरण करने लगती है। जिससे देश में चारों ओर अधर्म का वातावरण फैल जाता है। ऐसा होने से हम देव कृपा से वंचित हो जाते हैं और अधर्म के फैलाव से ऋतुओं का क्रम बदल जाता है। समय पर बरसात नहीं होती या दूषित जल की वर्षा होती है । पवन भी दूषित हो जाता है। जमीन बिगड जाती है । इस तरह शुरू होती है विनाशलीला की हारमाला। ऐसे में बडे बडे राज्य समाप्त हो जाते हैं। भयंकर भूंकप जैसी आपदा भी इन्ही परिस्थतियों की प्रसूति है ।

ऐसे में संपूर्ण राष्ट्र व्यवस्था चरमरा जाती है व देश पूर्णतः असुरक्षित हो जाता है । इन्हीं परिस्थतियों में युद्ध और लडाईयाँ भी मडक उठती हैं । अतिशय क्रोध, मोह, अभिमान बढ जाते हैं। ऐसे में पैदा होता है वैमनस्य भी।

ऐसे विषाक्त वातावरण में वृद्धों की, सिद्ध पुरूषों की, ऋषियों की एवं गुरूओं की बात भी कोई नहीं सुनता । उल्टा उनका अपमान शुरू हो जाता है । साथ ही लोग पूजितों का अपमान करने से भी नहीं चूकते। परिणाम उनके दिल से मिलने वाली आशीष के बदले मिलता है श्राप। बस उसी श्राप की उत्पतियाँ हैं ये भयंकर परिस्थतियां एवं एड्स जैसी नाईलाज महामारियां।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

छोटे प्रश्न

प्रश्न :– नवकार मंत्र में कितने अक्षर होते हैं?
उत्तर :– अड़सठ अक्षर ।
प्रश्न :– नवकार मंत्र में कितने पद होते हैं?
उत्तर :– नव पद ।
प्रश्न :– नवकार मंत्र के अड़सठ अक्षर किसके प्रतीक हैं?
उत्तर :– अडसठ तीर्थ धाम ।
प्रश्न :– नवकार के नव पदों से क्या प्राप्ति हो सकती है ?
उत्तर :– नवनिधि एवं आठ संपदा।
प्रश्न :– नवकार मंत्र के प्रथम पांच पदों में किसे वंदन किया गया है?
उत्तर :– पंच परमेष्ठी को।
प्रश्न :– पंच परमेष्ठी कौन कौन से हैं ?
उत्तर :– अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु ।
प्रश्न :– सभी पापों का शमन कैसे हो सकता हैं?
उत्तर :– सच्चे मन से नवकार मंत्र के जाप से ।
प्रश्न :– हरिभद्र सूरि म.सा. ने कितने ग्रंथों की रचना की?
उत्तर :– कुल 1444 ग्रंथ ।
प्रश्न :– नवकार मंत्र किसका सारांश है?
उत्तर :– चौदह पूर्व का सारांश है ।
प्रश्न :– श्रीमद् हेमचंद्राचार्य ने कितने श्लोकों की रचना की?
उत्तर :– साढे तीन करोड़ श्लोक ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर ने प्रथम देशना कहाँ दी?
उत्तर :– ऋजुबालिका नदी के किनारे , (पावापुरी)
प्रश्न :– पर्वों का राजा कौन है ?
उत्तर :– पर्वाधिराज पर्युषण ।
प्रश्न :– राणकपुर तीर्थ का निर्माण किसने करवाया?
उत्तर :– राणकपुर तीर्थ का निर्माण श्री धन्ना पोरवाल ने करवाया।
प्रश्न :– महामंत्र किसे कहा गया है ?
उत्तर :– नवकार मंत्र को ।

प्रश्न :– तारंगा तीर्थ का निर्माण किसने करवाया था?
उत्तर :– कुमारपाल महाराजा ने ।
प्रश्न :– तारंगा तीर्थ के मूलनायक कौन?
उत्तर :– श्री अजीतनाथ प्रभु ।
प्रश्न :– जगडूशाह ने कितनी दानशालाएं बनवाई ?
उत्तर :– सात सौ ।
प्रश्न :– स्थूलिभद्रजी का नाम कितनी चौबीसी तक रहेगा?
उत्तर :– चौरासी चौबीसी तक ।
प्रश्न :– कुमारपाल महाराजा ने कितने वर्ष की उम्र में व्याकरण पढना प्रारंभ किया?
उत्तर :– 54 वर्ष की उम्र में ।
प्रश्न :– बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि कौन सी ?
उत्तर :– सम्मेत शिखर जी ।
प्रश्न :– अंतिम केवली की निर्वाण भूमि कौन सी ?
उत्तर :– राजगृही ।
प्रश्न :– जोडाक्षर रहित सूत्र कौन सा है ?
उत्तर :– संसार दावा ।
प्रश्न :– श्रावक साधु के समकक्ष कब कहलाता है ?
उत्तर :– सामायिक में ।
प्रश्न :– अनंत जीवों का मोक्ष कहाँ हुआ?
उत्तर :– तीर्थाधिराज शत्रुंजय पर ।
प्रश्न :– मयणा सुंदरी व श्रीपाल महाराजा ने कौन सी आराधना की?
उत्तर :– नवपद की आराधना की ।
प्रश्न :– भूख मिटाने के लिये चारित्र किसने लिया?
उत्तर :– संप्रति महाराजा ने अपने पूर्व भव में ।
प्रश्न :– चंपानगरी के बंद द्वार कैसे खुले?
उत्तर :– सुभद्रा सती के हाथों से ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर की अंतिम देशना कितने प्रहर चली?
उत्तर :– प्रभु महावीर की अंतिम देशना सोलह प्रहर चली ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर ने कौन सी श्राविका को धर्म लाभ कहलवाया?
उत्तर :– सुलसा श्राविका को ।

प्रश्न :– प्रभु देशना कहां बैठकर देते हैं?
उत्तर :– प्रभु देशना समोवशरण में बैठकर देते हैं ।
प्रश्न :– प्रभु जन्म पर देवता कौन सा महोत्सव करते हैं?
उत्तर :– स्नात्र महोत्सव ।
प्रश्न :– गौतम प्रभु की जन्म स्थली कौन सी है ?
उत्तर :– गोबर ग्राम ।
प्रश्न :– गौतम स्वामी का निर्वाण कहां हुआ?
उत्तर :– गुणीयाजी तीर्थ पर ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर को समकित की प्राप्ति किस भव में हुई?
उत्तर :– नयसार के भव में ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर ने गौतम गणधर को विशेष उपदेश कौन सा दिया?
उत्तर :– हे गौतम तू क्षण भर का भी प्रमाद मत कर ।
प्रश्न :– गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति कब हुई?
उत्तर :– कार्तिक शुक्ला एकम ।
प्रश्न :– नवकार मंत्र कौन सी भाषा में हैं?
उत्तर :– प्राकृत भाषा में ।
प्रश्न :– सिद्धाचल पर प्राचीन वृक्ष कौन सा है?
उत्तर :– रायण वृक्ष ।
प्रश्न :– धन की कितनी गति हैं?
उत्तर :– तीन ।
प्रश्न :– संवत्सरी प्रतिक्रमण में सबसे बडा काउसग्ग कौन सा आता हैं?
उत्तर :– चालीस लोग्गस व एक नवकार का ।
प्रश्न :– ऋषभदेव प्रभु को कितने दिन तक आहार नहीं मिला?
उत्तर :– चार सौ दिन तक ।
प्रश्न :– साधु साध्वी को गोचरी वोहराने से क्या लाभ?
उत्तर :– उन्हें संयम पालन में प्राप्त लाभ के छट्ठे भाग का लाभ प्राप्त होता है।
प्रश्न :– हमारी आराधनाएं विफल क्यों जाती हैं?
उत्तर :– अनादर एवं अविधि के कारण ।

प्रश्न :– रेवती ने तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कब किया?
उत्तर :– भगवान के लिये बिजोरापाक वोहराने से।
प्रश्न :– स्नान गृह में वैराग्य किसे उत्पन्न हुआ?
उत्तर :– धन्यकुमार को।
प्रश्न :– उत्तम सौभाग्य किसका माना जाता है?
उत्तर :– कयवन्ना सेठ का ।
प्रश्न :– किसकी बुद्धि की प्रशंसा की जाती हैं?
उत्तर :– अभयकुमार की ।
प्रश्न :– पाप का बाप कौन?
उत्तर :– लोभ ।
प्रश्न :– अपने बहनोई की आवाज पर कौन साधु बने?
उत्तर :– शालीभद्र ।
प्रश्न :– दया का चिंतन करते करते दिवाकर कौन बने?
उत्तर :– धर्मरूचि अणगार एंव मेघकुमार ।
प्रश्न :– मात्र एक ही दिन के चारित्र व्रत से कौन से साधु केवलज्ञानी बने?
उत्तर :– गजसुकुमाल ।
प्रश्न :– इस अवसर्पिणी काल में सर्व प्रथम मोक्ष प्राप्ति किसे हुई?
उत्तर :– मरूदेवी माता को ।
प्रश्न :– कौन सी श्राविका ने छः मास का उपवास किया?
उत्तर :– चंपा श्राविका ने ।
प्रश्न :– भरत व बाहुबली के बीच युद्ध का कारण क्या था?
उत्तर :– राजलोभ ।
प्रश्न :– श्रेणीक महाराजा ने पुणिया श्रावक से उनकी एक दिन की सामायिक क्यों मांगी?
उत्तर :– नरक गति के बंध को तोडने के लिये ।
प्रश्न :– प्रभु महावीर के 14 वर्षावास किस एक नगर में हुए?
उत्तर :– राजगृही नगर में ।
प्रश्न :– श्रेणीक महाराजा के परिवार में कौन से सदस्य तीर्थंकर बनेंगे?
उत्तर :– दो सदस्य स्वयं श्रेणीक व उदयन ।

प्रश्न :– वीर प्रभु का शासन कितने वर्ष तक चलेगा?
उत्तर :– 21000 वर्ष तक ।
प्रश्न :– कन्या राशि का स्वामी कौन?
उत्तर :– राहू ।
प्रश्न :– पुष्य नक्षत्र, बुधवार, दूज यह तीनों एक दिन हो तो कौन सा योग बनता है?
उत्तर :– राजयोग ।
प्रश्न :– रत्नप्रभा नारकी की क्या विशेषता है।
उत्तर :– जैन भूगोलनुसार अधेलोक में सात नरक है। जिसमें रत्नप्रभा प्रथम नर्क है। उसकी जमीन रत्न जैसे चमकीले पत्थर की बनी होने से उसे रत्नप्रभा नारकी कहते हैं, यही हमारी पृथ्वी है।
प्रश्न :– उत्कृष्ट मंगल कौन सा?
उत्तर :– धर्म ।
प्रश्न :– उपदेश माला ग्रंथ की रचना किसने की?
उत्तर :– धर्मदासगणि ने ।
प्रश्न :– तिलक मंजरी किसने लिखी?
उत्तर :– महाकवि धनपाल ने।
प्रश्न :– हरिभद्रसूरि की धर्म माता कौन थी?
उत्तर :– महान्तरा याकिनी ।
प्रश्न :– जयणा किसकी जननी है?
उत्तर :– धर्म की ।
प्रश्न :– नवांगी टीकाकार कौन?
उत्तर :– अभयदेव सूरि ।
प्रश्न :– अंजना सती को कितने वर्ष का दुख सहना पडा?
उत्तर :– बाईस वर्ष ।
प्रश्न :– अइमुतो अपने घर गोचरी के लिये किसे साथ लाया?
उत्तर :– गौतम स्वामी को ।
प्रश्न :– छट्ठे आरे में मनुष्य का आयुष्य कितना होगा?
उत्तर :– बीस वर्ष ।
प्रश्न :– "सभी कुछ कर्माधीन है ।" अपने पिता से ऐसा किसने कहा?

उत्तर :– मयणा सुंदरी ने ।
प्रश्न :– पौषध में सौलह स्वप्न किसने देखे?
उत्तर :– सम्राट चंद्रगुप्त ने ।
प्रश्न :– अकबर बादशाह को प्रतिबोध देने वाले कौन थे ?
उत्तर :– श्रीमद् हीरसूरिश्वरजी म.सा. ।
प्रश्न :– हीरसूरि महाराज सा. की आचार्य पदवी कहाँ हुई?
उत्तर :– सिरोही (राज.)
प्रश्न :– अचलगच्छ के स्थापक कौन?
उत्तर :– आर्य रक्षित सूरि ।
प्रश्न :– कौन से आचार्य के कितने शिष्यों को कोल्हू में पीसा गया?
उत्तर :– स्कंधाचार्य के 499 शिष्यों को ।
प्रश्न :– बाहुबली तीर्थ कहाँ हैं?
उत्तर :– श्रवण बेलगोला (कर्नाटका) ।
प्रश्न :– पालणे में 11 अंग पढने वाले कौन?
उत्तर :– वज्रस्वामी
प्रश्न :– तिर्च्छालोक में द्वीप व समुद्र कितने हैं?
उत्तर :– असंख्य ।
प्रश्न :– थाली धोकर पीने से क्या लाभ?
उत्तर :– थाली धोकर पीने से एक आयंबिल का लाभ होता है।
प्रश्न :– शिलान्यास के पूर्व क्या करना चाहिये?
उत्तर :– भूमि पूजन ।
प्रश्न :– क्या चीज छुपाना सबसे बडा पाप है?
उत्तर :– भूल ।
प्रश्न :– धर्म का बीज क्या?
उत्तर :– दया ।
प्रश्न :– माया के कारण स्त्री तीर्थंकर किसे बनना पडा?
उत्तर :– मल्लिनाथ प्रभु को ।
प्रश्न :– कार्तिक शेठ ने कितने लोगों के साथ दीक्षा ली?
उत्तर :– अपने एक हजार आठ मित्रों के साथ ।
प्रश्न :– चंडाल कुल में साधु कौन बने?
उत्तर :– हरिकेशी बाल ।

प्रश्न :– वीर प्रभु के चौदह हजार साधुओं में सर्व श्रेष्ठ तपस्वी कौन ?

उत्तर :– धन्ना अणगार ।

प्रश्न :– उद्यान में रहकर स्व उद्धार किसने किया?

उत्तर :– कपिल मुनि ।

प्रश्न :– श्रेणीक के दरबार में कृपण कौन?

उत्तर :– कपिला दासी ।

प्रश्न :– नेमिनाथ प्रभु के अठारह हजार साधुओं में सर्व श्रेष्ठ कौन?

उत्तर :– ढंढण मुनि ।

प्रश्न :– जिनेश्वर की प्रतिमा को देखकर महात्मा कौन बना?

उत्तर :– आर्द्रकुमार ।

प्रश्न :– जंबू स्वामी मोक्ष कब गये?

उत्तर :– वीर प्रभु के मोक्ष के चौसठ वर्ष पश्चात् ।

प्रश्न :– स्वपत्नी के उपदेश से वैरागी कौन बना?

उत्तर :– तेतलीपुत्र ।

प्रश्न :– अपनी संपति का मद करते करते साधु कौन बना?

उत्तर :– दशार्नभद्र राजा ।

प्रश्न :– प्रभु महावीर द्वारा दिक्षित प्रथम साध्वी कौन है ?

उत्तर :– चंदनबाला ।

प्रश्न :– वेश्या के घर रहकर भी रोज 10 जीवों को प्रतिबोध देने वाले कौन हैं ?

उत्तर :– नंदिषेण मुनि ।

प्रश्न :– अवसर्पिणी काल की प्रथम साध्वी कौन हुई?

उत्तर :– ब्राह्मी ।

प्रश्न :– स्थूलीभद्र ने किस वेश्या के घर चातुर्मास किया?

उत्तर :– कोशा वेश्या के घर ।

प्रश्न :– भारत में जैन बहुल क्षेत्र कौन सा है?

उत्तर :– *मध्य भारत (गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र)*

प्रश्न :– बादशाह अकबर के समय जगद्‌गुरू की पद्‌वी किसे मिली?

उत्तर :– हीरसूरि म.सा. को यह पद्‌वी मिली।

प्रश्न :– कुल चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या कितनी?
उत्तर :– 1452 गणधर ।
प्रश्न :– उपमति भव प्रपंच ग्रंथ की रचना किसने की?
उत्तर :– सिद्धर्षि गणि ने की ।
प्रश्न :– कल्याण मंदिर स्तोत्र रचना किसने की?
उत्तर :– सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने की।
प्रश्न :– भक्तामर स्तोत्र के रचियता कौन?
उत्तर :– मानतुंगसूरि ।
प्रश्न :– साधु को गोचरी वोहरा कर अशुभ कर्म किसने बांधा?
उत्तर :– मम्मण शेठ की ।
प्रश्न :– चंडकौशिक नाग मरकर कहां उत्पन्न हुआ?
उत्तर :– आठवें देवलोक में ।
प्रश्न :– केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भी घर पर छः महिने तक रहने वाले कौन?
उत्तर :– कुर्मा पुत्र ।
प्रश्न :– वीर प्रभु ने तीर्थंकर नाम का उपार्जन कब किया?
उत्तर :– नंदनऋषि के भव में ।
प्रश्न :– वज्रस्वामी का जन्म कौन से गांव में हुआ था ?
उत्तर :– तुब बन ग्राम में ।
प्रश्न :– बारहवें देवलोक में कितने चैत्य हैं ?
उत्तर :– तीन सौ ।
प्रश्न :– अशोक वृक्ष की ऊँचाई कितनी?
उत्तर :– भगवान के शरीर प्रमाण से तीगुनी होती है। ।
प्रश्न :– मासक्षमण के पारणे में कडवी तुंबडी को उपयोग में लेने वाले महात्मा कौन?
उत्तर :– धर्मरूचि अणगार ।
प्रश्न :– शय्यंभव सूरि ने किसके लिये कौन से सूत्र की रचना की?
उत्तर :– स्वर्य पुत्र मनक के लिये दशवैकालिक सूत्र की रचना की।
प्रश्न :– तपागच्छ के अधिष्ठायक देव कौन?
उत्तर :– मणिभद्रवीर ।

प्रश्न :– तपागच्छ के सूत्रधार कौन?
उत्तर :– जगतचंद्र सूरि ।
प्रश्न :– निगोद का वर्णन किस आचार्य ने किया?
उत्तर :– निगोद का वर्णन आर्यरक्षितसूरि व कालकाचार्य ने किया।
प्रश्न :– नवकार मंत्र की रचना कब हुई?
उत्तर :– यह अनादि मंत्र हैं ।
प्रश्न :– दर्शन किसे कहते हैं? ये कितने हैं?
उत्तर :– ज्ञानियों के द्वारा बतलाये गये शास्त्र को दर्शन कहते हैं। ये कुल छः हैं, तथा षट्दर्शन कहलाते हैं।

जैन इतिहास के प्रसिद्ध बाल साधु

1. हेम चंद्राचार्य :– पांच वर्ष की उम्र में दिक्षीत हुए ।
2. आनंदविमलसूरि :– पांच वर्ष की उम्र में दिक्षीत हुए ।
3. विजयसेन सूरि :– नव वर्ष की उम्र में दिक्षीत हुए ।
4. विजयदेव सूरि :– नव वर्ष की उम्र में दिक्षीत हुए ।
5. सोमसुंदर सूरि :– सात वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ।
6. विजयानंद सूरि :– नव वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ।
7. विजय प्रभ सूरि :– नव वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ।
8. मुनिसुंदर सूरि :– सात वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ।
9. श्री बप्पभट्ट सूरि :– सात वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ।

- "जो अधिक से अधिक अपने अंतर्शत्रुओं का प्राबल्य जीत सके, उसे ही महापुरूष कहते हैं।"
- "जीव मात्र को अभयदान" यही सर्वोपरि दान है ।
- "मन की वासना ही, मन को कलुषित करती है ।"
- प्रकृति के कानून के विरूद्ध मत चलो, नुकसान होगा।

अवसर्पिणी काल की प्रथम विशिष्टताएं

प्रथम तीर्थंकर :— ऋषभदेवजी ।
प्रथम गणधर :— पुंडरिक स्वामी ।
प्रथम केवली :— ऋषभदेवजी ।
प्रथम मोक्षमार्गी :— मरूदेवी माता ।
प्रथम आरा :— सुखम सुखम ।
प्रथम विहरमान तीर्थंकर :— सीमंधर स्वामी ।
प्रथम साध्वी :— ब्राह्मी ।
प्रथम श्राविका :— सुंदरी ।
प्रथम चक्रवर्ती :— भरत ।
प्रथम वासुदेव :— त्रिपृष्ठ ।
प्रथम प्रतिवासुदेव :— अश्वदेव ।
प्रथम बलदेव :— अचल ।
प्रथम व्रत :— प्राणातिपात विरमाण व्रत ।

अवसर्पिणी काल की अंतिम विशिष्टताएं

अंतिम तीर्थंकर :— श्री महावीर स्वामी ।
अंतिम गणधर :— प्रभास स्वामी ।
अंतिम केवली :— जंबू स्वामी ।
अंतिम आचार्य :— दुप्पह सूरि ।
अंतिम साध्वी :— फाल्गुणी ।
अंतिम श्रावक :— नागील ।
अंतिम श्राविका :— सत्यश्री ।
अंतिम चौदहपूर्वधर :— भद्रबाहू स्वामी ।
अंतिम आरा :— दुषम – दुषम ।
अंतिम चक्रवर्ती :— ब्रह्मदत्त ।
अंतिम वासुदेव :— कृष्ण वासुदेव ।
अंतिम बलदेव :— बलभद्र ।
अंतिम व्रत :— अतिथि संविभाग ।
अंतिम मोक्षगामी :— श्री जंबूस्वामी ।

अंतिम पाप :— मिथ्यात्व शल्य ।
अंतिम सूत्र :— दसवैकालिक सूत्र ।
अंतिम विहरमान :— श्री अजीतवीर्य ।
अंतिम व्यसन :— परस्त्रीगमन
अंतिम छरी :— आवश्यकदोय वारी
अंतिम निधि :— शंख ।

केवली कथनानुसार यह तथ्य संकलित किया गया है ।

अतीत, वर्तमान, और भावी तीर्थंकरों की सूची

अतीत :— 1. केवलज्ञानी 2. निर्वाणी 3. सागर 4. महायश 5. विमल 6. सर्वानुभूति 7. श्रीधर 8. श्रीदत्त 9. दामोदर 10. सुतेजा 11. स्वामीनाथ 12. मुनिसुव्रत 13. सुमति 14. शिवगति 15. अरत्याग 16. नमीश्वर 17. अनिल 18. यशोधर 19. कृतार्थ 20. जिनेश्वर 21. शुद्धमति 22. शिवंकर23. स्यंदन 24. संप्रति ।

वर्तमान :— 1. ऋषभदेवजी 2. अजीतनाथजी 3. संभवनाथजी 4. अभिनंदनस्वामी 5. सुमतिनाथजी 6. पद्मप्रभूजी 7. सुपार्श्वनाथजी 8. चंद्रप्रभूजी 9. सुविधीनाथजी 10. शीतलनाथजी 11. श्रेयांसनाथजी 12. वासुपूज्यस्वामीजी 13. विमलनाथजी 14.अनंतनाथजी 15. धर्मनाथजी 16. शांतिनाथजी 17. कुंथुनाथजी 18. अरनाथजी 19.मल्लीनाथजी 20.मुनिसुव्रतस्वामी 21.नमिनाथजी 22. नेमिनाथजी 23. पार्श्वनाथजी 24. महावीरस्वामी ।

भावी :— 1. पद्मनाथ 2. सुदेव 3. सुपार्श्व 4. स्वयंप्रभ 5. सर्वानुभूति 6. देवश्रुत 7. उदय 8. पेढाल 9. पोट्टिल 10. शतकिर्ती 11. मुनिसुव्रत 12. अमम 13. निष्कषाय 14. निष्पुलाक 15. निर्मम 16. चित्रगुप्त 17. समाधि 18. संवर 19. यशोधर 20. विजय 21. मल्ल 22. देव 23. अनंतवीर्य 24. भद्र।

जैन धर्म ज्ञान माला

बीस विहरमान जिनेश्वर :–

1. श्री सीमंधरस्वामी 2. युगमंधरस्वामी 3. श्री बाहुस्वामी 4.सुबाहुस्वामी 5. सुजातस्वामी 6. स्वयंप्रभस्वाम 7.श्री ऋषभाननस्वामी 8. श्री अनंतवीर्यस्वामी 9. श्री सूरप्रभस्वामी 10. श्री विशालस्वामी 11. श्री व्रजधरस्वामी 12. श्री चन्द्राननस्वामी 13. श्री चंद्रबाहु स्वामी 14. श्री भुजंगस्वामी 15. श्री ईश्वरस्वामी 16. श्री नेमिप्रभ स्वामी 17. श्री वीरसेनस्वामी 18. श्री महाभद्रस्वामी 19. श्री देवयशास्वामी 20. श्री अजीतवीर्यस्वामी ।

वीर प्रभु के ग्यारह गणधर :–

1. श्री गौतम स्वामी 2. श्री अग्निभूति 3. श्री वायुभूति 4. श्री व्यक्तजी 5. श्री सुधर्मास्वामी 6. श्री मंडितजी 7. श्री मौर्यपुत्र 8. श्री अकंपित 9. श्री अचलभ्राता 10. श्री मेतारज 11. श्री प्रभास।

चौदह पूर्व के नाम :–

1. उत्पाद पूर्व 2. अग्रायणी 3. वीर्यप्रवाद 4. भक्ति प्रवाद 5. ज्ञान प्रवाद 6. सत्य प्रवाद 7. आत्म प्रवाद 8. कर्म प्रवाद 9. प्रत्याखान प्रवाद 10. विद्या प्रवाद 11. कल्याण प्रवाद 12. प्राणवाय प्रवाद 13. क्रिया प्रवाद 14. लोकबिंदुसार

चौदह गुणस्थानक के नाम :–

1. मिथ्या दृष्टि गुणस्थानक 2. सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानक 3. मिश्रसम्यग् मिथ्यादृष्टि गुणस्थानक 4. अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थानक 5. विरताविरत गुणस्थानक 6. प्रमत संयत गुणस्थानक 7. अप्रमत्त संयत गुणस्थानक 8. निवृति गुणस्थान 9. अनिवृति गुणस्थान 10. सुक्ष्म संपराय गुणस्थान 11. उपशांत मोह गुणस्थानक 12. क्षीणमोह गुणस्थानक 13. संयोगि केवलि गुणस्थानक 14. असंयोगि केवलि गुणस्थानक।

64 इन्द्र :–

भवनपती के इन्द्र 20, व्यंतर निकाय के इन्द्र 16, वाण व्यंतर के इन्द्र 16, ज्योतिष के इन्द्र 2, वैमानिक इन्द्र 10 कुल 20+16+16+2+10 – 64

56 दिग्कुमारी :–

अधोलोक की 8 , उर्ध्वलोक की 8,पूर्वदिशा की 8,दक्षिण दिशा की 8 ,पश्चिम दिशा की 8 ,उत्तर दिशा की 8,रूचक द्वीप की 4,विदिशा की 4 8+8+8+8+8+8+4+4 कुल दिग्कुमारी।

शत्रुन्जय के 21 नाम :–

1. शत्रुन्जय 2. पुंडरिकगिरी 3. सिद्धक्षेत्र 4. विमलाचल 5.इन्द्रप्रकाश 6.महातीर्थ 7.शाश्वतगिरी 8. दृढगिरी 9. मुक्तिनिलयगिरी 10. पुष्पदंतगिरी 11. महापद्मगिरी12. सूरगिरी 13.महागिरी 14. पुण्यराशि 15. श्रीपदगिरी 16. पृथ्वीपीठगिरी 17. सुभद्रगिरी 18. कैलाशगिरी 19. कदम्बगिरी 20. उज्जवलगिरी 21. सर्वकाम दायक गिरी।

सोलह सतीयाँ :–

ब्राह्मी, सुंदरी, चंदनबाला, राजीमती, द्रौपदी, कौशल्या, मृगावती, सुलसा, सीता, सुभद्रा, शिवा, कुंती, शीलवंती, दमयंती, प्रभावती, पद्मावती।

सोलह विद्या देवियों के नाम :–

1. रोहिणी 2. प्रज्ञप्ति 3. वज्र शृंखला 4. व्रजांकुशी 5. अप्रतिचक्र 6. पुरूषदत्ता 7. काली 8. महाकाली 9. गौरी 10. मानवी 11. गंधारी 12. सर्वात्रा महाज्वाला13. वैरुट्या 14. अच्छुप्ता 15. मानसी 16. महामानसी।

आठ अ–भव्यों के नाम :–

1. काल सौरिक कसाई 2. कपिला दासी 3. अंगार मर्दकाचार्य 4. संगम देव 5. पालक पुरोहित 6. विनय रत्न साधु 7. वैतरणी वैद्य 8. कृष्ण पुत्र पालक।

चौरासी लक्ष जीव योनि की जैन मतानुसार गणना :–

1.सात लाख पृथ्वीकाय 2.सात लख अपकाय 3.सात लाख तेजसकाय सात लाख वायु काय 5. दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय 6. चौदह लाख साधारण वनस्पति काय 7. दो लाख द्विन्द्रिय 8. दो लाख त्रिन्द्रिय 9. दो लाख चतुरिन्द्रियकाय 10. चार लाख देवता 11.चार लाख नारकी 12. चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय 13. चौदह लाख मनुष्य।

****

तत्व ज्ञान की बातें

तत्व :– सुदेव, सुगुरू, और सुधर्म, तीनों की उपासना करनी चाहिये।

रत्न त्रयी :– सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र, ये तीनों प्राप्त करना ।

धर्म त्रयी :– अहिंसा, संयम, तप इन तीनों का आचरण करना।

तीन गुण :– अरिहंत परमात्मा और सद्गुरू के प्रति भक्ति, सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव, अपने पापों के प्रति प्रायश्चित ।

तीन योग :– मनोयोग, वचनयोग, काययोग

तीन लोक :– उर्ध्वलोक, अधोलोक, तिर्च्छालोक ।

तीन डंड :– मन डंड , वचन डंड , काय डंड ।

तीन गुप्ति :– मन गुप्ति , वचन गुप्ति , काय गुप्ति ।

चार महाविगई :– 1. शहद , मांस , मक्खन , मदिरा ।

चार प्रकार के धर्म :– दान , शील, तप , और भाव।

चार की शरण :– अरिहंत, सिद्ध, साधु और धर्म ।

तीर्थंकर के चार शाश्वत नाम :– ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण वर्धमान।

चार संज्ञा :– आहार, भय, मैथुन व परिग्रह ।

पंचाचार :– ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार व वीर्याचार।

स्वाध्याय के पांच प्रकार :– वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा ।

पंच महाव्रत :– प्राणातिपात विरमण व्रत, मृषावाद विरमण व्रत, अदत्तादान विरमण व्रत, मैथुन विरमण व्रत, परिग्रह विरमण व्रत।

पांच इन्द्रियां :– जीभ, नाक, कान, आँख व स्पर्श ।

छः विगई :– दूध, दही, घी, तैल, गुड, व तली हुई वस्तुएं।

सात क्षेत्र :– जिनमूर्ति, जिनमंदिर, जिनागम, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ।

सात व्यसन :– शराब, माँस, जुआ, शिकार, चोरी, परस्त्री गमन, वेश्या गमन ।

शास्त्र के सात अंग :– सूत्र, चूर्णी, निर्यक्ति, भाष्य, वृति, परंपरा, अनुभव।

सात नय :– नेगम संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवं भूत।

आठ दृष्टि :– मित्रा, तारा, बला, निर्वेद, स्थिरा, कांता, प्रभा, परा।

सम्यकत्व के पाँच लक्षण :– शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्तिक्य ।

पाँच ज्ञान के प्रकार :– मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान , अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान और केवलज्ञान ।

नौ वासुदेव :– श्री त्रिपृष्ठ वासुदेव, श्री द्विपृष्ठवासुदेव, श्री स्वयंभू, श्री पुरूषोत्तम, श्री पूरणसिंह, श्री पुरूष पुंडरिक, श्री दत्त, श्री लक्ष्मण, श्री कृष्ण।

नौ प्रति वासुदेव :– श्री अश्वग्रीव, श्री तारक, श्री मेरक, श्री मधू, श्री नी सूंभ, श्री बली, श्री प्रहलाद, श्री रावण, श्री जरासंघ।

नौ बलदेव :– श्री अचल, श्री विजय, श्री भद्र, श्री सुप्रभ, श्री सुदर्शन, श्री आनंद, श्री नंदन, श्री रामचंद्र, श्री बलराम ।

बारह चक्रवर्ती :– भरत, सागर, मघवा, सनत्कुमार, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ, सुभुम, महापद्म, हरिषेण, जय, ब्रह्मदत ।

ग्यारह रूद्र :– भीमावली, जितशत्रु, भद्रनामा, विश्वाहल, सुप्रतिष्ठ अचल, पुंडरिक, अजितधर, अजीतनाथ, पेढालनामा, सत्यकी।

नवनारद :– भीम, महाभीम, रूद्र, महारूद्र, काल, महाकाल, चर्तुमुख, नयरमुख, उन्मुख।

सात कुलकर :– विमलवाहन, चक्षुष्मंत, यशमंत, अभिचंद्र, प्रसेनजित, मरूदेव, नाभि

चौदह स्वप्न :– हाथी, वृषभ, केशरीसिंह, लक्ष्मी, पुष्पहार, चंद्र, सूर्य, ध्वज, कलश, पद्म सरोवर, रत्नाकर, विमान, रत्न ढेर, निर्धूम अग्नि।

श्रावक के 21 गुण :– 1. अशुद्र 2. रूपवान 3. प्रकृति सौम्य 4. लोकप्रिय 5. अक्रुर 6. पापभीरू 7. अशठ 8. लज्जालु 9. दक्ष

10. दयालु 11. मध्यस्थ 12. सुदृष्टि 13. गुणानुरागी 14. सपक्षयुक्त 15. सुदीर्घ दृष्टि 16. विशेषज्ञ 17. वृद्धों के प्रति आदर भाव वाला 18. विनीत 19. कृतज्ञ 20. परोपकारी 21. लब्ध लक्ष्य।

श्रावक के छः लक्षण :— व्रतधारी, शीलवंत, गुणवंत, सरल, गुरू भक्त, शास्त्रज्ञ ।

12 देवलोक :— 1. सोधर्म 2. ईशान 3. सनत्कुमार 4.महेन्द्र 5. ब्रह्मलोक 6. लांतक 7. महाशुक्र 8. सहस्रार 9. आनत 10. प्राणत 11. आरण 12. अच्युत।

पाँच शरीर :— 1. औदारिक 2. वैक्रिय 3. आहारक 4. तेजस 5. कार्मण।

नवपद :— 1. अरिहंत 2. सिद्ध 3. आचार्य 4. उपाध्याय 5. साधु 6. दर्शन 7. ज्ञान 8. चारित्र 9. तप।

सात नर्क :— 1. रत्न प्रभा 2. शर्करा प्रभा 3. वालुका प्रभा 4. पंक प्रभा 5. धूम प्रभा 6. तमः प्रभा 7. तमः तमः प्रभा।

ये दस अनन्त है :— 1. सिद्ध जीव 2. निगोद 3. काल 4. पुद्गल 5. आकाश प्रदेश 6. केवलज्ञानी 7. केवलदर्शन 8. वनस्पति 9. परमाणु 10. अलोक।

यह सब स्त्रियों को नहीं मिलता :— 1. तीर्थंकर पद 2. चक्रवर्ती पद 3. वासुदेव पद 4. बलदेव पद 5. संभिन्न श्रोतालब्धि 6. चारण लब्धि 7. गणधर लब्धि 8. पुर्लाक लब्धि 9 आहारक लब्धि 10. आचार्य पद एवं उपाध्याय पद ।

सात भय :— 1. इहलोक भय 2. परलोक भय 3. अदान भय 4. अकस्मात भय 5. आजीविका भय 6. मरण भय 7. अपयश भय।

जैनों के मुख्य पर्व दिन :— 1. पर्युषण पर्व 2. मौन एकादशी 3. पोष दशम् 4. दिवाली पर्व 5. महावीर जन्म कल्याणक 6. ज्ञान पंचमी 7.चौमासी चौदस 8. अक्षय तृतीया 9. आसो मास ओली 10. चैत्र मास ओली।

विभिन्न तप के कुछ मुख्य नाम :— 1. मास क्षमण (30 दिन उपवास) 2. अट्ठाई 3. पचरंगी 4. अट्ठम 6. छट्ठ 7. उपवास 8. एकासना 9. आयंबिल 10. बियासना।

पैंतालीस आगम :– अ) ग्यारह अंग आ) बारह उपांग इ) छः छेद ई) चार मूल सूत्र उ) 10 पयन्ना ऊ) दो चूणिका ।

अ. ग्यारह अंग :– 1. श्री आचारांग 2. श्री सूत्र कृतांग 3. श्री स्थाणांग सुत्र 4. श्री समवायांग 5. श्री भगवती सूत्र 6. श्री ज्ञाता धर्म कथांग 7. श्री उपासक दशांग 8. अन्नतगड दशांग 9. श्री अनुत्तरोपपातिकदशांग 10. प्रश्न व्याकरण सूत्र 11. श्री विपाकसूत्र।

आ. बारह उपांग :– 1. औपपातिक 2. राजप्रश्नीय 3. श्रीजिवाभिगम 4. प्रज्ञापना 5. श्री जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति 6. श्री चंद्र प्रज्ञप्ति 7. सूर्य प्रज्ञप्ति 8. श्री निरयावली सूत्र 9. श्री कल्पावंतसिका सूत्र 10. श्री पुष्पिका 11. श्री पुष्प चूलिका 12. श्री वण्हिदंशाण।

इ. छः छेद :– 1. दशा सूत्र स्कंध 2. बृहतकल्प सूत्र 3. व्यवहार सूत्र 4. पंचकल्प सूत्र 5. लघु निशीथ सूत्र 6. महानिशीथ सूत्र

ई. चार मूल सूत्र :– 1. श्री आवश्यक सूत्र 2. उत्तराध्ययन सूत्र 3. दश वैकालिक 4. श्री ओधनियुक्ति ।

उ. 10 पयन्ना :– 1. चतुशरण 2. आऊरपच्चक्खान 3. महा पच्चक्खान 4. मतपयन्ना 5. तंदुल वेयालिय 6. गणिविज्जा 7. चंद विज्जा 8. देविंदविज्जा 9. चरण समाधि 10. संस्तारक ।

ऊ. दो चूर्णी :– 1. श्री नंदिसूत्र 2. अनुयोगद्वार ।

चक्रवर्ती की नौ निधियां :– 1.नैसर्प 2. पिंगलक 3. महापद्म 4. महाकाल 5. शंख 6. पांडुक 7. सर्वरत्न 8. काल 9. माणक।

दर्शन के छः प्रकार :– 1. जैन दर्शन 2. मीमांसक दर्शन 3. बौद्ध दर्शन 4. न्याय दर्शन 5. सांख्य दर्शन 6. चार्वाक दर्शन।

झूठ बोलने के चौदह कारण :– 1. क्रोध 2. मान 3. कपट 4. लोभ 5. राग 6. द्वेष 7. हास्य 8. भय 9. लज्जा 10. हर्षोत्साह 11. क्रीडा 12. शोक 13. दाक्षिण्यता 14. बडबोलापन।

व्यवहारिक जीवन में चार प्रकार की बुद्धि 1. सेवा बुद्धि 2. कर्तव्य बुद्धि 3. उपकार बुद्धि 4. स्वार्थ बुद्धि।

इस अवसर्पिणी काल के दस आश्चर्य

1. वीर प्रभु को केवलज्ञान होने के पश्चात् भी गौशाला का उपसर्ग सहना पडा ।
2. वीर प्रभु का गर्भ परिवर्तन हुआ क्योंकि तीर्थंकर हमेशा राज–कुल में ही जन्मते हैं ।
3. वीर प्रभु की प्रथम देशना निष्फल गई ।
4. वीर प्रभु की देशना सुनने सूर्य, चंद्र अपने मूल विमान सहित आये।
5. भुवनपति देव कभी ऊपर के देवलोक में नहीं जाते फिर भी चमरेन्द्र सौधर्म देवलोक में गये ।
6. स्त्री तीर्थंकर होती नहीं लेकिन श्री मल्लीनाथ हुए ।
7. अपरकंका में कृष्ण वासुदेव के जाने से दो वासुदेवों के शंख की ध्वनि का मिलन हुआ ।
8. हरिवंश कुल की उत्पति ।
9. 500 धनुष्य प्रमाण वाली 108 आत्माएं एक साथ मोक्ष में नहीं जाती। फिर भी ऋषभदेव भगवान के साथ अष्टापद तीर्थ पर अन्य वे भी गये।
10. भगवान सुविधिनाथ के शासन में असंयमी की पूजा हुई ।

नही बोलने में नौ गुण

1. नहीं बोलने से बडे छोटों की आपसी मर्यादा का पालन ।
2. अकारण नहीं बोलने वाले को पछताना नहीं पडता ।
3. कम बोलने से कलह की संभावना कम रहती है ।
4. नहीं बोलने से दुश्मनी नहीं होती ।
5. मौन रखने वाले को असत्य भाषण का दोष नहीं लगता ।
6. मौन रखने से क्रोध काबू में रहता है ।
7. अकारण न बोलने वाले का किसी के साथ संबंध नहीं बिगड़ता।
8. नहीं बोलने से कलह आगे बढने से रूकता है ।
9. मौनी को कर्म–बंधन भी कम होता हैं ।

"बहुत गई, थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय ।
उस थोड़ी के कारण, कहिं ताल बिगड़ न जाय।"

♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦♦

तीर्थंकर नाम	पिता का नाम	माता का नाम	जन्म स्थान	च्यवन कल्याणक	जन्म कल्याणक
ऋषभदेव	नाभिराजा	मरूदेवी	अयोध्या	आषाढ वद ४	चैत्र वदी ८
अजितनाथ	जितशत्रुराजा	विजयादेवी	अयोध्या	वैशाख सुदी १३	माघ सुदी ८
सम्भवनाथ	जितारिराजा	सेनादेवी	सावत्थी	फागण सुद ८	मगसर सुदी १४
अभिनन्दन	संवरराजा	सिद्धार्थदेवी	अयोध्या	वैशाख सुदि ४	माघ सुदी २
सुमतिनाथ	मेघराजा	सुमंगलारानी	अयोध्या	श्रावण सुद २	वैशाख सुदी ८
पद्मप्रभू	श्रीधरराजा	सुसीमादेवी	कौशांबी	माह वद ६	कार्तिक वदी १२
सुपार्श्वनाथ	प्रतिष्ठराजा	पृथ्वीदेवी	वाराणसी	भादरवा वद ८	जेष्ठ सुदी १२
चन्द्रप्रभू	महसेनराजा	लक्ष्मणादेवी	चन्द्रपुरी	चैत्र वद ५	पौष वदी १२
सुविधिनाथ	सुग्रीवराजा	रामारानी	काकन्दी	फागण वद ६	मगसर वदी ५
शीतलनाथ	दृढ़रथराजा	नन्दादेवी	भद्दिलपुर	वैशाख वद ६	माघ वदी १२
श्रेयांसनाथ	विष्णुराजा	विष्णुरानी	सिंहपुरी	जेठ वद ६	फाल्गुन वदी १२
वासुपूज्य	वसुपूज्यराजा	जयादेवी	चंपापुरी	जेठ सुद ६	फाल्गुन वदी १४
विमलनाथ	कृतवर्मराजा	श्यामादेवी	कपिलपुर	वैशाख सुदि १२	माघ सुदी ३
अनन्तनाथ	सिंहसेनराजा	सुयशादेवी	अयोध्या	श्रावण वद ७	वैशाख वदी १३
धर्मनाथ	भानुराजा	सुव्रतादेवी	रत्नपुरी	वैशाख सुदि ७	माघ सुदी ३
शांतिनाथ	विश्वसेनराजा	अचिरादेवी	हस्तिनापुर	भाद्रवा वद ७	जेष्ठ वदी १३
कुंथुनाथ	शूरसेनराजा	श्रीदेवीरानी	हस्तिनापुर	श्रावण वद ६	वैशाख वदी १४
अरनाथ	सुदर्शनराजा	महादेवीरानी	हस्तिनापुर	फागण सुद २	मगसर सुदी १०
मल्लिनाथ	कुम्भराजा	प्रभावतीरानी	मिथिला	फागण सुद ४	मगसर सुदी ११
मुनिसुव्रत	सुमित्रराजा	पद्मावतीदेवी	राजगृही	श्रावण सुद १५	जेष्ठ वदी ८
नमिनाथ	विजयराजा	वप्रारानी	मिथिला	आसोज सुद १५	सावन वदी ८
नेमिनाथ	समुद्रविजय	शिवादेवी	शौरीपुरा	कार्तिक वद १२	सावन सुदी ५
पार्श्वनाथ	*अश्वसेनराजा*	*वामादेवी*	*वाराणसी*	*चैत्र वद ४*	*पौष वदी १०*
महावीर	सिद्धार्थराजा	त्रिशलादेवी	क्षत्रियकुण्ड	आषाढ सुद ६	चैत्र सुदी १३

दीक्षा कल्याणक	केवलज्ञान कल्याणक	निर्वाण तिथी	शासनदेव	शासनदेवी	लांछन
चैत्र वदी ८	फागण वद ११	माघ वदी १३	गौमुख	चक्रेश्वरी	वृषभ
माघ सुदी ६	पोष सुद ११	चैत्र सुदी ५	महायक्ष	अजिता	हाथी
मगसर सुद १५	कार्तिक वद ५	चैत्र सुदी ५	त्रिमुख	दुरितारी	घोड़ा
माह सुद १२	पोष सुद १४	वैशाख सुदी ८	यक्षेश	काली	वानर ,
वैशाख सुद ६	चैत्र सुद ११	चैत्र सुदी ६	तुंबुरू	महाकाली	क्रौचपक्षी
कार्तीक वद १३	चैत्र सुद १५	मगसर वदी ११	कुसुम	अच्युता	पद्म
जेठ सुद १३	फागण वद ६	श्रावण वदी ७	मातंग	शान्ता	स्वस्तिक
पोष वद १३	फागण वद ७	भदवा वदी ७	विजय	ज्वाला	चन्द्र
मगसर वद ६	कार्तिक सुद ३	भादवा सुदी ६	अजित	सुतारका	मगर
माह वद १२	पोष वद १४	वैशाख वदी २	ब्रह्मा	अशोका	श्रीवत्स
फागण वद १३	माह वद अमावस	श्रावण वदी ३	मनुजेश्वर	श्रीवस्ता	गेंडा
फागणवद अमावस	माह सुद २	आषाढ सुदी १४	कुमार	प्रवारा	भैंसा
माह सुद ४	पोष सुद ६	आषाढ वदी ७	षणमुख,	विजया	सूअर
जेठ वद १४	वैशाख वद १४	चैत्र सुदी ५	पाताल,	अंकुशा	बाज
माह सुद १३	पोष सुद १५	जेठ सुदी ५	किन्नर,	प्रज्ञप्ती	वज्र
वैशाख वद १४	पोष सुद ६	जेठ वदी १३	गरूड,	निर्वाणी	हरिण
वैशाख वद ५	चैत्र सुद ३	वैशाख वदी १	गंधर्व,	अच्युता	बकरा
मगसर सुद ११	कार्तिक सुद १२	मिगसर सुद १०	यक्षेन्द्र	धरनीदेवी	नंदावर्त
मगसर सुद ११	मगसर सुद ११	फाल्गुन सुदी १२	कुबेर,	वेराट्या	कलश
फागण सुद १२	फागण वद १२	जेठ वदी ६	वरूण	दत्ता	कच्छप
आषाढ वद ६	मगसर सुद ११	वैशाख वदी १०	भ्रकुटी	गंधारी	नीलकमल
श्रावण सुद ६	आसोज वद अमावस	आषाढ सुदी ८	गोमेघ	अंबिका	शंख
पोष वद ११	चैत्र वद ४	श्रावण सुदी ८	पार्श्वयक्ष	पद्मावती	सर्प
मगसर वद १०	वैशाख सुद १०	कार्तिक वदी ३०	मातंग	सिद्धायिका	सिंह

गुरू वंदन की विधि

इच्छामि खमासमणों ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि–आए' मत्थएण वंदामि । (इस प्रकार दो खमासमण देना)

इच्छकार सुहराई ? सुहुदेवसि ? सुख तप ? शरीर –निराबाध ? सुख–संजम्–जात्रा निर्वहो छो जी ? स्वामि ! साता छे जी ? मात–पाणीनो लाभ देजो जी ।

(तत्पश्चात् आचार्य पन्यास, गणि याने साधु महाराज पदस्थ हो तो एक खमासमण देना चाहिये । तत्पश्चात् खडे होकर बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओ मि, अब्भितर –राइअं (देवसिअं) खामेउं ? गुरू कहे–खामेह।

(अब दाहिना हाथ जमीन पर व बायां हाथ मुख के सम्मुख रख कर शेष पुत्र पूर्ण बोले)

इच्छं, खामेमि राइअं (देवसिअं), जं किंचि अपत्तिअं, पर–पत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर–भासाए, उवरि–भासाए, जं किंचि मज्झ विणय–परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

(यह सूत्र बोलकर एक खमासमणा देना)

चैत्यवंदन विधि

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणों वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । (नीचे के सूत्र खडे रहकर बोलना)

इरियावहिया सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, ।।1।। इरियावहियाए विराहणाए, ।।2।। गमणागमणे, ।।3।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग पणग दगमट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, ।।4।। जे मे जीवा विराहिया, ।।5।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया पंचिंदिया ।।6।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, ।।7।। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।8।।

तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।1।।

अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।

(इसके बाद एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करके हाथ जोडकर लोगस्स बोलना)

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअ गरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसं पि केवली ।।1।। उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।2।। सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअलसिज्जंस वासपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सतिं च वंदामि ।।3।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ।।4।। एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ।।5।। कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरूग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।6।। चंदेसु निम्मल–यरा आइच्चेसु अहियं पयास–सरा । सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।7।।

(नीचे का सूत्र अलग–अलग तीन बार बोलकर तीन खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । (बाद में) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । चैत्यवंदन करूं ? इच्छं । (कहकर बाया पैर खडा करके बैठकर नीचे का सूत्र हाथ जोडकर बोलना)

सकलकुशलवल्ली पुष्कारावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुःकल्प वृक्षोपमानः। भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः ।। (नीचे का चैत्यवंदन बोलो)

चैत्यवंदन

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ जय त्रिभुवन स्वामी अष्ट कर्म रिपु जीतीने पंचमी गति पामी ।।1।। प्रभु नामे आनंद कंद सुख संपत्ति लहीए प्रभु नामे भवभय तणां पातिक सब दहीए ।।2।। ऊँ ह्रीं वर्ण जोडी करी जपीए पारसनाम विष अमृत थइ परिणमे लहिऐ अविचल ठाम ।।3।।

जंकिंचि सूत्र

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।1।।

नमुत्थुणं सूत्र

नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ।।1।। आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ।।2।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरिआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं, ।।3।। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइर्दवाणं, लोगपज्जोअ गराणं, ।।4।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ।।5।। धम्मदयाणं,धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं,धम्मसारहीणं, धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं ।।6।। अप्पडिहय वरनाणं दंसणधराणं, विपट्टछउमाणं ।।7।। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं।।8।।सव्वन्नूणंसव्वदरिसीणं, सिव–मयल–मरूअ–मणंत– मक्खय–मव्वाबाहम पुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ।।9।। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।।10।। (नीचे का सूत्र ललाट पर दोनों हाथ जोडकर बोलो)

जावंति चेइआइं

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ; सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ।।1।। (नीचे का सूत्र बोलकर एक खमासमणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जए निसीहिआएउ, मथ्थएण वंदामि । (नीचे का सूत्र ललाटपर दोनों हाथ जोडकर बोलो)

जावंत केवि साहू

जावंत के वि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं। (यहां कोई भी स्तवन या उवसगहरमं सूत्र बोलो) नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ।

स्तवन

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो रे, सांभलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो, सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव–सुख आपो. ए आंकणी. 1 सहु कोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो अेहवुं बिरूद छे राज तुमारूं, केम राखो छो दूरे ? से. 2. सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो; करूणा सागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. से. 3 लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे; धुमाडे धीजुं नहि साहिब, पेट पडया पतिजे, से. 4 श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो; कहे 'जिनहर्ष' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो सेवक. 5. (स्तवन के बाद नीचे का सूत्र भी बोल सकते हैं)

उवस्सग्गहरं स्तोत्रम्

उवस्सग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं, विसहर–विस–निन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ।।1।। विसहर–फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो वसया मणुओ, तस्स गह रोगमारी, दुट्ठ–जरा जंति उवसामं ।।2।। चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ, नरतिरिअेसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख–दोगच्चं ।।3।। तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए, पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।। इअ संथुओ महायस । भत्तिब्भर–निब्भरेण हियएण, ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।5।। (ललाट पर दोनों हाथ जोडकर जयवीयराय सूत्र बोलो)

जय वीयराय

जय वीयराय ! जगगुरू ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ।।1।। लोगविरूद्धच्चाओ, गुरूजणपूआ परत्थकरणं च, सुहगुरूजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ।।2।। (बाकी का सूत्र जोडे हुए हाथ को नीचे लेकर बोलो)

वारिज्जइ जइ वि निआणबंधणं वीयराय । तुह समए; तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।।3।। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ; संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं ।।4।। सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं, प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।5।। (बाद में खडे होकर नीचेवाला सूत्र बोलो)

अरिहंत चेइआणं

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ।।1।। वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए बोहिलाभवत्तियाए,

निरुवसग्गवत्तियाए ।।2।। सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।।3।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए ।।1।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ।।2।। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।3।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ।।4।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।।5।।(बाद में एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् बोलकर स्तुति कहना ।)

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए
मनवांछित पूरण सुरतरू, जय वामासुत अलवेसरू

(बाद में खमासमण देकर अविधि आशातना मिच्छइमि दुक्कडं बोलना)

चैत्यवंदन के बाद

आव्यो शरणे तुमारा जिनवर करजो, आश पूरी अमारी,
नाव्यो भवपार मारो, तुम विन जगमां सार ले कोण मारी
गायो जिनराज आजे, हरख अधिकथी परमानदंकारी
पायो तुम दर्श–आजे नाशे भवभयभ्रमणा नाथ सर्वे हमारी ....

मंगल प्रार्थना

अरिहा शरणं सिद्धा शरणं, साहु शरणं वरिए
धम्मो शरणं पामी विनये, जिन आज्ञा शिर धरिए ।।1।।

अरिहा शरणं मुझने होजो, आत्म शुद्धि करवा
सिद्धा शरणं मुझने होजो, राग द्वेष ने हणवा ।।2।।

साहु शरणं मुझने होजो, संयम शूरा बनवा
धम्मो शरणं मुझने होजो, भवोदधि थी तरवा ।।3।।

मंगलमय चारेनुं शरणुं, सघली आपदा टाले
चिद्घन केरी डुबती नैया, शाश्वत नगरे वाले ।।4।।

भवोभवना पापों ने मारा, अंतरथी हुं निदुं छुं
सर्व जीवोना सुकृतों ने, अंतरथी अनुमोदु छुं ।।5।।

अरिहंत वंदनावली

माता को हर्ष :—

जे चौद महास्वप्नों थकी निज माता ने हरखावता
वली गर्भमांहि ज्ञानत्रय ने गोपवी अवधारता
ने जन्मतां पहेलां ज चोसठ इन्द्र जेहने वंदता
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं ।। एवा प्रभु 1।।

जन्म कल्याणक

महायोगना साम्राज्यमां जे गर्भमां उल्लासता,
ने जन्मता त्रण लोकमां महासूर्य सम परकाशता
जे जन्म कल्याणक वडे सौ जीव ने सुख अर्पता ।। एवा प्रभु 2।।

जन्मोत्सव

छप्पन दिग्कुमारी तणी सेवा सुभावे पामता
देवेन्द्र करसंपुट मही धारी जगत हरखावता
मेरूशिखर सिंहासने जे नाथ जगमां शोभता ।। एवा प्रभु 3।।

कुसुमांजलिथी सुरअसुर जे भव्य जिनने पूजतां
क्षीरोदधिना न्हवणजलथी देव जेने सिंचतां
वली देवदुंदुभि नाद गजवी देवताओं रीझतां।। एवा प्रभु 4।।

मघमघ थता गोशीर्ष चंदनथी विलेपन पामतां
देवेन्द्र दैवी पुष्पनी माला गले आरोपतां
कुंडल कडां मणिमय चमकता हार मुकुटे शोभतां ।। एवा प्रभु 5।।

ने श्रेष्ठवेणु भोरली वीणा मृदंगतणा ध्वनि
वांजित्र ताले नृत्य करती किन्नरीओ स्वर्गनी
हर्ष भरी देवांगनाओ नमन करती लळी लळी ।। एवा प्रभु 6।।

अतिशयवंत प्रभु

जयनाद करता देवताओ हर्षना अतिरेकमां
पधरामणि करता जनेताना महाप्रसादमां
जेइन्द्रपूरित वरसुधा ने चूसतां अंगुष्ठमां ।।। एवा प्रभु 7।।

आहार ने निहार जेना छे अगोचर चक्षुथी
प्रस्वेद व्याधि मैल जेना अंगने स्पर्शे नहीं
स्वर्धेनु दुग्ध समा रूधिर ने मांस जेना तनमहीं ।। एवा प्रभु 8।।

मंदार पारिजात सौरभ श्वासने उच्छवासमां
ने छत्र चामर जयपताका स्तंभ जव करपादमां
पूरा सहस्र विशेष अष्टक लक्षणों ज्यों शोभतां ।। एवा प्रभु 9।।

अद्भुत गुण

देवांगनाओ पांच आज्ञा इन्द्रनी सन्मानती
पांचे बनी धात्री दिले कृतकृत्यता अनुभावती
वली बालक्रीडा देवगणना कुंवरों संगे थती ।। एवा प्रभु 10।।

जे बाल्यवयमां प्रौढज्ञाने मुग्ध करता लोकोने
सोले कला विज्ञान केरा सारने अवधारीने
त्रण लोकमां विस्मय समा गुणरूप यौवन युक्त जे।। एवा प्रभु 11।।

संसार से निर्लेप राज्यावस्था

मैथुन परिषहथी रहित जे आनंदता निज भावमां
जे भोगकर्म निवारवा विवाह कंकण धारतां
ने ब्रह्मचर्या तणो जगाव्यो नाद जेणे विश्वमां ।। एवा प्रभु 12।।

महा विरागी

मूर्छा नथी पाम्या मनुजना पांच भेदे भोगमां
उत्कृष्ट जेनी राज्य नीतिथी प्रजा सुख चैनमां
वली शुद्ध अध्यवसायथी जे लीन छे निज भावमां।। एवा प्रभु 13।।

महादान

पाम्या स्वयं संबुद्धपद जे सहज वर विरागवंत
ने देवलोकांतिक घणी भक्ति थकी करता नमन
जेने नमी कृतार्थ बनता चार गति ना जीवगणं ।। एवा प्रभु 14।।

दीक्षा कल्याणक

आवो पधारो इष्ट वस्तु पामवा नरनारीओ
ए घोषणाथी अर्पता सांवत्सरिक महादानने
ने छेदता दारिद्र सौनुं दानना महाकल्पथी ।। एवा प्रभु 15।।

दीक्षा तणो अभिषेक जेनो योजता इन्द्रो मली
शिबिका स्वरूप विमानमां विराजता भगवंतश्री
अशोक पुन्नग तिलक चंपावृक्ष शोभित वन महीं ।। एवा प्रभु 16।।

श्री वज्रधर इन्द्रे रचेला भव्य आसन उपरे
बेसी अलंकारों त्यजे दीक्षा समय भगवंत जे
जे पंचमुष्टि लोच करता केश विभु निज कर वडे।। एवा प्रभु 17।।

लोकाग्रगत भगवंत सर्वे सिद्ध ने वंदन करे,
सावद्य सघला पापयोगोना करे पच्चक्खाण ने
जे ज्ञान–दर्शन ने महा चरित्र रत्नत्रयी ग्रहे ।। एवा प्रभु 18।।

आत्म विकास

निर्मल विपुलमति मनः पर्यवज्ञान सहजे दीपतां
जे पंचसमिति गुप्तित्रयनी रयणमाला धारतां
दश भेदथी जे श्रमण सुंदर धर्मनुं पालन करें ।। एवा प्रभु 19।।

पुष्कर कमलना पत्रनी भांति नहीं लेपाय जे
ने जीव माफकनी अप्रतिहत वरगतिए विचरे
आकाशनी जेम निरालंबन गुण थकी जे ओपता ।। एवा प्रभु 20।।

ने अस्खलित वायु समुहनी जेम जे निर्बन्ध छे
संगोपितांगोपांग जेना गुप्त इन्द्रिय देह छे
निस्संगता य विहंगशी जेनो अमुलंख गुण छें।। एवा प्रभु 21।।

खड्गी तणा वर शृंग जेवा भावथी एकाकी जे
मारंड पंखी सारिखा गुणगान अप्रमत छे
व्रतभार वहेता वर वृषभनी जेम जेह समर्थ छे।। एवा प्रभु 22।।

कुंजर समा शूरवीर जे छे सिंह सम निर्भय वली
गंभीरता सागर समी जेना हृदय ने छे वरी
जेना स्वभावे सौम्यता छे पुर्णिमा ना चन्द्रनी ।। एवा प्रभु 23।।

आकाश भूषण सूर्य जेवा दीपता तप तेजथी
वली पूरता दिंगत ने करूणा उपेक्षा मैत्रीथी
हरखवता जे विश्व ने मुदिता तणा संदेशथी ।। एवा प्रभु 24।।

जे शरदऋतुना जल समा निर्मल मनोभवो वडे
उपकार काज विहार करता जे विभिन्न स्थलो विषे
जेनी सहनशक्ति समीपे पृथ्वी पण झांखी पडे ।। एवा प्रभु 25।।

बहु पुण्यनो ज्यां उदय छे एवां भविक ना द्वार ने
पावन करे भगवंत निज तप छट्ठ अट्ठम पारणे
स्वीकारता आहार बेतालीस दोष विहीन जे ।। एवा प्रभु 26।।

उपवास मासखमण समा तप आकरा तपता विभु
वीरासनादि आसने स्थिरता धरे जगना प्रभु
बावीस परिषह ने सहतां खूब जे अद्भूत विभु ।। एवा प्रभु 27।।

केवलज्ञान कल्याणक

बाह्य अभ्यंतर बधा परिग्रह थकी जे मुक्त छे
प्रतिमा वहन वली शुक्ल ध्याने जे सदाय निमग्न छे
जे क्षपक श्रेणी प्राप्त करता मोहमल्ल विदारीने ।। एवा प्रभु 28।।

भाव अरिहंत

जे पूर्ण केवलज्ञान लोकालोकने अजवालतुं
जेना महा सामर्थ्य केरो पार को नव पामतुं
ए प्राप्त जेणे चार घाती कर्म ने छेदी कर्युं ।। एवा प्रभु 29।।

समवसरण की शोभा

जे रतज सोना ने अनुपम रत्न ना त्रण गढ महीं
सुवर्ण ना नव पद्मामां पद कमल ने स्थापन करी
चारे दिशा मुख चार सिंहासन महीं जेशोभता ।। एवा प्रभु 30।।

ज्यां छत्र पंदर उज्जवला शोभी रह्या शिर ऊपरे
ने देव देवी रत्न चामर वींझता करद्वय वडे
द्वादश गुणा वर देववृक्ष अशोकथीय पूजाय छे।। एवा प्रभु 31।।

महा सूर्य सम तेजस्वी शोभे धर्मचक्र समीपमां
भामंडले प्रभु पीठथी आभा प्रसारी दिगंतमां
चोमेर जानु प्रमाण पुष्पो अर्घ्य जिनने अर्पतां ।। एवा प्रभु 32।।

लोकोपकारड

ज्यां देवदुंदुभि घोष गजवे घोषणा त्रण लोक मां
त्रिभुवन तणा स्वामी तणी सौअे सुणो शुभ देशना
प्रतिबोध करता देव मानव ने वली तिर्यंच ने ।। एवा प्रभु 33।।

ज्यां भव्य जीवोना अविकसित खीलतां प्रज्ञा कमल
भगवंत वाणी दिव्य स्पर्शे दूरे थतां मिथ्या वमल
ने देव दानव भव्य मानव झंखता जेनुं शरण ।। एवा प्रभु 34।।

जे बीजभूत गणाय छे त्रण पद चतुर्दस पूर्वनां
उपन्नेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा महातत्त्वनां
ए दान सुश्रुत ज्ञाननुं देनार त्रण जग नाथ जे।। एवा प्रभु 35।।

<u>तीर्थ स्थापना</u>

ए चौद पूर्वो ना रचे छे सुत्रसुन्दर सार्थ जे
ते शिष्यगण ने स्थापता गणधर पदे जगनाथ जे
खोले खजानो गुढ मानव जात ना हित कारणे ।। एवा प्रभु 36।।

जे धर्म तीर्थंकर चतुर्विध संघ संस्थापन करे
महातीर्थ सम ए संघ ने सुर असुर सहु वंदन करे
ने सर्व जीवो भूत, प्राणी, सत्व शुं करूणा धरे ।। एवा प्रभु 37।।

जेने नमे छे इन्द्र वासुदेव ने बलभद्र सहु
जेना चरणने चक्रवर्ती पूजतां भावे बहु
जेणे अनुत्तर विमानवासी देवना संशय हण्या ।। एवा प्रभु 38।।

जे छे प्रकाशक सौ पदार्थो जड तथा चैतन्यना
वर शुक्ल लेश्या तेरमे गुणस्थानके परमात्मा
जे अंत आयुष्य कर्मनो करता परम उपकारथी ।। एवा प्रभु 39।।

लोकाग्र भागे पहोंचवाने योग्य क्षेत्री जे बने
ने सिद्ध ना सुख अर्पती अंतिम तपस्या जे करे
जे चौदमा गुणस्थानके स्थिर प्राप्त शैलेशीकरण ।। एवा प्रभु 40।।

हर्षे भरेला देवनिर्मित अंतिम समवसरणे
जे शोभता अरिहंत परमात्मा जगतधर आंगणे
जे नाम ना संस्मरणथी विसराय वादल दुःखनां ।। एवा प्रभु 41।।

जे कर्म नो संयोग वलगेलो अनादि काल थी
तेथी थया जे मुक्त पूरण सर्वथा सद्भाव थी
रमी रह्या जे निजरूपमां सर्व जगनुं हित करे।। एवा प्रभु 42।।

जे नाथ औदारिक वली तेजस तथा कार्मण तनु
ए सर्वने छोडी अहीं पाम्या परम पद शाश्वतु
जे रागद्वेष जले भर्या संसार सागर ने तर्या ।। एवा प्रभु 43।।

शैलेशीकरणे भाग त्रीजे, शरीर ना ओछा करी
प्रदेश जीवना घन करी वली पूर्व ध्यान प्रयोग थी
धनुष्यथी छूटेल बाण तणी परे शिवगति लही ।। एवा प्रभु 44।।

निर्विघ्न स्थिर ने अचल, अक्षय सिद्धिगति ए नाम नुं
छे स्थान अव्याबाध ज्यांथी नहीं पुनः फरवापणुं
ए स्थान ने पाम्या अनंता ने वली जे पामशे।। एवा प्रभु 45।।

आ स्तोत्र ने प्राकृत गिरा मां वर्णव्युं भक्ति बले
अज्ञात ने प्राचीन महामना को मुनीश्वर बहुश्रुते
पद पद महीं जेना महा सामर्थ्यनो महिमा मले।। एवा प्रभु 46।।

जे नमस्कार स्वाध्यायमां प्रेक्षी हृदय गद् गद् बन्युं
श्रीचंद्र नाच्यो ग्रंथ लई महा भाव नुं शरणुं मल्युं
कीधी करावी अल्पभक्ति होशनुं तरणुं फल्युं।। एवा प्रभु 47।।

जेना गुणो ना सिंधु ना बे बिंदु पण जाणुं नहीं
पण एक श्रद्धा दिल महीं के नाथ सम को छे नहीं
जेना सहारे क्रोडो तरिया मुक्ति मुज निश्चय सहि।। एवा प्रभु 48।।

जे नाथ छे त्रण भुवन ना करूणा जगे जेनी वहे
जेना प्रभावे विश्वमां सद्भावनी सरणी वहे
आपे वचन 'श्री चन्द्र' जगने एज निश्चय तारशे ।। एवा प्रभु 49।।

शास्त्र अनन्त है, ज्ञान अथाह है, विद्याएं भी बहुत हैं, परन्तु यह जीवन अल्प है। यानि हमारे पास समय कम है। तो हमें क्या करना चाहिये। सबका सब तो पढा नहीं जाता। इसलिये हंस जैसे पानी में मिले दूध को अलग कर लेता है, और उसे ग्रहण कर लेता है, उसी तरह हमें जो सार भूत हो, उसे ग्रहण कर लेना चाहिये।

चौदह स्वप्न के नाम

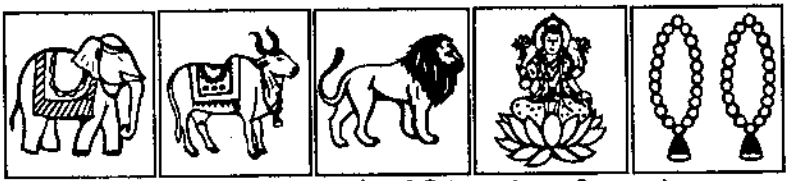

1) हाथी 2) वृषभ 3)केशरीसिंह 4) लक्ष्मी 5) पुष्पहार

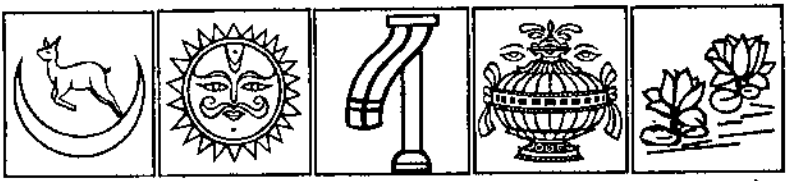

6) चंद्र 7) सूर्य 8) ध्वज 9) कलश 10)पदम्सरोवर

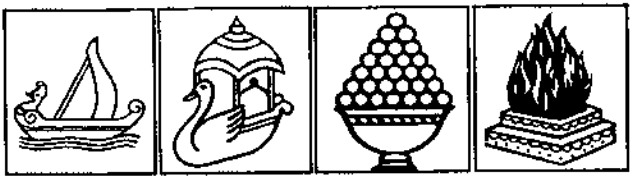

11) क्षीर समुद्र 12)देव विमान 13)रत्न राशि 14) निर्धूम अग्नि

अष्ठ मंगल के नाम

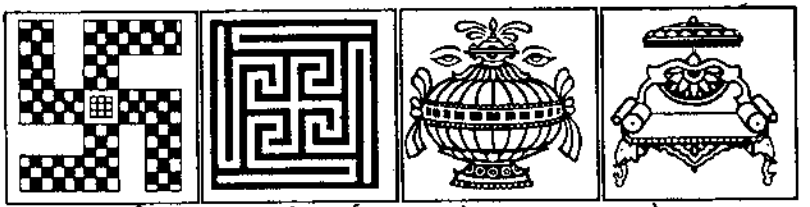

1) स्वास्तीक 2) नंदावर्त 3) कलश 4) भद्रासन

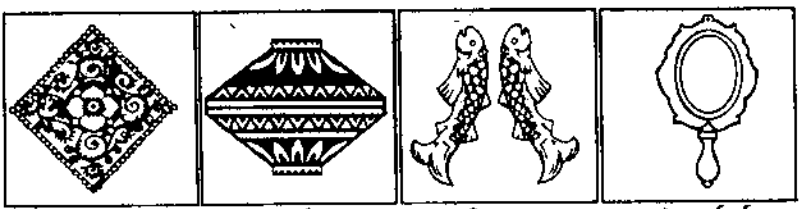

5) श्रीवत्स 6) वर्धमान 7) मीन युगल 8) दर्पण

Prnted: SANSKAR JAIN PATRIKA - 044 - 5385940

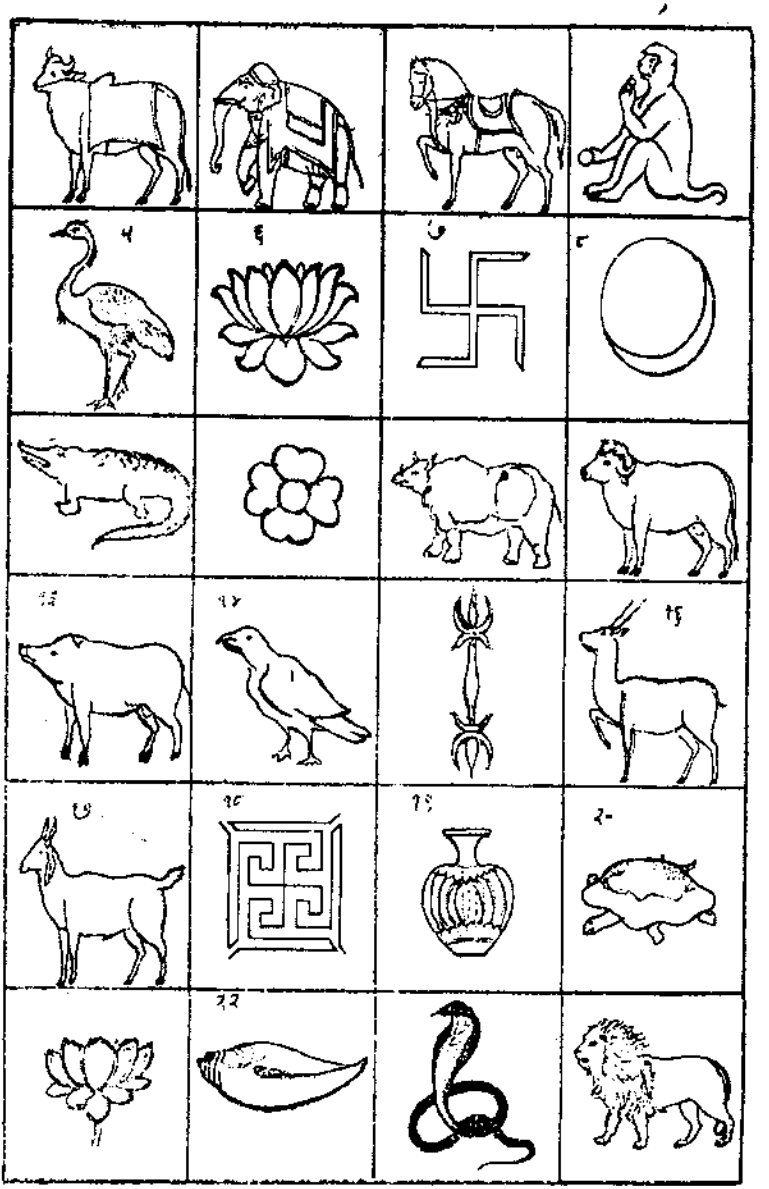

1) वृषभ बैल 2) हाथी 3) घोड़ा 4) वानर 5) कौंच 6) पद्म कमल 7) स्वास्तिक 8) चन्द्रमा 9) मगर 10) श्री वत्स 11) गेंडा 12) भैंसा 13) सुअर 14) सींचाना बाज 15) वज्र 16) हरिण 17) बकरी 18) नंदावर्त्त 19) कलश 20) कछुआ 21) नील कमल 22) शंख 23) सर्प 24) सिंह

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

1. ऋषभदेवजी

गौमुख यक्ष

चक्रेश्वरी देवी

2. अजितनाथजी

महायक्ष

अजिता देवी

3. सम्भवनाथजी

त्रिमुख यक्ष

दुरितारी देवी

4. अभिनन्दनस्वामीजी

यक्षेश यक्ष

काली देवी

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

5. सुमतिनाथजी

तुंबुरू यक्ष

महाकाली देवी

6. पद्मप्रभूस्वामीजी

कुसुम यक्ष

अच्युता देवी

7. सुपार्श्वनाथजी

मातंग यक्ष

शान्ता देवी

8. चन्द्रप्रभस्वामीजी

विजय यक्ष

ज्वाला देवी

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

9. सुविधिनाथजी

अजित यक्ष

सुतारका देवी

10. शीतलनाथजी

ब्रह्मा यक्ष

अशोका देवी

11. श्रेयांसनाथजी

मनुजेश्वर यक्ष

श्रीवस्ता देवी

12. वासुपूज्यस्वामीजी

कुमार यक्ष

प्रवारा देवी

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

13. विमलनाथजी

षणमुख यक्ष

विजया देवी

14. अनन्तनाथजी

पाताल यक्ष

अंकुशा देवी

15. धर्मनाथजी

किन्नर यक्ष

प्रज्ञप्ती देवी

16. शांतिनाथजी

गरूड यक्ष

निर्वाणी देवी

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

17. कुंथुनाथजी

गंधर्व यक्ष

अच्युता देवी

18. अरनाथस्वामीजी

यक्षेन्द यक्ष

धरनीदेवी देवी

19. मल्लिनाथजी

कुबेर यक्ष

वैराट्या देवी

20. मुनिसुव्रतस्वामीजी

वरूण यक्ष

दत्ता देवी

तीर्थंकर के शासनदेव एवं शासनदेवी

21. नमिनाथजी

भृकुटी यक्ष

गंधारी देवी

22. नेमिनाथजी

गोमेघ यक्ष

अंबिका देवी

23. पार्श्वनाथजी

पार्श्व यक्ष

पद्मावती देवी

24. महावीरस्वामीजी

मातंग यक्ष

सिद्धायिका देवी

जैन सामान्य ज्ञान पुस्तक के अर्थ सहयोगी

1. श्री रूनि तीर्थ कमेटी.
2. श्रीमती धापूबाई छोगालालजी दांतवाडीया, मांडवला (चेन्नै)
3. श्री कमलचंदजी मेहता.
4. बी. शांतीलालजी नाहर.
5. श्री जयंतीलालजी राठोड.
6. में. आर. के. अेजेन्सी.
7. शा गुलाबचंदजी मोहनलालजी.
8. शा तगराजजी फौलाजी मुथा, सायला.
9. शा मगनलालजी चुनीलालजी चदुआल.
10. श्रीमती कंचनबेन कांतीलालजी शाह.
11. शा निहालचंदजी जेठाजी, एलाना.
12. श्री हस्तीमलजी बैगानी.
13. शा पारसमलजी सोमचन्दजी सुंदेशा मुथा (रमेश कलर कंपनी)
14. शा जमनादास भाई.
15. में. स्वस्तिक ग्लास हाऊस.
16. जैन चुनीलालजी लालचंदजी, आकोली.
17. शा प्रमेचंदजी छोगाजी वेदमुथा, खेत्रडा.
18. शा घेवरचंदजी लालचंदजी भंडारी, सियाना (हाल चेन्नै).
19. श्री नेमीचंदजी कटारिया.
20. कुंवरलाल एन्ड कं.
21. कल्याण मित्र परिवार.
22. शा माणेकचंदजी नाहर.
23. श्री सुपार्श्व जैन संघ, रायपेठा.
24. में. कटारिया साडी सेंटर.
25. में. आशा ज्योति..
26. मे. अवतार अेजेन्सी.
27. जैन मेटल रोलींग मील्स.
28. शा हितेन्द्रकुमारजी बाबूलालजी मुणोत.
29. ऋषभ, बालिका मंडल.
30. शा छगनलालजी जोमताजी, धम्मसा.
31. शा हस्तीमलजी मीसरीमलजी, सायला.

32. शा अरूणकुमारजी शांतीलालजी, कोठारी सिरोही.
33. शा नेमीचंदजी मंसाली, सवाणावाला.
34. एस. देवीचंदजी कांकरिया.
35. शा. विवेक कोठारी, रमेश कोठारी.
36. श्री मीठालालजी भगाजी श्रीमती मंछीबाई स्व. सुशीला श्रेयार्थ मुथा परिवार.
37. शा धनराजजी चुनीलालजी संघवी.
38. मे. ए. मोहनलालजी चंपालालजी रघुनाथमलजी मांडवला मुथा परिवार सोनवाडिया.
38. मे. एस. देवराज.
39. श्री जी. एम. मेहता.
40. जे. पुखराजजी.
41. कुमारी प्रेमीला.
42. श्री कस्तुरजी पुरोहित.
43. शा पींकेशकुमार चंद्रकांत, बोम्बे.
44. श्री निर्भयचंदजी नवलमलजी राठौड.
45. शा हिम्मतमलजी मरंडिया.
46. श्री अमीचंदजी जेरूपजी.
47. श्री चोपटभाई (में साऊथ इंडिया ज्वेलर्स).
48. श्री अमृतजी सिंघी.
49. शा जीतमलजी नवाजी.
50. मे. जनरल ट्रेडर्स.
51. श्री मंगलचंदजी चेलाजी.
52. शा रमेशकुमारजी केशरीमलजी.
53. मेहता भूरमलजी बादरजी, जीवाणावाले.
54. मे. महावीर ऑप्टीकल्स.
55. मे. बेसिल एण्ड कंपनी.
56. श्री गौतम सील्क मील्स.
57. संस्कार जैन पत्रिका चेन्नई.

मुख पृष्ठ सौजन्य :— श्री कल्याणजी परमानंदजी जैन पेढी (सिरोही राज.).

आर्थिक सहयोग हेतु आभार। भूल से कोई नाम रह गया हो या गलत लिखा हो तो मिच्छामी दुक्कडम् ।।

हे इक्कीसवीं सदी के आनन्दधन !
हम करें आपको कोटि-कोटि वन्दन !!

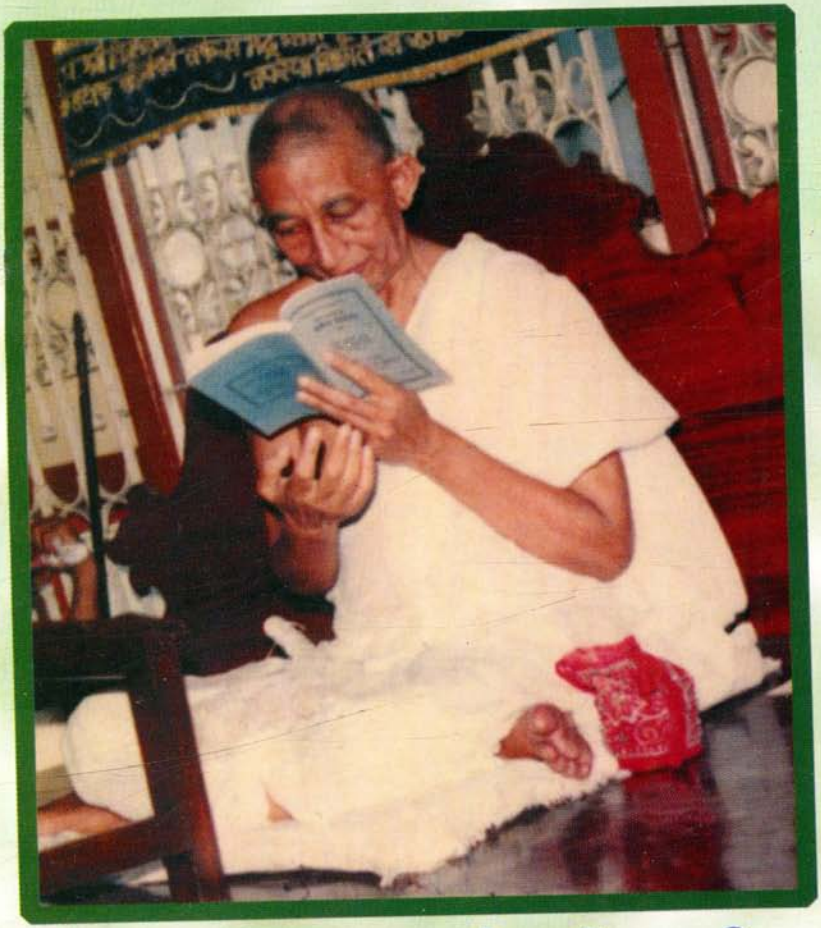

प. पू. आचार्य श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म. सा.

: सं. 1980 वैशाख सुद 2
: सं. 2010 वैशाख सुद 10
स पद : सं. 2025

आचार्य पद : सं. 2029 माघ शुक्ला 3
देवलोकगमन : सं. 2058 माघ शुक्ला 4, केशवण
अन्तेष्टी : शंखेश्वर (गुजरात)

श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल

लकमुदास स्ट्रीट, चेन्नई - 3. ☎ : 5354165, 5394780

स्व. शांतिबाई रीखबचन्दजी राठोड़

फुगंणी (राज.), चेन्नई

: श्रद्धावनत् :

रीखबचन्द, नैनमल, जयन्तीलाल,
कुमारपाल, जितेन्द्र, हीतेश, धीरज,
निर्दोष मोदरेसा राठौड परिवार ।

RIKABCHAND PUNAMCHAND
HITESH FINANCE
K. K. ELECTRICALS
21,REDDY RAMAN STREET
CHENNAI - 79 ☎ : 5385500

R. JAYANTILAL RATHOD
KALPANADEVI
DHIRAJ FINANCE
14, NALLANA MUDALI STREET
CHENNAI - 79 ☎ : 5294624

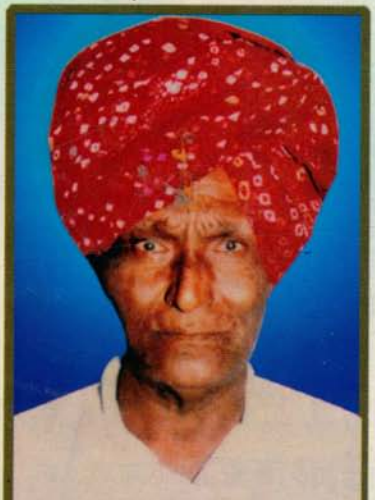

श्री भगवानमलजी शंकरलालजी कोठारी
सियाना (राज)
स्वर्गवास : 10 - 9 -1995

भगवान से भले
शंकर से सीधे, लोकोपकारी
हमारे पूज्य पिताजी
आपको शत-शत प्रणाम

- कोठारी परिवार

Bhagwan Trading Company

14, Audiappa Naicken Street
Chennai - 600079
(O) :5368547 (R) : 5272873

SRI RAJENDRA SURISWARJI JAIN TRUST

9, Ekambareswar Agraharam, CHENNAI - 600 003.

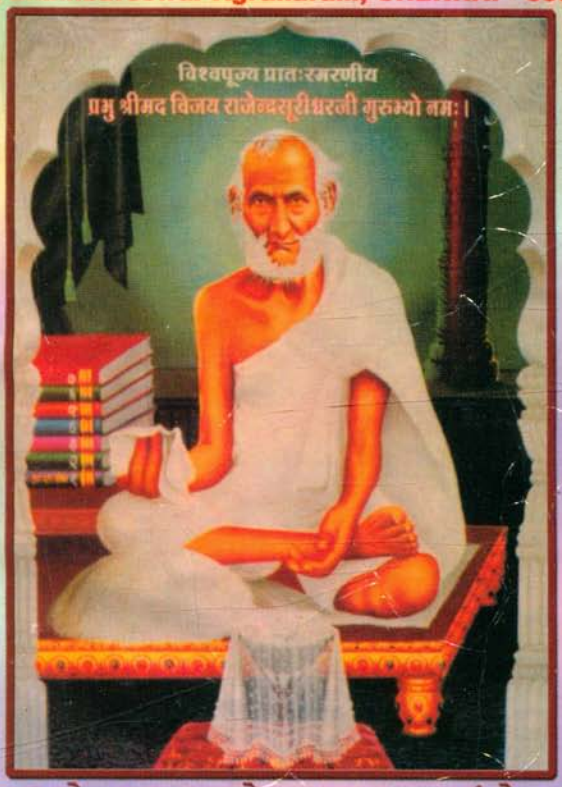

गुरू कल्पवृक्षो, गुरू कामधेनू, गुरू काम कुंभो, गुरू देवरत्नम्
गुरूश्चित्रवल्ली, गुरूकल्पवल्ली, गुरू दक्षिणावृत, शंखपुनश्च ।

- धर्मदासगणि

राष्ट्रसन्त विजय जयन्तसेनसूरि म. सा. का संदेश

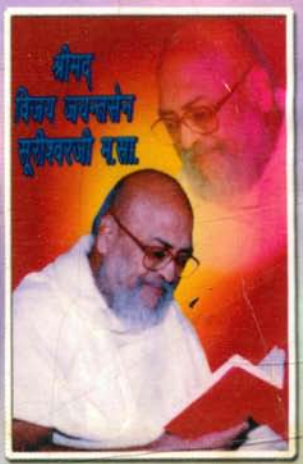

श्री अशोक कुमार मोदी ।

धर्मलाभ ।

"जैन सामान्य ज्ञान" पुस्तक देखी, पढी। संकलन अच्छा एवं उपयोगी है। आपका श्रम एवं भावना सुंदर एवं अनुकरणीय है।

सामान्य ज्ञान की प्राप्ति के लिये एक ही जगह पर उपयुक्त सामग्री युक्त यह संकलन ज्ञान प्राप्ति के लिये सबका मार्ग दर्शक बन सकता है।

इधर उधर से सामग्री एकत्रित करने में मानस को व्यवस्थित रखना पड़ता है। तब कहीं जाकर सब सुव्यवस्थित बन सकता है। आपका यह श्रम सार्थक हो। ऐसी मंगल कामना।

सियाणा
02 . 01 . 2002

प. पू. आ. श्री नरदेवसागरसूरीश्वरजी म. सा. का शुभ सन्देश

श्री जैन धर्म के उपयोगी विषयों के संकलन युक्त श्री 'जैन सामान्य ज्ञान' नामक यह पुस्तक अभ्यासु भाग्यशालिओं के लिये उपयोगी होगी। सुश्रावक अशोक भाई का प्रयत्न प्रशंसनीय है। छोटी सी यह किताब महती कार्य साधिका बने यह ही मनोकामना एवं शुभाशीर्वाद ।

नरदेवसागरसूरि,
वेपेरी (चेन्नई) जैन उपाश्रय ता. २१-१०-२००९

संदेश संयोजक :- मेहता बलवंतराय मिलापचन्दजी परिवार,
रोहिडा (राज.) हाल चेन्नई निवासी

वि. सं. २०५९ श्री वेपेरी श्वे. मू. जैन संघ श्री चेन्नई (मद्रास)
के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित गुरू महाराज की प्रेरणा से ।

संस्कार संवर्धन अभियान की सूत्रधार पत्रिका

संस्कार जैन पत्रिका

138, मिन्ट स्ट्रीट, साहूकारपेठ, पोस्ट बाक्स नं 247,
चेन्नई - 600 079. फोन : 044 - 5385940.

वार्षिक : रू. 120/-	त्रैवार्षिक : रू. 300/-
6 वर्षीय सदस्य : रू. 500/-	आजीवन : रू. 1000/-

संस्कार जैन पत्रिका पढिए,
अपने परिवार को मधुर सौरभ से भरिए !

- Printed By : 044 - 5385940.